लखनऊ, सोमवार, 24 अप्रैल 2023 | Email: starexpressnews@gmail.com | वर्ष : 16 अंक : 60 | पृष्ठ : 8 मूल्य : 1 रूपया

हिन्दी दैनिक/डिजिटल

स्टार एक्सप्रेस

सोच..... बदलते भारत की

www.starexpress.news

संक्षिप्त समाचार

पीएम मोदी सोमवार शाम कोच्चि में ईसाई धर्मगुरुओं से करेंगे मुलाकात

तिरुवनंतपुरम केरल की अपनी दो दिवसीय यात्रा के तहत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सोमवार शाम कोच्चि में ईसाई धर्मगुरुओं से मुलाकात करेंगे। केरल भाजपा के सूत्रों ने आईएएनएस को बताया कि प्रधानमंत्री ईसाई समूहों के विभिन्न संप्रदायों के आठ प्रमुखों से मुलाकात करेंगे। सूत्रों के मुताबिक, बैठक शाम करीब 7 बजे होगी। केरल बीजेपी राज्य की चुनावी राजनीति में पार्टी के ड्राई रन को तोड़ने के लिए ईसाई समुदाय तक पहुंच बना रही है। धार्मिक प्रमुखों से खुद प्रधानमंत्री की मुलाकात को राज्य भाजपा के लिए ईसाई समुदाय तक पहुंचने के प्रयास में एक बड़ा कदम माना जा रहा है। कोच्चि में, मोदी भाजपा युवा विंग, भारतीय जनता युवा मोर्चा द्वारा आयोजित युवम कार्यक्रम के तहत 1 लाख युवाओं के साथ बातचीत भी करेंगे। कार्यक्रम के दौरान युवा विभिन्न मुद्दों को लेकर प्रधानमंत्री से सवाल पूछ सकेंगे। प्रधानमंत्री सोमवार को कोच्चि में वेंदुरुथी ब्रिज से थेवारा के सेक्रेड हार्ट कॉलेज तक 1.8 किलोमीटर का रोड शो भी करेंगे। केरल पुलिस ने 2,000 पुलिसकर्मियों की तैनाती के साथ यात्रा के लिए सुरक्षा कड़ी कर दी है।

संजय राउत का बड़ा दावा, कहा- 15 से 20 दिन में गिर जाएगी शिंदे नीत महाराष्ट्र सरकार

(एजेंसी) मुंबई। शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) के नेता संजय राउत ने रविवार को दावा किया कि एकनाथ शिंदे की अगुवाई वाली महाराष्ट्र सरकार का ''डेथ वारंटश्श् जारी हो गया है और अगले 15-20 दिन में सरकार गिर जाएगी। शिवसेना के पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे की अगुवाई वाले धड़े के प्रमुख नेता राउत ने पत्रकारों से कहा कि उनकी पार्टी अदालत के आदेश का इंतजार कर रही है और उम्मीद कर रही है कि न्याय किया जाएगा। राज्यसभा सदस्य उच्चतम न्यायालय में लंबित उन याचिकाओं का जिक्र कर रहे थे जिनमें से एक में शिवसेना (शिंदे धड़े) के 16 विधायकों को अयोग्य ठहराने का अनुरोध किया गया है जिन्होंने ठाकरे के नेतृत्व के खिलाफबगावत की थी। राउत ने दावा किया, ''मौजूदा मुख्यमंत्री और उनके 40 विधायकों की सरकार 15-20 दिन में गिर जाएगी। इस सरकार का डेथ वारंट जारी हो गया है। अब यह तय होना है कि कौन इस पर हस्ताक्षर करेगा।

कर्नाटक के पूर्व सीएम कुमारस्वामी अस्पताल में भर्ती, लगातार रैलियां करने पर बिगड़ी तबीयत

(एजेंसी) बेंगलुरु। जनता दल (सेक्यूलर) के नेता एवं कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री एच डी कुमारस्वामी को थकावट और सामान्य कमजोरी की शिकायत पर अस्पताल में भर्ती कराया गया और अब वह ''चिकित्सीय रूप से स्थिर हैं तथा स्वस्थ हो रहे हैं। उनका इलाज कर रहे अस्पताल ने रविवार को यह जानकारी दी। कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री के कार्यालय ने बताया कि 63 वर्षीय कुमारस्वामी को बुखार था और डॉक्टरों ने उन्हें आराम करने की सलाह दी थी। वह लगातार राज्य का दौरा कर रहे थे। अस्पताल ने एक बयान में कहा, ''श्री एच डी कुमारस्वामी को ओल्ड एअरपोर्ट रोड बेंगलुरु के मणिपाल हॉस्पिटल में 22 अप्रैल 2023 की शाम को भर्ती कराया गया और वह डॉ. सत्यनारायण मैसूर की देखरेख में हैं। उन्हें थकावट और सामान्य कमजोरी की शिकायत थी। बयान में कहा गया है, ''सभी संबंधित चिकित्सीय जांच और उपचार किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने राज्य लोक सेवा आयोगों के अध्यक्षगण के 24वें राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन किया

❑ सभी लोक सेवा आयोगों को देश के युवाओं की आकांक्षाओं को एक नई उड़ान देने की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए : संवाददाता

(संवाददाता)

लखनऊ । उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि आजादी के 75 वर्षों में देश ने बहुत कुछ हासिल किया है। हमें एक लम्बी यात्रा को आगे बढ़ाना है। इस यात्रा के साथ जुड़ते हुए जब हम आगे बढ़ रहे हैं, तो संघ लोक सेवा आयोग व विभिन्न राज्यों के लोक सेवा आयोग को एक बड़ी जिम्मेदारी के साथ आगे बढ़ना होगा। सभी लोक सेवा आयोगों को देश के युवाओं की आकांक्षाओं को एक नई उड़ान देने की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। मुख्यमंत्री बीते शनिवार को यहां राज्य लोक सेवा आयोग के अध्यक्षगण के 24वें राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। इसके पूर्व, उन्होंने इस दो दिवसीय सम्मेलन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन अपने आप में एक लघु भारत का दृश्य प्रस्तुत करता है, क्योंकि इस सम्मेलन में देश के विभिन्न राज्यों के लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष व सदस्यगण सम्मिलित हुए हैं। सम्मेलन में आपसी विचार-विमर्श से बहुत कुछ जानने-समझने, एक दूसरे के अनुभवों को साझा करने तथा नये प्रयोगों को जानने का अवसर प्राप्त होगा। उन्होंने आशा व्यक्त करते हुए कहा कि यह सम्मेलन देश के युवाओं की आकांक्षाओं को पूरा करने में सफल होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि अच्छे कार्मिकों का चयन संघ लोक सेवा आयोग तथा राज्य लोक सेवा आयोगों पर निर्भर है। चयनित कार्मिकों में बुद्धि-विवेक के साथ ही नेतृत्व क्षमता, कार्य करने व निर्णय लेने का सामर्थ्य और आमजन के प्रति संवेदनशीलता भी हों। संवेदनशील प्रशासन ही जन विश्वास का प्रतीक बन सकता है। लोकतंत्र में आमजन की उपेक्षा नहीं की जा सकती। कार्मिकों को गरीब के प्रति संवेदनशील होना ही चाहिए। जाति, मत, मजहब से इतर हर पीड़ित को न्याय मिलना चाहिए। सभी पात्र व्यक्तियों को शासन की योजनाओं का लाभ बिना भेदभाव के प्राप्त होना चाहिए। उत्तर प्रदेश में बिना भेदभाव समाज के हर वर्ग को शासन की योजनाओं का लाभ प्राप्त हो रहा है।

आप सांसद संजय सिंह ने ईडी अधिकारियों को भेजा कानूनी नोटिस

(एजेंसी) नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी (आप) के नेता और राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने शनिवार को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) को सार्वजनिक रूप से उनकी छवि खराब करने के आरोप में कानूनी नोटिस भेजा और एजेंसी से माफी मांगने की मांग की। आप द्वारा जारी एक बयान के अनुसार, कानूनी नोटिस में कहा गया है कि ईडी ने झूठे और निराधार अभियान चलाकर श्री सिंह की सार्वजनिक छवि को बदनाम करने का प्रयास किया। उन्होंने दावा किया कि ईडी अधिकारियों द्वारा दिए गए बयान असत्य और मानहानिकारक हैं। बयान के अनुसार नोटिस में ईडी को 48 घंटे के भीतर सार्वजनिक रूप से माफी मांगने को कहा गया है और ऐसा न करने पर अधिकारियों के खिलाफ दीवानी और आपराधिक कार्रवाई शुरू की जाएगी। दिल्ली आबकारी नीति अभियोजन शिकायत में श्री संजय सिंह के खिलाफ कुछ असत्य, मानहानिकारक और आपत्तिजनक बयान दिए हैं।

राहुल ने सरकारी बंगला छोड़ा, मां के साथ रहेंगे

(एजेंसी) नई दिल्ली। 'मोदी उपनाम' संबंधी टिप्पणियों को लेकर मानहानि मामले में सजा के बाद लोकसभा की सदस्यता गंवा चुके कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने लुटियंस दिल्ली में 12, तुगलक लेन स्थित अपना सरकारी बंगला शनिवार को खाली कर दिया। फिलहाल वह अपनी मां सोनिया गांधी के 10 जनपथ स्थित आवास पर रहने गए हैं। राहुल ने कहा कि मैंने सच बोलने की कीमत चुकाई है, मैं सच के लिए हर कीमत चुकाने को तैयार हूं। यह घर मुझे हिंदुस्तान की जनता ने दिया था, मैं उनका धन्यवाद करता हूं। राहुल इस बंगले में करीब दो दशक से रह रहे थे। यह उन्हें वायनाड सांसद के तौर पर आवंटित था। राहुल ने केंद्रीय लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों को चाबियां सौंपीं। इस मौके पर सोनिया गांधी और प्रियंका गांधी वाड्रा भी मौजूद रहीं।

इसरो ने लॉन्च किये सिंगापुर के 2 उपग्रह

(एजेंसी) श्रीहरिकोटा भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (पीएसएलवी) सी55 ने शनिवार को सिंगापुर के दो उपग्रहों को निर्धारित कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित कर दिया। ये उपग्रह इसरो की व्यावसायिक इकाई न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड को मिले अनुबंध का हिस्सा हैं। 44.4 मीटर लंबा रॉकेट सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से पूर्व निर्धारित समय अपराह्न 2.19 बजे प्रथम लॉन्च पैड से रवाना हुआ।

पंजाब पुलिस ने अमृतपाल को किया गिरफतार

पंजाब से असम के डिब्रूगढ़ सेंट्रल जेल पहुंचा अलगाववादी अमृतपाल सिंह

❑ अमृतपाल की गिरफ्तारी के बाद केजरीवाल ने किया ट्वीट,

❑ पंजाब के अमन चौन और सुरक्षा के लिए हम वचनबद्ध

(एजेंसी)

डिब्रूगढ़। पंजाब से अमृतपाल सिंह को लेकर एक विशेष विमान रविवार को असम के डिब्रूगढ़ हवाई अड्डे पहुंचा, जहां से खालिस्तान समर्थक अलगाववादी को केंद्रीय कारागार ले जाया जाएगा। अधिकारियों ने बताया कि पंजाब पुलिस ने रविवार सुबह सिंह को गिरफ्तार किया था, जिसके बाद उसे पंजाब के बठिंडा से विशेष विमान के जरिए यहां लाया गया। इस संबंध में एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, ''उसे (अमृतपाल को) लेकर विमान अपराह्न दो बजकर 20 मिनट पर पहुंचा। आवश्यक औपचारिकताओं के बाद उसे एक सुरक्षा काफिले के बीच डिब्रूगढ़ केंद्रीय कारागार ले जाया जाएगा। अधिकारी ने कहा कि केंद्रीय जेल में बहुस्तरीय सुरक्षा व्यवस्था की गई है, जहां सिंह को रखा जाएगा। डिब्रूगढ़ यातायात पुलिस से हवाई अड्डे से जेल तक 15 किलोमीटर लंबे रास्ते को बाधा मुक्त रखने को कहा गया है। उन्होंने कहा, ''जेल परिसर की सुरक्षा व्यवस्था के लिए असम पुलिस के विशिष्ट ब्लैक कैट कमांडो, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) और अन्य सुरक्षाकर्मी तैनात हैं। पंजाब पुलिस ने अमृतपाल को रविवार सुबह करीब छह बजकर 45 मिनट पर रोडे गांव से गिरफ्तार कर लिया। वह एक महीने से अधिक समय से फरार था। उसके नौ सहयोगी इस समय डिब्रूगढ़ केंद्रीय कारागार में बंद हैं। चंडीगढ़ में संवाददाता सम्मेलन में पंजाब पुलिस के महानिरीक्षक (आईजी) सुखचौन सिंह गिल ने कहा कि अमृतपाल को राष्ट्रीय सुरक्षा कानून (एनएसए) के तहत डिब्रूगढ़ ले जाया जाएगा। 'वारिस पंजाब दे (डब्ल्यूपीडी) के चार सदस्यों को 19 मार्च को यहां लाए जाने के बाद से जेल परिसर और उसके आसपास सुरक्षा बढ़ा दी गई है।

155 देशों के पवित्र जल से हुआ रामलला का जलाभिषेक

(संवाददाता) अयोध्या। भगवान श्रीराम की नगरी अयोध्या में निर्माणाधीन भव्य राम मंदिर का जलाभिषेक रविवार को मंत्रोच्चारण के बीच 155 देशों की पवित्र नदियों और सरोवरों से लाये जल से किया गया। विश्व हिन्दू परिषद (विहिप) के प्रांतीय मीडिया प्रभारी शरद शर्मा ने बताया कि दिल्ली स्टडी ग्रुप के अध्यक्ष व पूर्व विधायक विजय जौली के नेतृत्व में दुनिया के सात महाद्वीपों के 155 देशों के पवित्र जल से अयोध्या में बन रहे राम मंदिर का जलाभिषेक का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम में 40 से अधिक देशों के प्रवासी भारतीयों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। जय श्रीराम के गगनभेदी उदघोष के बीच आयोजित इस कार्यक्रम में अनेक देशों के राजदूत व राजनयिक भी मौजूद थे। राम मंदिर निर्माण की सीढ़ियों पर मंत्रोच्चारण करने के बाद 155 देशों का जल का छिडकाव किया गया है। फिजी,मंगोलिया, डेनमार्क, भूटान, रोमानिया, हैती, ग्रीस, कोमोरास, कबेवर्ड, मोन्टीनीग्रो, टुबालू, अल्बानिया, तिब्बत आदि देशों के राजनयिकों ने मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के इस ऐतिहासिक जलाभिषेक कार्यक्रम में भाग लिया। भूटान, सूरीनाम, फिजी, श्रीलंका व कम्बोडिया के वर्तमान राष्ट्राध्यक्षों ने अपने शुभकामना संदेश डॉ. जौली को भेजे हैं।

केदारनाथ धाम में जमकर हो रही बर्फ बारी, श्रद्धालुओं की रजिस्ट्रेशन रोकी गई

(एजेंसी)

रुद्रप्रयाग। गढ़वाल हिमालय की ऊंची पहाड़ियों खासतौर पर केदारनाथ में पिछले कुछ दिनों से मौसम खराब रहने तथा बर्फबारी होने के कारण वहां के लिए श्रद्धालुओं के पंजीकरण का काम रविवार को रोक दिया गया। केदारनाथ धाम के कपाट मंगलवार 25 अप्रैल को खुल रहे हैं। गढ़वाल मंडल के अपर आयुक्त (प्रशासन) एवं चारधाम यात्रा प्रशासन संगठन के अपर मुख्य कार्यकारी अधिकारी नरेंद्र सिंह कविरियाल ने कहा कि खराब मौसम एवं भारी बर्फ बारी को देखते हुए केदारनाथ धाम के लिए ऋषिकेश एवं हरिद्वार में श्रद्धालुओं का पंजीकरण 23 अपैल को केवल एक दिन के लिए रोका गया है। उन्होंने बताया कि सरकार केदारनाथ धाम के लिए पंजीकरण को लेकर आने वाले दिनों में खराब मौसम एवं बर्फबारी की सतत समीक्षा करेगी और उसी के हिसाब से आगे यात्रियों तथा यात्रा के हित में समुचित निर्णय करेगी। गढ़वाल हिमालय की ऊंची पहाड़ियों विशेष रूप से केदारनाथ धाम में लगातार बारिश और बर्फ बारी का सिलसिला चल रहा है। जिसके कारण वहां न केवल तापमान काफी नीचे आ गया है बल्कि पैदल रास्तों पर बार-बार जमने वाली बर्फ को साफकरने में दिक्कतें आ रही हैं। ऐसी परिस्थितियों मे केदारनाथ धाम की यात्रा श्रद्धालुओं के लिए काफी जोखिम भरी हो सकती है। हांलांकि, अन्य धामों-बदरीनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री के लिए श्रद्धालुओं के पंजीकरण का काम चल रहा है।

पीएम मोदी 30 अप्रैल को चुनावी राज्य कर्नाटक में रैली करेंगे

(एजेंसी)

बेंगलुरू। कर्नाटक में 10 मई को होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 30 अप्रैल को कर्नाटक के रामनगर जिले के चन्नापटना में विशाल जनसभा को संबोधित करेंगे, भाजपा के एक नेता ने शनिवार को यह जानकारी दी। पार्टी के एक नेता ने कहा कि भाजपा राज्य के कुछ हिस्सों में अधिक सीटें जीतने का लक्ष्य लेकर चल रही है जहां उसका मजबूत गढ़ नहीं है। कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री और जनता दल-सेक्युलर के नेता एच.डी. कुमारस्वामी चन्नापटना निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ रहे हैं। इस सीट से बीजेपी ने पूर्व मंत्री सीपी योगेश्वर को मैदान में उतारा है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इस निर्वाचन क्षेत्र में जेडी-एस और बीजेपी के बीच सीधा मुकाबला होगा। कुमारस्वामी के बेटे निखिल कुमारस्वामी पड़ोसी रामनगर निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ रहे हैं। इस क्षेत्र को जद(एस) का गढ़ माना जाता है।

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने चन्नापटना में मेगा रैली की योजना बनाई है। शेट्टीहल्ली गांव में अभी तैयारियां चल रही हैं। सूत्रों के मुताबिक, 2-3 लाख लोगों के बैठने की व्यवस्था की जा रही है।

योगेश्वर ने शनिवार को कहा कि चन्नापटना में इस बार कोई रोड शो नहीं होगा। उन्होंने कहा, कार्यक्रम लगभग 2 घंटे तक चलने वाला है। पार्टी पुराने मैसूरू क्षेत्र (दक्षिण कर्नाटक) में अधिक सीटें जीतना चाहती है।

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव बोले, जाति आधारित जनगणना से ही संभव है राम राज्य

(संवाददाता)

लखनऊ । समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने एक बार फिर जाति आधारित जनगणना की मांग उठाई है। अखिलेश ने दावा किया है कि राम राज्य और समाजवाद तभी संभव है जब जाति आधारित जनगणना होगी। जाति आधारित जनगणना से ही सबका साथ सबका विकास होगा, यह भाईचारा लाएगा, भेदभाव समाप्त करेगा और लोकतंत्र को मजबूत करेगा। अखिलेश ने कहा कि पड़ोसी राज्य बिहार जाति आधारित जनगणना के दूसरे चरण से गुजर रहा है। ऐसे में देश के सबसे अधिक आबादी वाले राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री जाति आधारित जनगणना की मांग कर रहे हैं। जानने योग्य है कि कई क्षेत्रीय दल लंबे समय से जाति आधारित जनगणना का मुद्दा उठाते रहे हैं। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की सरकार ने आखिरकार जाति को जनगणना का काम शुरू कर दिया है। जातियों की गिनती का काम दो चरणों में पूरा होगा। इस फैसले के बाद अखिलेश यादव ने अपनी मांग और भी तेज कर दी है। पटना के डीएम डॉ. चंद्रशेखर सिंह ने कहा कि बिहार में जाति आधारित जनगणना का पहला चरण 7 जनवरी को शुरू हुआ था जो 21 जनवरी को समाप्त हुआ था। अब राज्य अपने दूसरे चरण से गुजर रहा है जो 15 मई तक चलेगा। बिहार कैबिनेट ने पिछले साल 2 जून को जातिगत जनगणना का फैसला लिया था, महीनों बाद केंद्र ने राष्ट्रीय स्तर पर इस तरह की कवायद करने से इंकार कर दिया था। 17 अप्रैल को कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने भी प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर मांग की थी कि 2021 में होने वाली दशकीय जनगणना को तुरंत किया जाना चाहिए और जाति जनगणना को इसका अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए।

प्रत्याशियों के लिए लखनऊ से दिल्ली तक की दौड़

❑ बीजेपी आखिरी 24 घंटे में फाइनल कर रही नाम

❑ दूसरे फेज पर भी अंतिम मोहर जेपी नड्डा, अमित शाह लगाएंगे

(संवाददाता)

लखनऊ । उत्तर प्रदेश निकाय चुनाव के सेकंड फेज के नामांकन की आखिरी तारीख 24 अप्रैल है। ऐसे में बीजेपी टिकट की मारामारी सबसे ज्यादा देखने को मिल रही है। उत्तर प्रदेश बीजेपी के अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी और संगठन महामंत्री धर्मपाल सिंह के द्वारा शनिवार को सीएम योगी आदित्यनाथ के साथ सेकंड फेस के उम्मीदवारों के नाम के ऐलान को लेकर एक अहम बैठक 5 कालिदास पर की गई। सेकंड फेस की बैठक होने के बाद प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी और संगठन महामंत्री धर्मपाल सीधे दिल्ली रवाना हो गए। बीजेपी में टिकट का ऐलान नामांकन के आखिरी 24 घंटे पहले ही हो पा रहा है। पहले फेज के नाम नामांकन के आखिरी दिन ही घोषित हुए। ऐसा ही लखनऊ से दिल्ली तक नाम के चयन को लेकर दूसरे पर कभी ऐलान होने की संभावना है। फिलहाल निकाय चुनाव के प्रत्याशियों के नाम पर अंतिम मोहर बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा या गृह मंत्री अमित शाह ही लगा रहे हैं। अब आगे पढ़ते हैं कि बीजेपी ने परिवारवाद से दूरी बना ली है, सीएम योगी आदित्यनाथ के आवास पर हुई बैठक में फैसला हुआ है। 21 अप्रैल को सीएम योगी आदित्यनाथ के आवास पर यूपी निकाय चुनाव को दूसरे फेस के प्रत्याशियों को लेकर मंथन पूरा हो गया। मुख्यमंत्री की मौजूदगी में हुई 5 कालिदास मार्ग बैठक में मेयर और जिला मुख्यालय वाली पालिकाओं के अध्यक्ष पद के प्रत्याशियों के नाम पैनल को दे दिया गया है। मेयर प्रत्याशियों की सूची पर नेतृत्व की सहमति लेने को प्रदेश अध्यक्ष प्रदेश संगठन मंत्री शनिवार को ही सुबह दिल्ली रवाना हो चुके हैं। दूसरे फेज में कानपुर, मेरठ नगर निगम समेत प्रदेश के 9 मंडलों के 38 जिलों में नगर निकाय चुनाव होने नामांकन की आखिरी तारीख 24 अप्रैल है। मेरठ, शाहजहांपुर, अलीगढ़, कानपुर नगर, समेत कई अन्य सीटों पर पार्टी के कई जनप्रतिनिधि वह पदाधिकारी अपने परिजनों व रिश्तेदारों के लिए टिकट चाहते हैं। लेकिन पार्टी ने पहले चरण में ही प्रयागराज में मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी की मेयर पत्नी अभिलाषा गुप्ता नंदी का टिकट काटकर परिवारवाद के खिलाफ स्पष्ट संदेश दे दिया है। दूसरे चरण में भी इसी रास्ते पर आगे बढ़ने का फैसला किया गया है। पहले चरण की तर्ज पर दूसरे चरण में बीजेपी के अधिकांश मेयर प्रत्याशी बदले जाने की संभावना है। शाहजहांपुर नगर निगम में पहली बार चुनाव हो रहा है। ऐसे में वहां एक नया चेहरा आना है, यहां चेहरा कौन होगा, इस पर शीर्ष नेतृत्व फैसला करेगा। इसके अलावा कानपुर, मेरठ, अलीगढ़, गाजियाबाद, अयोध्या समेत अन्य स्थानों पर भी चेहरे बदले जा सकते हैं।

केदारनाथ में हेलीकॉप्टर के ब्लेड लगने से उत्तराखंड सरकार के अधिकारी की मौत, जानें कब शुरू होगी यात्रा

(एजेंसी)

रुद्रप्रयाग। केदारनाथ यात्रा शुरू होने से पहले एक दर्दनाक हादसा हो गया है। उत्तराखंड सरकार के अधिकारी की मौत हो घई है। हेलीकॉप्टर की लैंडिंग के दौरान जब अमित सैनी हेलीकॉप्टर के पास जा रहे थे। उसी समय पीछे के पंखे की चपेट में आ गए, हेलीकॉप्टर के पिछले ब्लेड में आने से उनकी गर्दन कट गई और मौके पर ही मौत हो गई। जानकारी के मुताबिक सैनी उस वक्त हेलीकॉप्टर के टेल रोटर ब्लेड की रेंज में आ गए, जब वह सेल्फी लेने की कोशिश कर रहे थे। यह घटना तीर्थयात्रियों के लिए उत्तरकाशी जिले में गंगोत्री और यमुनोत्री के पोर्टल खोलने के साथ अक्षय तृतीया के अवसर पर चार धाम यात्रा शुरू होने के एक दिन बाद हुई। 16 लाख से अधिक तीर्थयात्री पहले ही तीर्थ यात्रा के लिए पंजीकरण करा चुके हैं और संख्या बढ़ रही है। वहीं, केदारनाथ के कपाट 25 अप्रैल और बद्रीनाथ के कपाट 27 अप्रैल को खुलेंगे। प्रशासन तैयारियों में जुटा हुआ है। मंदिर समिति भी केदारनाथ मंदिर को सजाने का कार्य कर रही है। सभी विभाग अपनी-अपनी ओर से तैयारियों में जुटे हैं।

संपादकीय

जाति का जनगणना

जातिगत जनगणना भले ही सामाजिक न्याय के नाम पर की जा रही हो लेकिन उसका मूल उद्देश्य अगड़ों-पिछड़ों की राजनीति को धार देने के साथ इस पर जोर देना है कि जिसकी जितनी संख्या हो उसकी उतनी ही भागीदारी हो। कांग्रेस ने जिस तरह जातिगत जनगणना की मांग की, उससे यह साफहै कि वह अपनी रणनीति बदल रही है और उन क्षेत्रीय दलों के साथ खड़ी हो रही है, जो यह चाहते हैं कि इसका पता लगाया जाए कि देश में किस जाति की कितनी संख्या है। यह समय बताएगा कि कांग्रेस जातिगत जनगणना की अपनी मांग के सहारे क्षेत्रीय दलों को अपने साथ खड़ा कर पाएगी या नहीं, लेकिन इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि उसने लंबे समय तक सत्ता में रहते समय इसकी आवश्यकता नहीं समझी कि जातियों की गणना कराई जाए कहीं कांग्रेस जातिगत जनगणना की मांग इसलिए तो नहीं कर रही है, ताकि स्वयं को पिछड़े वर्गों के हितैषी के रूप में पेश कर सके और उस आरोप से पीछा छुड़ा सके कि राहुल गांधी ने मोदी उपनाम को लेकर जो बयान दिया था और जिसके कारण उनकी सदस्यता गई, उससे उन्होंने पिछड़ों का अपमान किया? वस्तुस्थिति जो भी हो, कांग्रेस की ओर से जातिगत जनगणना की मांग इसलिए हैरानी का विषय है कि एक समय उसके नेता जातिविहीन समाज बनाने की बातें किया करते थे। क्या यह विचित्र नहीं कि वही अब जातीय भावना को उभारने का काम कर रहे हैं। जातिगत जनगणना केवल जातीयता को उभारने का ही काम नहीं करेगी, बल्कि जातिवाद की राजनीति को भी बल देगी। यह किसी से छिपा नहीं कि यह राजनीति किस तरह जातीय वैमनस्य को भी बढ़ाने का काम करती है। भारत में अन्य देशों की तुलना में कम वाहन हैं, लेकिन दुर्घटनाओं में मरने वालों की संख्या सबसे अधिक है। सड़क सुरक्षा, केवल विचार-विमर्श नहीं, बल्कि दुर्घटनाएं रोकने के उपायों पर अमल की कोई ठोस रूपरेखा भी बननी चाहिए जातिगत जनगणना भले ही सामाजिक न्याय के नाम पर की जा रही हो, लेकिन उसका मूल उद्देश्य अगड़ों-पिछड़ों की राजनीति को धार देने के साथ इस पर जोर देना है कि जिसकी जितनी संख्या हो, उसकी उतनी ही भागीदारी हो। यह भी स्पष्ट है कि जातिगत जनगणना की मांग के पीछे एक इरादा जातिगत आरक्षण को बल देना है। यह एक विडंबना ही है कि जब इसका अध्ययन और आकलन किया जाना चाहिए कि आरक्षण की व्यवस्था ने गरीब और पिछड़े वर्गों का कितना उत्थान किया है, तब जातिगत आरक्षण पर जोर दिया जा रहा है। इससे इन्कार नहीं कि देश में अभी भी ऐसे निर्धन वर्ग हैं, जिनका सामाजिक-आर्थिक उत्थान करने के लिए विशेष उपायों की आवश्यकता है, लेकिन इन उपायों पर अमल करने के पहले यह भी तो देखा जाना चाहिए कि आरक्षण व्यवस्था अपने मौजूदा स्वरूप में कितनी कारगर है और उन उद्देश्यों को पूरा कर पाई है या नहीं, जिनके तहत इस व्यवस्था को अमल में ला या गया था।

कानून के शासन की वकालत अच्छी बात है, मगर अतीक के अतीत को भी देखना चाहिए

कानून के शासन की बात करने वाले इसकी अनदेखी नहीं कर सकते कि चार दशक से भी अधिक समय से आपराधिक गतिविधियों में लिप्त अतीक और उसके साथियों के समक्ष कानून के हाथ निष्क्रिय बने हुए थे। कानून के शासन की चिंता करने वाले नेताओं को यह बताना चाहिए कि ऐसा क्यों था चालीस सालों तक सियासत की दुनिया में जिस अतीक अहमद का सिक्का सबसे खरा था, उसी माफिया अतीक और उसके भाई अशरफको कैमरे के सामने तीन शूटरों ने मौत के घाट उतार दिया। अशरफऔर अतीक के खामोश हो जाने के बाद अब गुड्डू मुस्लिम को लेकर कई तरह के कयास लगाए जा रहे हैं। गुड्डू मुस्लिम ही अतीक अहमद का पूरा नेटवर्क चलाता था। फिलहाल 5 लाख का इनामी गुड्डू फरार है। पुलिस संरक्षण में होने वाली इस तरह की हत्याओं पर लंबे समय तक सवाल उठते रहेंगे। प्रयागराज में बसपा विधायक रहे राजूपाल की हत्या के चश्मदीद गवाह उमेश पाल की फरवरी के अंतिम सप्ताह में हत्या कर दी गई। हत्या के बाद पूरे प्रदेश में सियासी माहौल गर्म हो गया। योगी सरकार पर लोग सवाल उठाने लगे थे कि प्रदेश को माफिया मुक्त करने का दावा खोखला साबित हो रहा है। अतीक जैसे माफिया जेल में होने के बाद भी खुली सड़क पर निर्दोष लोगों की हत्या कर रहे हैं। पुलिस को भी निशाना बनाया जा रहा है। इस घटना में निर्दोष गनर भी हत्या के शिकार हुए। सरकार को बुलडोजर नीति और अपराध मुक्त प्रदेश को लेकर कटघरे में खड़ा किया जाने लगा। इस घटना को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बेहद गंभीरता से लिया। उन्होंने खुद विधानसभा में ऐलान किया था कि अपराधियों को मिट्टी में मिला देंगे। जब अतीक जैसे माफिया के खिलाफसरकार एक्शन मोड में आ गई तो विपक्ष फिर वोट बैंक के डर से धर्म और मजहब की आड़ लेने लगा। उमेश पाल की हत्या पर जो समाजवादी पार्टी घड़ियाली आंसू बहा रही थी वहीं अतीक के खिलाफ कार्रवाई पर सियासी राग अलापने लगी। योगी की एनकाउंटर नीति पर सवाल उठ रहे हैं कि क्या कानून और संविधान को खत्म कर देना चाहिए? संविधान और कानून का क्या मतलब है? फिर अदालत और जज जैसे पद को खत्म कर दिया जाना चाहिए। अपराधियों को सजा देने के लिए अदालत और संविधान है। एनकाउंटर कहीं का इंसाफनहीं है। ओवैसी ने कहा है कि उत्तर प्रदेश में कानून का एनकाउंटर किया जा रहा है। पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने भी एनकाउंटर को फर्जी बताया। उन्होंने कहा कि ऐसा नहीं होना चाहिए। फिर अतीक ने उमेश पाल की हत्या क्यों करवाई क्या ऐसा होना चाहिए था। अगर नहीं तो ओवैसी क्यों चुप थे। कानून के शासन की बात करने वाले इसकी अनदेखी नहीं कर सकते कि चार दशक से भी अधिक समय से आपराधिक गतिविधियों में लिप्त अतीक और उसके साथियों के समक्ष कानून के हाथ निष्क्रिय बने हुए थे। कानून के शासन की चिंता करने वाले नेताओं को यह बताना चाहिए कि ऐसा क्यों था? अतीक और अशरफ आतंक के पर्याय बन गए थे तो इसी कारण, क्योंकि उन्हें बेहद निर्लज्जता के साथ हर तरह का राजनीतिक संरक्षण दिया गया। राजनीति अपराधियों को किस तरह संरक्षण देकर उन्हें सभ्य समाज के साथ विधि के शासन के लिए खतरा बनाती है, अतीक इसका उदाहरण था। यह हास्यास्पद है कि आज वे राजनीतिक दल भी कानून के शासन की बात कर रहे हैं, जिन्होंने अतीक के काले कारनामों से परिचित होते हुए भी उसे संरक्षण दिया। अतीक और उसके भाई को मारने वालों की उनसे क्या दुश्मनी थी अथवा उन्होंने किसके कहने पर उन्हें मारा। प्रयागराज में पुलिस की उपस्थिति और टीवी कैमरों के सामने माफिया सरगना अतीक अहमद और उसके भाई अशरफकी हत्या पुलिस की कार्यप्रणाली और उसकी चौकसी को लेकर अनेकों सवाल खड़ी करती है। गंभीर प्रश्न यह है कि इतने खतरनाक अपराधी को मेडिकल परीक्षण के लिए अस्पताल ले जाते समय मीडिया के समक्ष पेश करने की क्या आवश्यकता थी और वह भी रात के वक्त? पुलिस को इसका भान होना चाहिए था कि अतीक-अशरफके दुश्मन या फिर उससे प्रताड़ित लोग उसे निशाना बनाने की कोशिश कर सकते हैं? आखिरकार ऐसा ही हुआ। पत्रकार बनकर पहुंचे तीन अपराधियों ने अतीक और उसके भाई को गोलियों से भून दिया और कोई कुछ नहीं कर सका। पुलिस इस हत्या के कारणों की तह तक जाए, बल्कि यह भी जरूरी है कि अपराधियों की मीडिया के समक्ष नुमाइश करना बंद करे। वास्तव में यह काम देश में कहीं भी नहीं होना चाहिए, क्योंकि इसके पहले भी थाना-कचहरी में अपराधियों को ठिकाने लगाया जा चुका है। कोई कितना भी बड़ा अपराधी हो, उसे तय कानूनी प्रक्रिया के तहत ही सजा मिलनी चाहिए। कानून के शासन की रक्षा और प्रतिष्ठा के लिए यह आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है। अतीक और उसके भाई अशरफको ऐसी मौत मिलेगी किसी ने सोचा भी नहीं था। अतीक अहमद भी अपनी हत्या की आशंका व्यक्त कर चुका था और साफ-साफकह रहा था कि इनकी नीयत सही नहीं है, "मेरी हत्या करवा दी जाएगी।" जिस वक्त यह हत्याएं हुईं उस वक्त पुलिस अतीक अहमद और उसके भाई अशरफको मेडिकल जांच के लिए अस्पताल ले जा रही थी। पुलिस के घेरे में जिस तरीके से तीन हमलावरों ने अतीक की कनपटी पर गोली दागी और अशरफको बेहद नजदीक से गोलियां मारीं और उसके बाद धार्मिक नारेबाजी की, वह हैरान कर देने वाला है।

दुर्दांत का खौफनाक अंत

उत्तर प्रदेश और कई राज्यों में अपराध की दुनिया से राजनीति में आकर चार दशक तक स्वछंद राज करने वाले माफिया डॉन अतीक अहमद व उसके भाई अशरफ का जिस तरह से अंत हुआ, उसने कोई अच्छा संदेश नहीं दिया। निस्संदेह, एक माफिया डॉन के साथ सहानुभूति नहीं होनी चाहिए, लेकिन जिस तरह पुलिस सुरक्षा के घेरे में उनकी हत्या हुई और पुलिस मूकदर्शक बनी रही, उससे उ.प्र. की पुलिस की साख पर आंच आई। कठघरे में तो राज्य का राजनीतिक नेतृत्व भी आया है। पुलिस कर्मियों के निलंबन और जांच आयोग के गठन को राज्य सरकार की छवि सुधारने की कवायद के रूप में देखा गया। बहरहाल माफिया अतीक अहमद व अशरफकी हत्या को उस कड़ी का हिस्सा माना जा रहा है, जिसकी शुरुआत प्रयागराज में राजू पाल हत्याकांड के सरकारी गवाह उमेश पाल की सरेआम हत्या से हुई। जिसे प्रदेश सरकार व पुलिस ने अपने लिये चौलेंज माना। जिसके बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अपराधियों को मिट्टी में मिलाने की टिप्पणी भी सामने आई थी। जिससे साफहो गया था कि राज्य की सरकार व पुलिस बड़ी कार्रवाई करेगी। पहली प्रतिक्रिया, उमेश पाल हत्याकांड में शामिल बताये जा रहे अतीक के बेटे असद व उसके साथी की मुठभेड़ में मौत के रूप में सामने आई। जिसके जरिये सरकार व पुलिस ने संदेश देने का प्रयास किया कि अपराधी कितना भी बड़ा क्यों न हो, बख्शा नहीं जायेगा। यूं भी योगी सरकार के दौरान कई हजार मुठभेड़ों व डेढ़ सौ से अधिक अपराधियों के एनकाउंटर में मारे जाने पर भी विपक्षी नेता सवाल उठाते रहे हैं। लेकिन सवाल यही है कि क्या पुलिस इन अपराधियों को गिरफ्तार करके न्यायिक प्रक्रिया के जरिये दंड नहीं दिलवा सकती थी? वैसे कहा जाता रहा है कि न्याय की प्रक्रिया इतनी लंबी चलती है कि अपराधी धनबल, बाहुबल और सत्ता परिवर्तन के बाद राजनीतिक संरक्षण पाकर बरी होने की कवायद में लगातार लगे रहते हैं। वैसे राजनीतिक नेतृत्व परिवर्तन के बाद इस तरह के बड़े माफियाओं के फिर ताकतवर होने के बाद पुलिस के लिये भी निष्पक्ष रूप से जांच करना मुश्किल हो जाता है। वैसे प्रदेश में कई राजनीतिक दलों की सरकारों में ऐसे दागी टिकट पाकर जनप्रतिनिधि बनते रहे हैं और अपने विरोधियों को ठिकाने लगाना शुरू कर देते हैं। लेकिन इसके बावजूद बड़ी संख्या में पुलिसकर्मियों की मौजूदगी में अतीक व अशरफकी हत्या पुलिस की कार्यशैली पर सवाल ही खड़े करती है। आखिर ऐसे कुख्यात डॉन के आसपास मीडिया की भीड़ को क्यों जाने दिया गया, जिसको दूसरे गैंगों के अपराधियों से हमले का खतरा बराबर बना हुआ था। इसी कमजोर कड़ी को भांपकर ही अपराधियों ने फर्जी मीडियाकर्मी बनकर हत्याकांड को अंजाम दिया। बहुत संभव है आने वाले दिनों में सत्ताधीश इस घटना के बहाने माडिया की आजादी को कुतरने का प्रयास करें। वहीं दूसरी ओर इस हत्याकांड के बाद राजनीतिक रोटियां सेंकने का उपक्रम भी तेज हो गया है। कुछ राजनीतिक दल संप्रदाय विशेष के अपराधियों को ही निशाने पर लेने की बात कर रहे हैं। वहीं सत्तापक्ष के भी कुछ नेताओं के अमर्यादित बयान सामने आये हैं। वैसे इन हत्याओं के बाद समाज का खेमों बंटा नजर आना भी दुर्भाग्यपूर्ण है। कुछ लोग अपराधियों की हत्या को न्याय हुआ मान रहे हैं। तो अपने समाज के लोगों के लिये रोबिन हुड जैसी भूमिका निभाने वाले डॉन के समर्थकों में इस घटना को लेकर दुख है। बहरहाल, यदि इस तरह अपराधियों की हत्या को न्यायसंगत बताया जाने लगेगा तो कोर्ट व कानून की क्या सार्थकता रह जाएगी? इस तरह के मामले कालांतर समाज में अराजकता को ही जन्म देंगे। दुर्भाग्यपूर्ण यह भी कि अभियुक्तों की हत्या सरेआम टीवी कैमरों के सामने हुई,जिसके वीडियो वायरल होने के बाद पूरी दुनिया में तल्ख प्रतिक्रियाएं हुईं। उन देशों को भारत के खिलाफ विषवमन का मौका मिला जो हमारी कमजोर कड़ियों की तलाश में रहते हैं। निस्संदेह, किसी भी समाज में अपराधियों को सख्त दंड मिलना चाहिए, लेकिन उन्हें सजा देने का काम पुलिस व अपराधियों का नहीं है, यह अधिकार सिर्फ और सिर्फअदालतों को ही है।

राहुल के मुद्दों में उलझी भाजपा

कर्नाटक चुनाव में इस बार भाजपा के लिए कई तरह के संकट खड़े हुए हैं। सबसे बड़ा संकट तो सत्ता बचाने का है। इसके अलावा पार्टी में चल रही भगदड़, वरिष्ठ नेताओं, पूर्व मंत्रियों का कांग्रेस प्रवेश, आरक्षण, सांप्रदायिक मसलों को लेकर खड़े हुए विवाद भी चुनावी जीत की संभावनाओं को क्षीण कर रहे हैं। भाजपा की कोशिश हिंदू-मुस्लिम कार्ड खेलने की है, क्योंकि यह कार्ड हमेशा उसे फायदा दे जाता है। लेकिन इस बार राहुल गांधी ने कर्नाटक में चुनाव से ठीक पहले दो ऐसे मुद्दों को हवा दे दी, जिन पर भाजपा फंस सकती है। राहुल गांधी ने कर्नाटक से जातिगत जनगणना का कार्ड खेला है, जिस पर भाजपा बिहार और उत्तरप्रदेश में पहले ही फंसी हुई है और अब कर्नाटक से भी इसी मांग को राहुल गांधी ने उठा दिया है। 16 और 17 अप्रैल को राहुल गांधी दो दिन के कर्नाटक दौरे पर थे। वैसे तो उनका यह दौरा दो-तीन बार टला और तारीखें आगे बढ़ती रहीं। और जब-जब श्री गांधी के दौरे की अगली संभावित तारीख आती, तब-तब यह चर्चा उठती कि क्या कर्नाटक कांग्रेस में अंदरूनी कलह के कारण यह यात्रा टल रही है। मीडिया इस मुद्दे को तरह-तरह से बढ़ाता ताकि कांग्रेस के लिए माहौल खराब हो और भाजपा के पक्ष में बात बने। मगर फिर भी भाजपा अपनी फूट को रोक नहीं पाई। भाजपा को यह भी उम्मीद थी कि सांसदी गंवाने और मानहानि मामले में सजा के बाद राहुल गांधी थोड़े शांत हो जाएंगे। लेकिन राहुल गांधी अडानी मुद्दे पर सवाल उठाते रहे, पूछते रहे कि 20 हजार करोड़ किसके हैं और कर्नाटक के कोलार से सभा करके उन्होंने ऐसा दांव चल दिया, जिसका सामना करने के लिए भाजपा के रणनीतिकार शायद तैयार नहीं थे। गौरतलब है कि कोलार वही जगह है, जहां राहुल गांधी ने मोदी उपनाम को लेकर टिप्पणी की थी। इस टिप्पणी को ही पूर्णेश मोदी ने मानहानि प्रकरण बनाया। कर्नाटक का मामला सूरत की अदालत में पेश हुआ और वहां से राहुल गांधी को अधिकतम सजा यानी 2 साल की कैद सुनाई गई। हालांकि इसके बाद उन्हें जमानत मिल गई और अब राहुल गांधी ने सजा के खिलाफअपील की है, जिस पर फैसला आना अभी बाकी है। सजा के ऐलान के अगले ही दिन उनकी संसद सदस्यता रद्द हो गई और अब सरकारी बंगला भी छिन गया है। भाजपा संसद से राहुल गांधी को बाहर करने में सफल हो गई, लेकिन इसके बाद भी उसकी मुश्किलें कम नहीं हो रही हैं। राहुल गांधी अपने पुराने तेवर के साथ ही भाजपा के सामने ऐसे सवाल उठा रहे हैं, जिनके जवाब भाजपा के पास नहीं हैं। 16 अप्रैल को कोलार पहुंचे राहुल गांधी ने ओबीसी के हक का सवाल और जातिगत आधारित जनगणना की मांग मोदी सरकार के सामने रखी। कांग्रेस की श्जय भारतश् चुनावी रैली में उन्होंने कहा कि संप्रग ने 2011 में जाति आधारित जनगणना की। इसमें सभी जातियों के आंकड़े हैं। प्रधानमंत्री जी, आप ओबीसी की बात करते हैं। उस डेटा को सार्वजनिक करें। देश को बताएं कि देश में कितने ओबीसी, दलित और आदिवासी हैं। आंकड़ों को सार्वजनिक करने की जरूरत को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि अगर सभी को देश के विकास का हिस्सा बनना है तो प्रत्येक समुदाय की आबादी का पता लगाना जरूरी है। बता दें कि यूपीए सरकार ने 2011 में सामाजिक आर्थिक एवं जातिगत जनगणना (एसईसीसी) की थी। लेकिन इसके बाद ऐसी कोई पहल मौजूदा सरकार ने नहीं की। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने भी प्रधानमंत्री श्री मोदी को एक पत्र लिखकर कहा है कि मैं एक बार फिर नवीनतम जाति जनगणना के लिए आधिकारिक रुप से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की मांग को रखने के लिए आपको ये पत्र लिख रहा हूं। मेरे सहयोगियों ने और मैंने पहले भी कई अवसरों पर संसद के दोनों सदनों में इस मांग को उठाया है। कई अन्य विपक्षी दलों के नेताओं ने भी इस मांग को रखा है। श्री खड़गे ने 2011 में एसईसीसी कराए जाने का जिक्र करते हुए कहा कि मई 2014 में आपकी सरकार आने के बाद कांग्रेस और अन्य सांसदों ने इसे जारी करने की मांग की, लेकिन कई कारणों से जातिगत आंकड़े प्रकाशित नहीं किए गए। जातिगत जनगणना की मांग पर भाजपा बिहार में पहले ही बुरी फंसी हुई है। अब कर्नाटक में कांग्रेस ने फिर इस मुद्दे को खड़ा किया है। कांग्रेस की इस पहल से जेडीयू, राजद और सपा जैसे दल भी खुश होंगे और विपक्षी एकता की संभावनाएं मजबूत होंगी। राहुल गांधी के लिए इस मसले का दोहरा महत्व है। एक ओर यह विपक्ष को एक करने की कोशिश है, दूसरी ओर उस ओबीसी समुदाय को साधना है, जिसके अपमान का आरोप राहुल गांधी पर उनके विरोधियों ने लगाया है। भाजपा उस अपमान की बात करती रही, जो राहुल गांधी ने किया ही नहीं और अब खुद श्री गांधी ने ओबीसी के आंकड़े जारी करने की मांग सरकार से कर के भाजपा को पसोपेश में डाल दिया है। अगर वह श्री गांधी की मांग को पूरा न करे तो ओबीसी विरोधी कहलाएगी और पूरा करे तो राहुल गांधी के आगे झुकी नजर आएगी। इससे जनता के बीच भाजपा की कमजोर छवि बनेगी।राहुल गांधी ने दूसरा सधा कदम कर्नाटक के दुग्ध केंद्र नंदिनी के स्टोर पर जाकर उठाया। पिछले कई दिनों से अमूल बनाम नंदिनी विवाद कर्नाटक में चल रहा था। नंदिनी के अमूल द्वारा अधिग्रहण की आशंकाओं के बीच माहौल में बाहरी बनाम स्थानीय का सवाल गहराता जा रहा था, इस बीच राहुल गांधी ने नंदिनी की आइसक्रीम खरीदकर ब्रांड कर्नाटक का गौरव बता दिया। यानी कांग्रेस ने अपना पक्ष साफकर दिया कि वह कर्नाटक के लोगों के साथ है। इसका तगड़ा संदेश जनता के बीच जाएगा। कुल मिलाकर चुनावी वादों और घोषणाओं के अलावा राहुल गांधी ने दो ऐसे मुद्दों को अपने दौरे में उठाया है जो सीधे जनता तक पहुंचेंगे और इसमें मीडिया कुछ नहीं कर पाएगा।

क्यों धधक रहा हैं सूडान

आदित्य नारायण

दुनिया में जिधर भी नजर दौड़ाएं उथल-पुथल ही नजर आ रही है। मानवता कराह रही है। लोग मर रहे हैं। सैकड़ों लोग हताहत हो रहे हैं। कहीं भूख से बच्चे बिलबिला रहे हैं तो कहीं अपने ही देश में लोग शरणार्थी हो रहे हैं। कहीं युद्ध है तो कहीं आतंकवाद। सूडान एक बार फिर वैश्विक खबरों में है। जहां इस समय अराजकता का माहौल है। शहरों से उठता हुआ धुआं और उनके बीच से गुजरते फाइटर जेट इस बात की ओर इशारा करते हैं कि देश में हालात बहुत बिगड़ चुके हैं। जिस देश ने अकाल का सामना किया हो और जिसने रोटी के लिए संघर्ष ध्किया हो वहां गृहयुद्ध की स्थिति कैसे पैदा हो गई। यह एक विचारणीय प्रश्न है। सूडान में सेना और प्रतिद्वंद्वी अर्धसैनिक बल में खूनी संघर्ष छिड़ा हुआ है। इस संघर्ष में केरल निवासी एक भारतीय समेत कम से कम 61 लोगों की मौत हो गई है। इनमें तीन संयुक्त राष्ट्र कार्यकर्ता भी शामिल हैं। हिंसा में लगभग एक हजार लोग घायल हुए हैं। यद्यपि सेना ने अर्धसैनिक बल रैपिड सपोर्ट फोर्स समूह के ठिकानों पर एयर स्ट्राइक कर सत्ता के लिए खूनी संघर्ष में बढ़त हासिल कर ली है। लेकिन इससे लोकतंत्र बहाल करने की उम्मीदों को ही झटका लगा है। इस सारे घटनाक्रम के बीच सूडान में रहने वाले भारतीय चाहते हैं कि देश में जल्द से जल्द शांति हो जाए। प्राचीन समय से ही इस देश का भारत से ऐतिहासिक, राजनीतिक और आर्थिक रिश्ता रहा है। लगभग दो हजार भारतीय मूल के लोग पीढ़ियों से सूडान में रह रहे हैं। इसके अलावा कई भारतीय कंपनियों ने सूडान में पैसा लगा रखा है और बहुत से भारतीय नौकरियों के सिलसिले में वहां हैं। भारत सरकार को भारतीय नागरिकों की ध्चिंता है। तभी उसने स्थिति को देखते हुए परामर्श जारी किया था कि वे अपने घरों में ही रहें। भारतीय विदेश मंत्रालय की सूडान की स्थिति पर नजर है। सूडान में जारी खूनी संघर्ष के केंद्र में दो लोग हैं। इनमें एक सूडान के सैन्य नेता अब्दुल फत्तह अल बुरहान और दूसरे अर्धसैनिक रैपिड सपोर्ट फोर्सेज के कमांडर मोहम्मद हमदान दगालो हैं। कुछ समय पहले तक ये दोनों सहयोगी थे। इस जोड़ी ने 2019 में सूडानी राष्ट्रपति उमर अल-बशीर को अपदस्थ करने के लिए एक साथ काम किया था और 2021 में भी सैन्य तख्तापलट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। बाद में नागरिक शासन को बहाल करने की योजना के दौरान सेना में आरएसएफको एकीकृत करने के लिए बातचीत के दौरान दोनों के बीच विवाद और तनाव उत्पन्न हो गया। अब दोनों के बीच इस बात पर विवाद है कि नए पदानुक्रम में कौन सीनियर होगा और कौन उसके मातहत होगा? इसी वर्चस्व की लड़ाई में दोनों सैन्य कमांडर के बीच खूनी संघर्ष छिड़ चुका है। अब्दुल फत्तह अल बुरहान मूल रूप से सूडान का नेता है। बशीर के पतन के समय बुरहान सेना के महानिरीक्षक थे। उनका करियर दागलो के समानांतर रहा है। अब्दुल फत्तह अल बुरहान के नेतृत्व वाली सेना ने एक बयान में आरएसएफके साथ बातचीत से इनकार करते हुए और इसे भंग करने की बात कही है और इसे बागी मिलिशिया करार दिया है। अर्द्धसैनिक समूह आरएसएफने सशस्त्र बलों के प्रमुख को अपराधी बताया है। वर्ष 2021 में देश में तख्तापलट हुआ था और अब इस तरह के संकेत मिल रहे हैं कि दोनों के बीच संघर्ष जारी रह सकता है। जनरल मोहम्मद हमदान दागलो की अगुवाई वाले आरएसएफ का सशस्त्र बलों में एकीकरण को लेकर सहमति न बन पाने की वजह से यह तनाव उत्पन्न हुआ है। जब दो साल पहले क्रांति हुई थी तो लोगों को उम्मीद थी कि उन्हें शीघ्र लोकतंत्र मिलेगा लेकिन अब उन्हें भविष्य अंधकार में नजर आ रहा है। लोग जश्न मना रहे थे कि उन्हें दूसरा सैन्य राज नहीं चाहिए, उन्हें भारत की तरह लोकतंत्र चाहिए लेकिन आर्थिक संकट ने हालात बिगाड़ दिए। बढ़ती महंगाई ने लोगों का जीना दूभर कर दिया। देश के बिगड़ते हुए हालातों से करंसी कमजोर हुई। रोटी और ईंधन की लगातार कमी होने लगी। तख्ता पलट के बाद अंतर्राष्ट्रीय समर्थन और लोन राहत में अरबों डॉलर रुक गए। विकास परियोजनाओं को रोक दिया गया। राष्ट्रीय बजट पर दबाव डाला गया जिससे मानवीय स्थिति बिगड़ गई। रोटी को लेकर शुरू हुआ संघर्ष गृह युद्ध में बदल गया। संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानों के तहत भारतीय सेना के दस्ते सूडान में तैनात है जिन्होंने मानवीय सहायता मिशन में सराहनीय काम किया है। कई देशों ने सूडान में सभी पक्षों से संयम बरतने, लड़ाई रोकने और बातचीत के माध्यम से संकट को समाप्त करने की दिशा में काम करने का आह्वान किया है। लोगों को गोलियों और लड़ाई की गहरी परेशान करने वाली आवाजों से जागना होगा। सवाल यही है कि क्या दो जनरलों के बीच अहंकार की लड़ाई समाप्त होगी अगर संघर्ष जारी रहा तो एक और मानवीय संकट पैदा हो जाएगा।

संभलकर बोलें, शब्द सार्थक और विनाशक भी हो सकते हैं

एक ही बात कहीं पर बड़े से बड़ा दंगा करवा सकते हैं और कहीं पर बोले गए प्यार के बात बड़े-बड़े विवादों में सुलह करा सकते हैं।

शब्दों की महिमा को अपरंपार और अक्षर को नश्वर बताया गया है वैसे तो शब्दों की तीव्रता तलवार से ज्यादा नुकीली और भाले से ज्यादा चुभने वाली होती है। तलवार की धार से मनुष्य एक बार बच भी सकता है वर मुंह से बोले गए शब्द व्यक्ति को मृत्यु सा मूर्छित कर देते है। इसीलिए चिंतकों ने कहा है बोलने से पहले कई बार सोचें और बोलने के बाद सोचने वाला व्यक्ति समाज में मूर्खों की श्रेणी में गिना जाता है। राजनीति और कूटनीति में सारी जद्दोजहद शब्दावली और भाषणों की होती है कूटनीति में एक शब्द के कई अर्थ निकाले जाते हैं और उससे अपना हित अहित साधा जाता है। अकबर इलाहाबादी साहब कहते हैं, खीचों न कमानों को, न तलवार निकालो, जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो। मुंह से बोले गए शब्द और वाक्य बहुत सकारात्मक भी हो सकते हैं और बड़े ही भयंकर नकारात्मक भी हो सकते हैं। एक ही शब्द कहीं पर बड़े से बड़ा दंगा करवा सकते हैं और कहीं पर बोले गए प्यार के शब्द बड़े-बड़े विवादों में सुलह करा सकते हैं। शब्द की परिणति उसकी मुक्ति ही करती है। बड़े-बड़े राजनेता अभिनेता अपने मुंह से बोले गए शब्दों से लोकप्रियता के चरम पर पहुंच जाते हैं और कहीं किसी नेता के मुंह से निकला हुआ शब्द बाण समाज में विषाद और जहर भर देता है। शब्दों के जादूगर बड़ी-बड़ी आम सभाओं में सोच समझकर इस्तेमाल कर अपना सार्थक प्रभाव छोड़ते सत्ता परिवर्तन भी शब्दों के माया जाल से हि होता है। अंग्रेजी साहित्य में अरनेस्ट हेमिंग्वे को शब्दों का जादूगर माना जाता था उनके शब्दों का प्रभाव सीधे पाठकों के दिल तक पहुंच जाता था इसी तरह हिंदी में तुलसीदास विश्वव्यापी कवि है उनकी वाणी में सत्य और अमृत है। आधुनिक हिंदी साहित्य मेंअज्ञेय जी को इसी श्रेणी में रखा जा सकता है उनकी शब्दावली कठिन होते हुए भी पढ़ने वालों के मर्म तक पहुंच जाती है। महान कथाकार मुंशी प्रेमचंद हिंदी और देवनागरी लिपि को आत्मसात कर उपन्यास तथा कहानी और लिख कर अमृत्व को प्राप्त किया है। देवकीनंदन खत्री जी ने भी उपन्यासों खाकर चंद्रकांता संतति, भूतनाथ पढ़ने के लिए हिंदी को सीखा और मनन किया और लोकप्रिय उपन्यास की उत्पत्ति की, कबीर अपने फक्कड़पन की भाषा के कारण उत्तर भारत के सभी दिलों में समाए हुए हैं। निसंदेह शब्द जीवंतता प्रदान करते हैं और जीवनशैली को बेहतर बनाने की ओर अग्रसर करते हैं और द्रौपदी द्वारा कहे गए शब्द महाभारत की उत्पत्ति का कारण बनते हैं। इसलिए सदैव कहा जाता है की संभलकर बोलने से सद्गति प्राप्त होती है। इसीलिए तो संभल कर सही और उपयुक्त शब्दों का इस्तेमाल करना चाहिए। जो सदैव अच्छा वक्ता होता है अपने विचारों को संभल कर बोलता है भले ही वह दिलों को ना छुए पर उसका जनमानस को जीतना तय होता है और संसार पर वही राज करता है जो अपने शब्दों का सही इस्तेमाल करता है, गलत शब्द से, गलत संभाषण से गलत विचारों से बोला गया वाक्य प्रलय भी ला सकता है। शब्दों को तौल कर विचार कर बोलना चाहिए अन्यथा उसके नतीजे भयानक भी हो सकते हैं। शब्दों की मार बहुत ही तेज और बहुत मीठी भी होती है एक शब्द महायुद्ध करवा सकता है और दूसरा शब्द ऐसी शीतल फुहारें छोड़ता है कि सारा युद्ध उन्माद अखंड शांति में बदल जाता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अमेरिका रूस ,जापान, यूरोपीय देशों में दिए वहां के राष्ट्रपति व राजनेताओं द्वारा दिए गए भाषणों संभाषणों से युद्ध और कई बार शांति स्थापित हुई है। पाकिस्तान के राष्ट्रपति प्रधानमंत्री तथा उनके कैबिनेट के मंत्री अपने दिए गए वक्तव्य से ही सारी दुनिया से अलग अलग हो गए हैं। और भड़काऊ भाषण के कारण आज दुर्गति को प्राप्त हुए हैं। भारत शांति का दूत माना जाता है शांति स्थापना की सदैव मीठी वाणी बोलता आया है और यही कारण है कि भारत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शांति का पुजारी एवं दूत कहा जाता है एवं सदैव अंतर्राष्ट्रीय विवादों में उनके राजनेताओं को मध्यस्थता अथवा समझौते के लिए आमंत्रित किया जाता रहा है। यही कारण है कि रूस यूक्रेन के लंबे युद्ध में विश्व के पूरे देश एवं रूस तथा यूक्रेन के राजनेता भी भारत की ओर युद्ध की शांति की पहल की प्रतीक्षा कर रहे हैं। यही कारण है की युवा पीढ़ी को सदैव कम बोलने, सदाचारी संभाषण देने के लिए प्रेरित किया जाता रहा है भारत की सांस्कृतिक तथा साहित्यिक विरासत को सत साहित्य और संतुलित भाषा का मनुष्य तथा समाज के विकास के लिए पर्याय माना गया है। इसीलिए संतुलित भाषा मीठी भाषा बोलने से सदैव समाज तथा देश का वातावरण विकास के अनुकूल होता आया है।

यूपी पुलिस ने जारी की माफियाओं की लिस्ट

पूर्व आईपीएम अमिताभ ठाकुर बोले- सूची में वाराणसी के कई नाम गायब

संवाददाता

लखनऊ। अधिकार सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व आईपीएम अमिताभ ठाकुर ने उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा जारी माफिया और अपराधियों की सूची को पूरी तरह मनमाना और राजनैतिक बताया। उन्होंने कहा कि मात्र राजनैतिक कारणों से इस सूची में तमाम ऐसे नाम जानबूझ कर छोड़ दिए गए हैं, जिनपर दर्जनों बेहद संगीन मुकदमे हैं और जिनके अपराधिक शोहरत से सभी परिचित हैं। उन्होंने कहा कि विधायक सुशील सिंह पर 25 से अधिक मुकदमे रहे हैं, किंतु उनका नाम सूची से गायब है। इसी तरह डबल मर्डर में सजायाफ्ता और 25 मुकदमे वाले

अजय मरदह, दर्जनों मुकदमे लिए सुजीत सिंह बेलवा, मनीषा कोईराला के मैनेजर का हत्यारा अबू सलेम का साथी उपेंद्र सिंह गुड्डू, पूर्व प्रमुख चिरई गांव पप्पू भौकाली और बाहुबली के रूप में ज्ञात एमएलसी विनीत सिंह का नाम सूची से गायब है। इतना ही नहीं, बृजेश सिंह के धुर विरोधी वर्षों से फरार इंद्र देव सिंह, जेल से भागे हुए सुनील यादव तथा फरार अजीम के नाम भी लिस्ट से गायब हैं। अमिताभ ठाकुर ने कहा कि ये नाम सिर्फ वाराणसी क्षेत्र से हैं, यही स्थिति पूरे प्रदेश में है, जो पुलिसिया कार्रवाई की हकीकत को सामने लाता है। यूपी पुलिस ने ऐसी लिस्ट जारी की जो मोस्ट वांटेड अपराधी की हैं। अल्पसंख्यक हों या बहुसंख्यक, पिछड़ी जाति के हो या अगड़ी, अपराधों के प्रति योगी सरकार सख्ती से निपट रही है। जिन माफियाओं को प्रदेश में सूचीबद्ध किया वो जोन के आधार पर चिन्हित किए गए है, जिसमें मेरठ जोन में उधम सिंह, योगेश भदोड़ा, बदन सिंह उर्फ बद्दो, हाजी याकूब कुरैशी, शारिक, सुनील राठी, धर्मेंद्र, यशपाल तोमर, अमर पाल उर्फ कालू, अनुज बारखा, विक्रांत उर्फ विक्की, हाजी इकबाल उर्फ बाला, विनोद शर्मा, सुनील उर्फ मूंछ, संजीव माहेश्वरी उर्फ जीवा व विनय त्यागी उर्फ टिंकू। आगरा जोन के अनिल चौधरी व ऋषि कुमार शर्मा, बरेली जोन के एजाज, कानपुर जोन के अनुपम दुबे। लखनऊ जोन के खान मुबारक, अजय प्रताप सिंह उर्फ अजय सिपाही, संजय सिंह सिंघाला, अतुल वर्मा, मु.सहीम उर्फ कासिम प्रयागराज जोन के डब्बू सिंह उर्फ प्रदीप सिंह, सुधाकर सिंह, गुड्डू सिंह, अनूप सिंह।

वहीं, वाराणसी जोन के मुख्तार अंसारी, त्रिभुवन सिंह उर्फ पवन सिंह, विजय मिश्रा, ध्रुव सिंह उर्फ कुंटू सिंह, अखंड प्रताप सिंह, रमेश सिंह उर्फ काका। गोरखपुर जोन के संजीव द्विवेदी उर्फ रामू द्विवेदी, राकेश यादव, सुधीर कुमार सिंह, विनोद कुमार उपाध्याय, राजन तिवारी, रिजवान जहीर, देवेन्द्र सिंह, तो वहीं गौतमबुद्धनगर कमिश्नरेट से सुंदर भाटी, सिंहराज भाटी, अमित कसाना, अनिल भाटी, रणदीप भाटी, मनोज उर्फ आसे, अनिल दुजाना। कानपुर कमिश्नरेट से सऊद अख्तर, कमिश्नरेट लखनऊ के लल्लू यादव, बच्चू यादव व जुगनू वालिया उर्फ हरिवंदर सिंह। प्रयागराज कमिश्नरेट से बच्चा पासी उर्फ निहाल पासी, दिलीप मिश्रा, जावेद उर्फ पप्पू, राजेश यादव, गणेश यादव, कमरुल हसन, जाविर हुसैन व मुजफ्फर, तो वहीं वाराणसी कमिश्नरेट से अभिषेक सिंह हनी उर्फ जहर, बृजेश कुमार सिंह व सुभाष सिंह ठाकुर का नाम लिस्ट में शामिल है।

गरीब को लोकतंत्र के उत्सव से दूर करता है महंगा चुनाव : वरुण

- निकाय चुनाव – वरुण गांधी के बयान से चढ़ा सियासी पारा
- 2009 के आम चुनावों में खर्च हुए थे 2 अरब डॉलर

संवाददाता, लखनऊ। उत्तर प्रदेश में निकाय चुनाव को लेकर तैयारी इस समय पूरे जोरों पर है। भारतीय जनता पार्टी कांग्रेस समेत सभी दलों एक के बाद एक अपने उम्मीदवारों की लिस्ट जारी कर रहे हैं, वहीं नेताओं के बीच बयानबाजी आरोप-प्रत्योप का दौर भी शुरू है। बीजेपी के सांसद वरुण गांधी के एक बयान ने फिर से सियासी पारा चढ़ा दिया है। बीजेपी नेता वरुण गांधी ने चुनाव में बड़े स्तर पर खर्च होने वाले धन पर सवाल खड़ा किया है।एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार वरुण गांधी ने कहा कि चुनावी चंदे पर कंट्रोल बेहद जरूरी है। एक आर्टिकल में वरुण गांधी लिखते हैं कि पूअर डेमोक्रेसी यानि गरीब लोकतंत्र में लोगों को सबसे बड़े पर्व से दूर करता है, इसलिए प्रत्याशियों की प्राइवेट चंदे पर निर्भरता कम से कम हो तो अच्छा।वरुण गांधी आगे लिखते हैं कि चुनावी खर्चे पर नियंत्रण के लिए सरकारी फंडिंग की दिशा में पूरी ईमानदारी के साथ प्रयास किए जाने की जरूरत है।बीजेपी सांसद ने इसको समय की मांग बताया। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि वरुण गांधी के इस बयान से बीजेपी समेत कई दलों की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। चुनावी खर्चे पर पूरी बेबाकी से अपनी राय रख रहे वरुण गांधी ने कहा कि चुनावी चंदे पर नियंत्रण जरूरी है।2009 के आम चुनावों में 2 अरब डॉलर खर्च हुए थे, 2019 तक यह आँकड़ा 8.5 अरब डॉलर पार कर चुका है। महँगा होता चुनाव गरीब को लोकतंत्र के सबसे बड़े उत्सव से दूर करता है और उसकी निष्पक्षता प्रभावित करता है।

संक्षिप्त समाचार

इन्वेस्ट इन आवर प्लानेट को अपने दैनिक जीवन में अपनाने की जरूरत

संवाददाता, लखनऊ। नवयुग कन्या महाविद्यालय लखनऊ की पर्यावरण संरक्षण एवं पुनर्स्थापन समिति द्वारा आगामी पृथ्वी दिवस के उपलक्ष्य में छात्राओं से पौधे, चिड़ियों के दाने-पानी हेतु मिट्टी के बर्तन मंगवाए गए। इस वर्ष की थीम इनेवस्ट इन आवर प्लानेट हैं। बी.एस.सी. द्वितीय, चतुर्थ सेमेस्टर की छात्राओं द्वारा पौधे, चिड़ियों के दाने और पानी के लिए मिट्टी के बर्तन व दाने लाये गए। कॉलेज में स्थित बायोगैस प्लांट में बची हुई सब्जी,फ्रूट के छिलके भी छात्राओं से डलवाए गए ताकि संयंत्र में खाद का निर्माण हो सके। इस पूरी मुहिम में छात्राओं के साथ-साथ नवयुग परिवार के सदस्य डा.संगीता शुक्ला, प्रो. सीमा सरकार, डा.अंबिका, ललिता पाण्डे ने भी योगदान दिया। प्राचार्या प्रो. मंजुला उपाध्याय द्वारा छात्राओं का उत्साहवर्धन किया तथा उन्होंने पृथ्वी दिवस की थीम इन्वेस्ट इन आवर प्लानेट को अपने दैनिक जीवन में अपनाने की जरूरत पर विशेष ध्यान देने को कहा। ऐसी छोटे छोटे प्रयास से ही हम एक जिम्मेदार नागरिक की भूमिका का निर्वहन करते हुए अपने पर्यावरण को हरा भरा बना सकते हैं।

साहिब श्री गुरू अंगद देव जी महाराज का प्रकाश पर्व मनाया गया

संवाददाता, लखनऊ। सिखों के दूसरे गुरु साहिब गुरू अंगद देव महाराज का प्रकाश पर्व (जन्मोत्सव) गुरूद्वारा श्री गुरू नानक देव मे गुरू सिंह सभा, नाका हिंडोला लखनऊ में मनाया गया। जिसमें राजिन्दर सिंह शबद कीर्तन के गायन एवं नाम सिमरन द्वारा समूह साध संगत को निहाल किया। उसके उपरान्त ज्ञानी सुखदेव सिंह जी ने श्री गुरू अंगद देव के जीवन पर प्रकाश डाला।कार्यक्रम की समाप्ति आरती गायन एवं श्री गुरू ग्रंथ साहिब पर फूलों की वर्षा के साथ हुई। कार्यक्रम का संचालन सतपाल सिंह मीत ने किया। दीवान की समाप्ति के बाद गुरू सिंह सभा के अध्यक्ष राजेन्द्र सिंह बग्गा ने समूह संगत को साहिब श्री गुरू अंगद देव के प्रकाश पर्व (जन्मोत्सव) की बधाई दी। दशमेश सेवा सोसाइटी के सदस्यों ने गुरू का लंगर श्रद्धालुओं में वितरित किया।

मिर्जापुर में अष्टभुजा देवी मंदिर एवं कालीखोह मंदिर दर्शन हेतु रोप-वे की सुविधा

- विंध्याचलधाम पौराणिक एवं धार्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण : जयवीर
- पौराणिक एवं ऐतिहासिक स्थलों के लिए चरणबद्ध रूप से होगा रोप–वे का संचालन

संवाददाता

लखनऊ। मिर्जापुर में स्थित अष्टभुजा देवी मंदिर एवं कालीखोह मंदिर के दर्शन हेतु पीपीपी मॉडल पर रोप-वे सेवा शुरू हो गई है। इससे विंध्याचलधाम आने वाले श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों को दर्शन करने में आसानी होगी। श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ने पर स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे। राज्य सरकार को आय भी होगी। भविष्य में रोप-वे सेवा की लोकप्रियता एवं सफलता को देखते हुए पर्यटन के दृष्टि से अन्य महत्वपूर्ण स्थलों पर चरणबद्ध रूप से रोप सेवा शुरू करायी जायेगी। प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि विंध्याचलधाम पौराणिक एवं धार्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। वर्ष भर श्रद्धालुओं का यहां आना-जाना लगा रहता है। इसको दृष्टिगत प्रसिद्ध मंदिरोंके आसानी से दर्शन हेतु रोप-वे सेवा की शुरूआत की गई है। वृद्ध श्रद्धालुओं को मंदिर तक पहुंचने में आसानी होगी।पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि अष्टभुजा मंदिर के दर्शन के लिए प्रति व्यक्ति 60 रुपये तथा कालीखोह मंदिर के लिए 40 रुपये का भाड़ा तय किया गया है।

रोप-वे की सेवा प्रात: 07:30 बजे से सूर्यास्त तक उपलब्ध होगी। दोनों स्थान विंध्य त्रिकोण यात्रा के अंतर्गत आते हैं। श्रद्धालुओं के यात्रा की सुविधा के लिए समस्त इंतजाम हैं। सुरक्षित यात्रा की विशेष व्यवस्था की गई है। प्रदेश के प्रमुख शहरों आगरा, मथुरा, लखनऊ, प्रयागराज में हेलीपोर्ट की सुविधा शुरू किये जाने पर काम किया जा रहा है। विंध्याचल में रोप-वे शुरू करने के बाद बरसाना और प्रयागराज में रोप-वे सेवा शुरू की जायेगी। चित्रकूट में रोप-वे की सेवा पहले से ही संचालित है। बाकी शहरों में यह सेवा क्रमिक रूप से शुरू की जायेगी। राज्य सरकार पर्यटन स्थलों पर बुनियादी सुविधाएं बढ़ाने पर काम कर रही है। सीएम योगी आदित्यनाथ का पर्यटन विकास पर विशेष जोर है। आने वाले समय में पर्यटकों की संख्या बढेगी, इसको दृष्टिगत रखते हुए प्रदेश में स्थित पौराणिक एवं ऐतिहासिक स्थलों का सौन्दर्यीकरण कार्य तेजी से किया जा रहा है। यूपी को एडवेंचर टूरिज्म का हब बनाने की दिशा में काम किया जा रहा है। हेलीपोर्ट एवं वॉटर स्पोर्ट का कार्य प्रगति पर है। पर्यटन की गतिविधियां बढ़ने से पर्यटन सेक्टर में रोजगार के साथ राजस्व अर्जन बढ़ेगा। प्रदेश की अर्थव्यवस्था में पर्यटन सेक्टर की भूमिका एवंसहभागिता बढ़ेगी।

टीले वाली मस्जिद पर नमाजियों से मिलीं सपा प्रत्याशी

संवाददाता, लखनऊ। राजधानी में समाजवादी पार्टी की महापौर पद की प्रत्याशी वंदना मिश्रा ने शुक्रवार को टीले वाली मस्जिद पर अलविदा की नमाज अदा कर रहे लोगो से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने वहां मौजूद लोगों से बातचीत भी की। उन्होंने कहा कि मैं लखनऊ के लोगों को याद दिलाना चाहूंगी कि यहां की परंपरा गंगा जमुनी तहजीब है। यहां एक साथ सारे त्यौहार मिलजुल कर मनाने की परंपरा चली आ रही है। इसी को फिर से ताजा करने के लिए यहां आई हूं। मैं मौलाना साहब से मिल कर आशीर्वाद लूंगी। जितने लोग यहां देख रहे उन्हें पता चलेगा कि नफरत के मुकाबले मोहब्बत की राजनीति कैसे होती है। लखनऊ की जनता हमारे साथ है। इस दौरान सपा नगर अध्यक्ष सुशील दीक्षित, लखनऊ बार एसोसिएशन के पूर्व महामंत्री जितेंद्र सिंह यादव जीतू समेत पार्टी ने अन्य नेता व कार्यकर्ता उपस्थित रहें।

बस में यात्री के बैग से नकदी और जेवर चोरी,लोगों ने एक संदिग्ध को पकड़ा, दूसरा फरार

संवाददाता, लखनऊ। बीकेटी थाना क्षेत्र में बस से परिवार के साथ घर जा रहे युवक के बैग से नकदी और जेवरात पार कर दिए गए। युवक बाहर रहकर सिलाई का काम करता है। वह ईद का त्योहार मनाने अपने घर आ रहा था। बस के अंदर मौजूद सवारियों ने एक संदिग्ध युवक को पकड़ लिया। शुक्रवार दोपहर हुई घटना में पीड़ित ने पकड़े गए आरोपी को बीकेटी पुलिस को सौंपा दिया। पुलिस जांच में जुटी है। सीतापुर जिले के थाना अटरिया के नीलगांव निवासी गौस मोहम्मद अपनी पत्नी, भाई साकिब और परिजनों के साथ हैदराबाद में रहकर सिलाई का काम करता है।

शुक्रवार को परिवार सहित ईद मनाने के लिए सुबह वह अपने परिजनों के साथ लखनऊ पहुंचा था। कैसरबाग बस अड्डे से बस पर सवार होकर नीलगांव थाना अटरिया जिला सीतापुर के लिए आ रहा था। गौस मोहम्मद के पास दो बैग थे। जिसमें एक बैग को अपनी सीट के आगे रख लिया। वहीं दूसरे बैग को सीट के बगल में रख लिया। बस में सवारी बढ़ने लगी। तभी साईड वाला बैंग पीछे खिसक गया। बस जैसे ही बीकेटी थाना क्षेत्र के रामपुर बेहडा चक्की के पास पहुंची, तभी पीछे बैठे दो संदिग्ध युवक ने बैग काटकर 40 हजार रुपए नकद, झुमकी और तीन जोड़ी पायल पार कर दी। युवक जब बैग से नकदी व जेवरात निकाल रहे थे, तभी बस में मौजूद सवारी ने उनकी इस हरकत को देख लिया। उसने शोर मचाया तो एक संदिग्ध चलती बस से कूद कर भाग गया। बस में मौजूद लोगों ने दूसरे संदिग्ध युवक को धर दबोचा। उसे बीकेटी पुलिस को सौंप दिया। इस संबंध में पीड़ित गौस मोहम्मद ने थाना में लिखित तहरीर दी है। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है।

सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा यह सरकारी आदेश, अब यूपी पुलिस बिकवायेगी गुणवत्तापूर्ण अंडे

संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश पुलिस का एक नया फरमान आजकल खूब चर्चाओं में है। दरअसल यूपी पुलिस को अब एक नई जिम्मेदारी सौंपी गई है, जिसके बारे में जानकर हर कोई हैरान हो रहा है। यूपी पुलिस को लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ-साथ अब यह भी देखना होगा कि लोगों को अच्छी क्वालिटी के अंडे मिल रहे हैं या नहीं। जानकारी के मुताबिक, उत्तर प्रदेश के आईजी लॉ एंड ऑर्डर की ओर से जारी ये फरमान प्रदेश के सभी जिलों तक पहुंचा दिया

गया है। आदेश में कहा गया है कि जनता को अच्छी क्वालिटी के अंडे मिले इसके लिए यूपी पुलिसअच्छी गुणवत्ता वाले अंडे बिकवाएगी। आपको बता दें कि उत्तर प्रदेश में योगी सरकार द्वारा साल 2022 में नई कुक्कुट विकास नीति लाई गई थी। इस योजना का उद्देश्य है प्रदेश को अंडा उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाना। इस नीति के अनुसार सरकार ने 5 सालों में 700 पोल्ट्री यूनिट स्थापित करने के साथ-साथ प्रतिदिन 1.90 करोड़ अंडे के उत्पादन का लक्ष्य रखा है। सरकार लोगों को कर्मशियल लेयर फॉर्म स्थापित करने के लिए भी प्रोत्साहित कर रही है। अब प्रदेश में अंडा उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार द्वारा शुरू की गई कुक्कुट विकास योजना में भी उत्तर प्रदेश पुलिस सहयोग करेगी। इस योजना के जरिए मुर्गी फार्मों में बेतरीन क्वालिटी के अंडा उत्पादन पर जोर दिया जाएगा। यूपी पुलिस का ये फरमान अनोखा है, जो इंटरनेट पर काफी वायरल हो रहा है।

यूपी में हर घर होगा रोशन, सरकार सबको देगी बिजली कनेक्शन

संवाददाता, लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार हर घर, हर परिवार को बिजली कनेक्शन का तोहफा देने जा रही है। प्रदेश में अब एक भी घर अंधेरे में नहीं रहेगा। इसके साथ ही बिजली चोरी पर भी लगाम लगाई जा सकेगी। उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश पावर कारपोरेशन लि. के अन्तर्गत पांचों वितरण निगमों में कुल 3.27 करोड़ विद्युत उपभोक्ता हैं। इनमें से घरेलू प्रयोग हेतु कुल संयोजनों की संख्या 2.88 करोड़ है। उत्तर प्रदेश की जनसंख्या को देखते हुए यह स्पष्ट है कि कुल घरेलू विद्युत संयोजनों की संख्या कुल परिवारों की संख्या के सापेक्ष कम है। इसीलिए सरकार ने यह निर्णय लिया है। ऐसे समस्त परिवार जो कि वर्तमान में विद्युत का प्रयोग कर रहे हैं, परन्तु उनके द्वारा संयोजन नहीं लिया गया है, उनको नियमानुसार संयोजन निर्गत किया जाएगा। इससे बिजली चोरी पर भी रोक लग सकेगी तथा ऐसे परिसर जो कि अविद्युतीकृत हैं का विद्युतीकरण कराकर संयोजन निर्गत कर दिया जाए। इस अभियान को सफल बनाने के लिए यूपीपीसीएल के अध्यक्ष एम देवराज ने विभागीय स्तर पर आदेश जारी किया है। आदेश में कहा गया है कि विद्युतीकरण से छूटे समस्त परिवारों का चिह्नंकन आवश्यक है। इसके लिए अभियान चलाकर ऐसे परिवारों व घरों को चिन्हित किया जाएगा, जिनके निवास स्थान पर वर्तमान में कोई भी वैध विद्युत संयोजन नहीं है। इसके लिए विद्युत विभाग के कर्मचारी ग्राम पंचायत में उपलब्ध परिवार रजिस्टर, नगरीय क्षेत्र में हाउस टैक्स, वॉटर टैक्स जमा करने वाले परिसरों का विवरण और राशनकार्ड का विवरण देखकर विद्युत संयोजन है या नहीं का निर्णय कर सकते हैं। इससे प्राप्त मूल सूचना को आधार बनाते हुए विस्तृत सर्वे कराने के लिए सरकार ने नए प्रयोग करने के भी निर्देश दिए हैं।

सिविल सर्विसेज डे पर दिखा यूपी का दम

रामपुर के डीएम को प्रधानमंत्री ने दिया सम्मान

संवाददाता, लखनऊ। पीएम नरेंद्र मोदी ने आज नई दिल्ली में सिविल सर्विसेज डे पर लोक प्रशासन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए रामपुर के डीएम रविंद्र कुमार मांदड़ को सम्मानित किया।2013 बैच के आईएएस अधिकारी रविंद्र कुमार मांदड़ मार्च 2021 से रामपुर के डीएम हैं। रविंद्र ने पीएम के सुपोषित भारत विजन से प्रेरणा लेकर जिले में नवाचार की पहल करते हुए संवर्धन सुपोषित रामपुर नाम से अभियान चलाया। इसके अंतर्गत स्थानीय कृषक उत्पादक संघ एफपीओ के साथ समन्वय कर बच्चों व महिलाओं के लिए पौष्टिक तत्वों से युक्त आहार पोषण किट वितरण कराया। दो वर्ष में इस अभियान के तहत 5000 से अधिक बच्चों, खून की कमी वाली गर्भवती व धात्री महिलाओं और कुपोषित किशोरियों को सुपोषित किया गया। डीएम की पहल के नोवेशन-डिस्ट्रिक्ट श्रेणी में पुरस्कृत किया गया। इससे पोषण किट के जरिए किसानों की आय में वृद्धि हुई और लोगों को कुपोषण से छुटकारा दिलाने में कामयाबी मिली। 2023 को अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष के मद्देनजर रामपुर में प्रदेश की पहली मिलेट्स शॉप खुली। रामपुर कृषक उत्पादक संगठन को प्रोत्साहन मिला। एफपीओ ने सोलर कोल्ड स्टोरेज, साइलो की स्थापना, कुपोषण दूर करने के लिए पोषण किट का निर्माण व वितरण किया। मिशन मुस्कान के तहत चाइल्ड केयर एंड प्रोटेक्शन फंड स्थापित किया। स्वैच्छिक दान प्राप्त किया जाता है। अब तक 54 लाभार्थियों का इलाज, 857 का पोषण प्रबंधन और दिव्यांगता से ग्रस्त 47 बच्चों की सर्जरी कराई गई।

भाजपा सरकार जम्मू काश्मीर में आतंकवाद के खात्मे का झूँठा ढिंढोरा पीट रही : प्रमोद तिवारी

संवाददाता , लखनऊ। प्रमोद तिवारी सांसद, उप नेता, राज्य सभा एवं सदस्य, स्टीयरिंग कमेटी ने ''भारत माता'' की रक्षा करते हुये भारतीय सेना के पाँच जॉबॉज जवानों, हवलदार मंदीप सिंह, लांस नायक देवाशीष बस्वाल, कुलदीप सिंह, सिपाही हरकिशन सिंह एवं सेवक सिंह, के सर्वोच्च बलिदान को प्रणाम करते हुये उन्हें श्रद्धांजलि दी है, तथा उनके परिजनों के प्रति गहरी संवदेना व्यक्त की है। श्री तिवारी ने कहा है कि केन्द्र सरकार द्वारा शहीदों के लिये अनुमन्य सभी सुविधायें, जैसे आर्थिक एवं सुरक्षा समबन्धी सहित अन्य सुविधायें उनके परिवाजनों को उपलब्ध करायी जायं। शहादत देने वाले इन जवानों में एक ओडिशा का बाकी सभी पंजाब प्रदेश के मूलत: निवासी हैं- अत: ये

जवान जिस प्रदेश के मूलत: निवासी हैं वहाँ की राज्य सरकारों से श्री तिवारी ने आग्रह किया है कि सर्वोच्च बलिदान देने वाले इन जवानों के परिजनों के पुनर्वास की व्यवस्था के साथ- साथ प्रत्येक जवान के परिवार को पाँच- पाँच करोड़ रुपये की आर्थिक सहायता अलग से प्रदान करे। क्योंकि अपनी अंतिम साँस तक ये जवान आंतकवादियों से संघर्ष करते रहे, और भारत माता की रक्षा करते हुये अंत में जब इनके वाहन पर ग्रेनेड गिरा तब इनका वाहन जल उठा और ये जवान उसमें शहीद हो गये। श्री तिवारी ने जहाँ भारतीय सेना को दुनिया की सर्वाधिक सशक्त, पराक्रमी और यशोगाथा लिखने वाली सेना बताया है वहीं इस प्रकरण की ''विशेष जाँच'' कराकर देश वासियों को विश्वास में लेने को भी कहा है, और यह भी कहा है कि जब एक ओर भा.ज.पा. सरकार धारा 370 के हटने के बाद जम्मू काश्मीर में आतंकवाद के खात्मे का झूँठा ढिंढोरा पीट रही है तो फिर वहाँ इतनी बड़ी आतंकवादी घटना कैसे हुई। श्री तिवारी ने कहा है कि हमारी भारतीय सेना बहादुर है, सशकत है और शौर्यगाथा लिखने वाली पराक्रमी सेना है, तथा पूरी तरह से सक्षम है परन्तु यह भी सच है कि मौजूदा ''मोदी सरकार'' में दृढ़ राजनैतिक इच्छाषक्ति की कमी है। सदन के अन्दर और सदन के बाहर भा.ज.पा. सरकार ने यह स्वीकार किया है कि पिछले 9 वर्षो में मौजूदा भा.ज.पा. सरकार के कार्यकाल में सर्वाधिक सीमाओं की पवित्रता भंग हुई है और भारतीय सीमा का अतिक्रमण हुआ है। जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी काबुल जाते समय बिना बुलाये पाकिस्तान के तत्कालीन प्रधानमंत्री नवाज शरीफको जन्मदिन की बधाई देने, और शादी में शामिल होने बिना देश को विश्वास में लिये पाकिस्तान पहुंच जाते हैं और वहाँ के तत्कालीन प्रधानमंत्री नवाज शरीफकी माँ के चरणों में सिर झुका देते हैं तो इससे विरोधियों के हौसले और अधिक बुलन्द होते हैं। श्री तिवारी ने मोदी जी से आग्रह किया है कि वे स्वर्गीया इन्दिरा गाँधी से प्रेरणा लें, और भारतीय सेना के मनोबल को बढ़ायें, सेना के मनोबल को तोड़ें नहीं। जब माननीय मोदी जी चीन के प्रकरण पर बयान देते है कि '' न तो चीनी सेना भारतीय सीमा के अंदर आई थी और न ही हमारी कोई पोस्ट, चौकी पर उसने कब्जा किया था। तो इससे सेना का मनोबल हतोत्साहित होता है क्योंकि सत्यता कुछ और ही गवाही दे रही थी।श्री तिवारी ने कहा है कि आगामी स्थानीय निकाय के चुनाव नाम के अनुरूप स्थानीय मुद्दों तक ही सीमित रखें। जनता विकास कर सकने वाले और सबको साथ लेकर चलने वालों को प्राथमिकता दे, और चुनाव के पूरे समय तक अमन और शांति बनाये रखे।

सीएम योगी आदित्यनाथ से मिले सुनील गावस्कर, सी. श्रीनिवास

संवाददाता, लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से शुक्रवार को यहां पूर्व भारतीय क्रिकेटर सुनील गावस्कर और श्री सत्य साई हेल्थ एंड एजुकेशन ट्रस्ट, मुंबई के अध्यक्ष सी. श्रीनिवास ने शिष्टाचार मुलाकात की। राज्य सरकार के प्रवक्ता ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। प्रवक्ता ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से शुक्रवार को यहां उनके पांच, कालिदास मार्ग स्थित सरकारी आवास पर भारतीय क्रिकेटर सुनील गावस्कर और श्री सत्य साई हेल्थ एंड एजुकेशन ट्रस्ट, मुंबई के अध्यक्ष सी. श्रीनिवास ने शिष्टाचार भेंट की। उन्होंने बताया कि इस मौके पर मुख्यमंत्री योगी ने दोनों को ओडीओपी (एक जिला-एक उत्पाद) का उपहार भेंट किया।

अध्यक्ष पद पर कांग्रेस प्रत्याशी समेत 48 ने किया नामांकन

संवाददाता, इटावा। सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी पंचस्थानीय राजेश अरोड़ा ने बताया कि रविवार को नगर पालिका परिषद इटावा के अध्यक्ष पद के 25 नामांकन पत्र खरीदे गये, जबकि कांग्रेस प्रत्याशी ममता द्विवेदी ने अध्यक्ष पद को नामांकन किया। सभासद पद के लिए 438 नामांकन पत्र क्रय किये गये। इनमें से विभन्नि वार्डों से 76 नामांकन पत्र भरे गये। नगर पालिका परिषद भरथना के अध्यक्ष पद के 38, सभासद पद के 149 नामांकन पत्र क्रय किये गये। इसमें अध्यक्ष पद के 11 और वार्डों से सभासद पद के 59 नामांकन पत्र भरे गये। नगर पालिका परिषद जसवन्त नगर के अध्यक्ष पद के 13 नामांकन पत्र क्रय किए गए, जिसमें से चार प्रत्याशियों ने नामांकन दाखिल किये। सभासद पद के 114 नामांकन पत्र क्रय किये गये। इसमें से विभन्नि वार्डों से 87 नामांकन पत्र भरे गये। नगर पंचायत इकदिल के अध्यक्ष पद के 21 नामांकन पत्र खरीदें गये जबकि 8 नामांकन पत्र दाखिल किये गये। वहीं सभासद पद के 83 नामांकन पत्र क्रय किये गये, जिसमें से 67 नामांकन पत्र जमा हुए। नगर पंचायत बकेवर के अध्यक्ष पद के 53 नामांकन पत्र क्रय किए गए जिसमें 17 नामांकन पत्र प्राप्त हुए। सभासद पद के 65 नामांकन पत्र क्रय किये गये। जिसमें से 34 नामांकन पत्र भरें गये। नगर पंचायत लखना के अध्यक्ष पद के 33 नामांकन पत्र क्रय किए गए जिसमें से 7 नामांकन पत्र भरें गये। सभासद पद के 41 नामांकन पत्र बिकें जबकि 29 नामांकन पत्र जमा हुए। बता दें कि घोषित कार्यक्रम के अनुसार सोमवार को नामांकन पत्र खरीदने व दाखिल करने का अंतिम दिन है और दोपहर 3 बजे तक इस प्रक्रिया को पूरा किया जाएगा।

सपा ने बचे हुए वार्डों के लिए जारी की सभासदों की सूची

संवाददाता, इटावा। सपा ने नगर पालिका परिषद इटावा के सभी 40 वार्डों के लिए सभासदों की सूची जारी की। हालांकि अब भी सिविल लाइन समेत कुछ वार्ड पर प्रत्याशियों का ऐलान नहीं किया गया। सोमवार को नामांकन का अंतिम दिन है, लिहाजा अंतिम दौर में नाम फाइनल हो सके हैं। रविवार को शांति कॉलोनी से मीरा देवी, मेवाती टोला से शुभम गौतम, गाड़ीपुरा से फिरदौस बेगम, कटरा साहब खां से अनिल गुप्ता, छिपैटी से शबाना बेगम, अकाल गंज से आसिफखान उर्फ शारिक, चौगुर्जी से दीपक भदौरिया, अशोकनगर से सुनील कुमार भूरे, नौरंगाबाद से मोहम्मद इलियास भूरे, उर्दू मोहल्ला से सफीक मस्त खां को टिकट दिया गया।

बदलता मौसम किसानों को कर रहा है परेशान

संवाददाता, इटावा। पिछले तीन दिनों से बदलता हुआ मौसम किसानों को परेशान कर रहा है। बेमौसम बरसात और ओलावृष्टि ने गेहूं की फसल को चौपट कर दिया है। किसानों की छह महीने की मेहनत पर इस बेमौसम बरसात ने पानी फेर दिया है। हालांकि शहर के लोगों को इस बूंदाबांदी से गर्मी से राहत मिली पर बिजली ने परेशान किया। स्थिति यह है कि किसानों को अच्छे उत्पादन की उम्मीद थी पर बरसात और ओलावृष्टि ने गेहूं की फसल को काफी नुकसान पहुंचाया है। इससे किसान खासे परेशान हैं। उन्हें लग रहा है कि उनका आगे का खर्चा कैसे चलेगा, जिले में इस साल एक लाख हेक्टेयर गेहूं की फसल बोई थी। हालांकि मौसम शुरु से ही किसानों को परेशान करने लगा और जब पानी की जरूरत थी तब पानी नहीं बरसा अब जब गेहूं की फसल पककर तैयार है और कटाई चल रही है तब बरसात में काफी नुकसान पहुंचाया। शुक्रवार की रात को बकेवर महेवा तथा भरथना क्षेत्र में कई स्थानों पर हुई ओलावृष्टि ने गेहूं की फसल को नुकसान पहुंचाया है कटने के लिए तैयार गेहूं खेतों में बिछ गई। इसी तरह जो फसल कटी हुई रखी थी वह भी बीत चुकी है। शनिवार को सुबह के समय धूप निकली लेकिन दोपहर बाद मौसम फिर बदल गया ठंडी हवा चलने लगी और कुछ स्थानों पर हल्की बरसात भी हुई ।

कम्पोजिट विद्यालय के तीन छात्रों को मिलेगी राष्ट्रीय छात्रवृति

संवाददाता, इकदिल,इटावा। ग्रामीण तथा आर्थिक रूप से कमजोर मेधावी छात्र-छात्राओं के लिए केंद्र सरकार की ओर से आयोजित होने वाली राष्ट्रीय आय एवं योग्यता आधारित छात्रवृत्ति परीक्षा शैक्षिक सत्र 2022-23 में कंपोजिट विद्यालय रायपुरा के सोनी देवी, रोशनी, सुमित कुमार ने सफलता पायी है। इस मौके पर एसएमसी अध्यक्ष ज्ञान सिंह राजपूत, रमेश चन्द्र राजपूत संकुल शिक्षक व प्रधानाध्यापक प्राथमिक विद्यालय सूखाताल, अशोक कुमार यादव प्रधानाध्यापक प्राथमिक विद्यालय बूसा, अनिल राजपूत इचार्ज प्रधानाध्यापक कम्पोजिट विद्यालय रायपुरा व विद्यालय के स्टाफने बच्चों का माल्यार्पण कर व मुँह मीठा करके शुभकामनाएं दीं तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

नेता जी मुलायम सिंह यादव की पार्टी का विरोध कर रहे हैं ''यादव समाज'' के लोग

- पार्टी के नेताओं ने बनाई प्रत्याशी के प्रचार से दूरी
- पुराने समाजवादी नेता दे रहे हैं पार्टी से इस्तीफा

राष्ट्रीय नेतृत्व को गुमराह कर ऐसे व्यक्ति को टिकट दिलवाया जिसका ना कोई राजनैतिक बैकग्राउंड और ना ही पार्टी के लिए कोई योगदान : राम सिंह यादव

पार्टी के वरिष्ठ नेता व पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष राम सिंह यादव ने कहा कि नगर निकाय चुनाव में रायबरेली सीट के लिए प्रत्याशी चयन के लिए बनाई गयी स्क्रीनिंग कमेटी के 9 सदस्यों में 7 सदस्यों ने एक वरिष्ठ नेता के नाम की संस्तुति की थी लेकिन पार्टी को खत्म करने की मंशा वाले लोगों ने प्रदेश नेतृत्व वा राष्ट्रीय नेतृत्व को गुमराह करके एक ऐसे व्यक्ति को टिकट दिलवा दिया जिसका ना तो कोई राजनैतिक बैकग्राउंड है और ना ही पार्टी के लिए कोई योगदान है, उसका ना तो समाजवादी विचारधारा से कोई सरोकार है और ना ही पार्टी से, प्रत्याशी एक नेता का पिछलग्गू है, पार्टी के जमीनी नेताओं का दल छोड़ कर जाना पार्टी के भविष्य के लिए अत्यंत दु:खद है, पार्टी नेतृत्व को गुमराह करने वाले नेताओं की गम्भीर जांच कर कार्यवाही होनी चाहिए।

मूल समाजवादी विचारधारा और पार्टी के लिए सदैव तत्पर रहने वाले नेता प्रचार से दूरी बनाए हुए हैं : आलोक आर्यन

पार्टी के युवा नेता आलोक आर्यन ने कहा है कि नगर निकाय चुनाव में जिला संगठन ने पार्टी के वरिष्ठ नेताओं की अनदेखी करते हुए एक ऐसे व्यक्ति को टिकट दिया है जिसका पार्टी के लिए कोई योगदान नहीं है, यह सब जानबूझकर पार्टी को कमजोर करने के लिए किया गया है। समाजवादी पार्टी का यह चुनाव एक जाति विशेष तक सिमटता दिख रहा है क्योंकि प्रत्याशी के प्रचार में एक जाति के लोग ही दिख रहे हैं, मूल समाजवादी विचारधारा और पार्टी के लिए सदैव तत्पर रहने वाले नेता लोग प्रचार से दूरी बनाए हुए हैं। प्रत्याशी के चयन पर पहले कार्यकर्ताओं की नाराजगी फिर पदाधिकारियों के इस्तीफे के बाद अब चुनाव प्रचार में पार्टी के प्रमुख चेहरों की नदारगी और सोशल मीडिया पर टिप्पणियों ने समाजवादी पार्टी के चुनाव प्रचार को कॉमेडी सीरियल फ्लॉप शो जैसा बना दिया है। यह तो चुनाव परिणाम बताएगा कि नगर पालिका का चुनाव समाजवादी पार्टी के लिए खुशियाँ लाती है या गम ?

अनुभव स्वरुप यादव

रायबरेली। नगर निकाय चुनाव में समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी के चयन को लेकर पार्टी के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओ की नाराजगी थमने का नाम नहीं ले रही है। समाजवादी पार्टी ने पारसनाथ को अपना प्रत्याशी बनाया है जबकि प्रत्याशिता की दौड़ में सबसे आगे पार्टी के निवर्तमान जिला उपाध्यक्ष राम सेवक वर्मा थे, नगर पालिका के पूर्व अध्यक्ष व समाजवादी पार्टी के कद्दावर नेता मो0 इलियास ओम प्रकाश सोनकर के लिए टिकट चाहते थे, ओम प्रकाश सोनकर भी पार्टी के कार्यकर्ता हैं लेकिन पार्टी ने दोनों पुराने कार्यकर्तओं को किनारे करते हुए पारसनाथ को टिकट दे दिया जिसके बाद पार्टी के कार्यकर्ताओं वा पदाधिकारियों में बड़ा रोष हो गया। मो0 इलियास इसी नाराजगी के चलते पार्टी छोड़ कर कांग्रेस में शामिल हो गए जिसके बाद पार्टी के कई नेताओं ने सोशल मीडिया पर पार्टी के निर्णय को लेकर उल्टा-सीधा लिखना शुरू कर दिया। कई कार्यकर्ताओ ने जिलाध्यक्ष को आड़े हाँथो लेते हुए भाजपा को वॉक ओवर देने का आरोप लगाया है जबकि पार्टी के कई पदाधिकारियों ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है जिसमें पार्टी के पुराने जमीनी नेता व निवर्तमान जिला उपाध्यक्ष शमसाद ने भी पार्टी से इस्तीफा दे दिया। एक तरफ कार्यकर्ता सोशल मीडिया पर पार्टी के जिला संगठन के खिलाफ अपनी भड़ास निकाल रहे है तो दूसरी तरफ पदाधिकारियों के इस्तीफे की झड़ी लगी हुई। पार्टी के जिला उपाध्यक्ष चंद्रभाल उर्फ शिव शंकर सिंह पटेल ने भी अपने पद से त्यागपत्र दे दिया है, चंद्रभाल बछरांवा विधानसभा के प्रभारी भी थे गौरतलब है कि बछरांवा से सपा के श्याम सुन्दर भारती को चुनाव जितवाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने पार्टी के उच्च पदाधिकारियों पर कार्यकर्ताओं की उपेक्षा का आरोप लगाया है। इनके अलावा पार्टी के जिला सचिव मो. सलीम , जिला सचिव पारुल बाजपेयी, ओम प्रकाश सोनकर, मो सन्ने, दिलदार रायनी, फरीद अहमद , मुन्नवर रायनी, राज यादव, विमल कुमार, आदि दर्जनों समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओ की उपेक्षा से नाराज होकर पार्टी को अलविदा कह दिया है। मोहम्मद इलियास के पार्टी छोड़ने के बाद से समाजवादी पार्टी के मूल मतदाता माने जाने वाले यादव समाज के लोग भी प्रत्याशी चयन को लेकर मुखर हैं सोशल मीडिया पर खुला विरोध प्रदर्शित कर रहे हैं। यादव समाज को भी लगता है तीन दशक पुराने इस पार्टी का बंटाधार कुछ चाटुकारों और झूठे नेताओं की वजह से हो रहा है, रायबरेली में ऐसा पहली बार हो रहा है कि नेता जी मुलायम सिंह यादव की पार्टी की खिलाफत यादव समाज के लोग ही कर रहे हैं।

पार्टी के बहुत सारे नेता व कार्यकर्ता घर पर बैठे हैं, प्रत्याशी के साथ चुनाव प्रचार में टिकट लाने वालों के करीबियों को छोड़ कर कोई नहीं दिख रहा है। नाराज कार्यकर्ता ना तो पारसनाथ के लिए वोट मांगने निकल रहे हैं और ना ही सभाओं में शामिल हो रहे हैं। सोशल मीडिया पर कार्यकर्ता जिलाध्यक्ष पर आरोप लगा रहे हैं और उन छोटे कार्यकर्ताओ की नाराजगी पर जिलाध्यक्ष की प्रतिक्रिया ने यह साबित कर दिया है कि पार्टी में सब कुछ उल्टा-पुल्टा चल रहा है।

ससुराल आए युवक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

इटावा। कोतवाली क्षेत्र के गांव भूड़ी सहरिया में युवक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। इस मामले को लेकर युवक की पत्नी ने कोतवाली में सूचना दी कि उसके पति ने ससुराल में जहर खा लिया,अगले दिन युवक के पिता ने कोतवाली पहुंचकर युवक के ससुराल पक्ष के लोगों पर हत्या का आरोप लगाते हुए तहरीर दी है। पुलिस ने केस दर्ज कर मामले में जांच शुरू कर दी। वहीं शव का पंचनामा भर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। जिला संभल के थाना बहजोई के गांव आलपुर मैथरा के रहने वाले रामवीर पुत्र गुलफान सिंह की शादी बिलारी थाना क्षेत्र के गांव भूड़ी सहरिया की रहने वाली कविता पुत्री भारत सिंह के साथ हुई थी। कविता इस समय अपने मायके में आई हुई थी। बीती रात रामवीर अपनी पत्नी कविता को वापस लेने के लिए ससुराल आया था। किसी बात को लेकर पति पत्नी के बीच झगड़ा हो गया। जिसके बाद संदिग्ध परिस्थितियों में रामवीर की हालत बिगड़ गई। उसे इलाज के लिए अस्पताल लाया गया। जहां से मुरादाबाद भेज दिया। जहां उसकी मौत हो गई। पत्नी कविता ने कोतवाली पहुंचकर पति द्वारा ससुराल में झगड़े के बाद जहर खाने की सूचना दी। वहीं दूसरे दिन मृतक रामवीर के पिता गुलफान सिंह ने भी कोतवाली में तहरीर दी कि रामवीर की पत्नी कविता एक हफ्ता पहले प्लॉट खरीदने के लिए घर में रखे दो लाख रुपये लेकर अपने मायके आ गई थी, उसके बेटे को ससुराल में पत्नी कविता के अलावा उसके साले तिलक सिंह और कुंवर पाल ने गांव में बुलाया कहा कि दो लाख रुपये वापस ले जाओ।आरोप है कि उनका बेटा बीती रात नौ बजे ससुराल में आया जहां पैसों को लेकर मारपीट की गई, इसके बाद उसे जहरीला पदार्थ खिला दिया, जिससे उसकी मौत हो गई। युवक के पिता ने कहा कि आए दिन उसके बेटे रामवीर और उसकी पत्नी कविता के बीच झगड़ा होता था, उसके बेटे की मौत की सूचना फोन पर मिली तो वह कोतवाली पहुंचा। इस मामले में दी गई तहरीर पर पुलिस जांच कर रही है।

अज्ञात कारणों से घर में लगी आग गृहस्थी का सारा सामन जलकर राख

संवाददाता, ऊँचाहार, रायबरेली। बीकरगढ़ गाँव में अज्ञात कारणों के चलते एक घर में आग लग गई, ग्रामीणों द्वारा कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया, लेकिन तब तक घर में रखी गृहस्थी जलकर राख हो गई थी। शुक्रवार की दोपहर गाँव निवासी विजय कुमार के घर में अज्ञात कारणों के चलते आग लग गई, आग ने विकराल रूप धारण कर लिया, आग लगने की जानकारी ग्रामीण इकट्ठा हुए और कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया, पीड़ित के मुताबिक घर में रखा अनाज,कपड़े आदि गृहस्थी जलकर राख हो गई, पीड़ित ने प्रशासन से मदद की गुहार लगाई है।

युवक ने पिया कीटनाशक, हालत गम्भीर

संवाददाता, ऊँचाहार, रायबरेली। मंगलवार को क्षेत्र के रम्मा का पुरवा मजरे गंगौली गाँव में मंगलवार की देर शाम एक युवक ने धोखे से कीटनाशक पी लिया था ,जिसे परिजनों द्वारा सीएचसी लाया गया था जहां से प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल रेफर किया गया था, जिसके बाद जिला अस्पताल में डॉक्टर के कहने पर परिजन उसे निजी अस्पताल ले गया, जहां उसका इलाज किया गया, हालत में सुधार होने पर परिजन गुरुवार को उसे घर लेकर आ गए, लेकिन शनिवार की शाम तबियत बिगड़ने पर उसे फिर सीएचसी लाया गया, जहां से उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया है। गौरतलब है कि गाँव निवासी आकाश सिंह 22 ने मंगलवार की शाम धोखे से घर में रखा कीटनाशक पिया था, जिसे सीएचसी से प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया था, आकाश की माँ रामा देवी ने बताया कि जिला अस्पताल में इमरजेंसी ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक ने उन्हें इलाज के लिए एक निजी अस्पताल में भर्ती कराने की बात कही, जिस पर आकाश को निजी अस्पताल में भर्ती करा दिया गया, हालत में सुधार होने पर गुरुवार को परिजन उसे लेकर घर आ गए, जिसके बाद शनिवार की शाम अचानक उसकी तबीयत बिगड़ गई, जिसके बाद परिजनों द्वारा उसे सीएचसी लाया गया, जहां से प्राथमिक उपचार के बाद उसे जिला अस्पताल रेफर किया गया है। सीएचसी अधीक्षक मनोज कुमार शुक्ल ने बताया कि युवक को सीएचसी लाया गया था, जिसके पेट में इंफेक्शन होने की आशंका के कारण उसे प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया है।

तेज रफ्तार कार की टक्कर से ई-रिक्शा पलटा, कई लोग घायल

संवाददाता, ऊँचाहार, रायबरेली। कोतवाली क्षेत्र के लखनऊ प्रयागराज मार्ग पर अरखा प्लाई फैक्ट्री के पास तेज रफ्तार कार की टक्कर से ई-रिक्शा अनियंत्रित होकर खाई में पलट गया, घटना में चालक समेत ई रिक्शा सवार दस लोग घायल हो गये, जिसमें गम्भीर रूप से घायल दो महिलाओं को सीएचसी से जिला अस्पताल रेफर किया गया है।पूरे डींगुर मजरे सवैयाधनी गाँव निवासी प्रमोद अग्रहरि गाँव की महिलाओं व बच्चों को ई रिक्शा से लेकर रविवार की दोपहर बाद क्षेत्र के कोटराबहादुर गंज गाँव में आयोजित ब्रह्माभोज कार्यक्रम में शामिल होने जा रहा था, तभी अरखा प्लाई फैक्ट्री के पास लखनऊ से प्रयागराज की तरफजा रही कार ने ई रिक्शा में पीछे से जोरदार टक्कर मार दी,जिसके कारण ई रिक्शा अनियंत्रित होकर सड़क किनारे खाई में चला गया,वहीं घटना के बाद कार चालक मौके से भाग निकला, घटना में ई रिक्शा सवार चालक प्रमोद अग्रहरि 40 वर्ष के अलावा राजकुमारी 55 वर्ष, रामावती 70 वर्ष, रामकुमारी 50 वर्ष, कुसुम देवी 50 वर्ष,विद्या देवी 55 वर्ष, उर्मिला 35 वर्ष, राजरानी 55 वर्ष, इशता 5 वर्ष, व नीवी 4 वर्ष घायल हो गई, सभी घायलों को राहगीरों की मदद से सीएचसी लाया गया,जहां से प्राथमिक उपचार के बाद रामावती व रामकुमारी को जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया है।

पूर्व विधायक अशोक दुबे की पत्नी को भाजपा ने बनाया प्रत्याशी

संवाददाता, इटावा। भाजपा ने इटावा की तीन नगर पालिकाओं के चेयरमैन पद के लिए प्रत्याशियों के नामों की घोषणा कर दी है। पार्टी ने सर्वाधिक प्रतिष्ठित इटावा सदर नगर पालिका चेयरमैन के पद पर कुसुम दुबे को प्रत्याशी घोषित किया है। कुसुम दुबे भाजपा के दिग्गज नेता पूर्व विधायक तथा पूर्व एमएलसी स्वर्गीय अशोक दुबे की पत्नी हैं। भाजपा ने कुसुम दुबे को इटावा नगर पालिका चेयरमैन पद के लिए अपना प्रत्याशी बनाया है। भाजपा ने जिले के दो अन्य नगर पालिकाओं भरथना तथा जसवंत नगर के लिए भी अपने प्रत्याशियों के नामों की घोषणा कर दी है। पार्टी ने भरथना नगर पालिका अध्यक्ष के पद पर मनीषी गुप्ता को अपना प्रत्याशी बनाया है, जबकि जसवंत नगर नगर पालिका के चेयरमैन पद पर जय शिव बाल्मीकि को अपना प्रत्याशी घोषित किया है। भाजपा के जिला महामंत्री और निकाय चुनाव संयोजक शिवाकांत चौधरी ने बताया कि भारतीय जनता पार्टी के सभी प्रत्याशी सोमवार को अपना नामांकन पत्र दाखिल करेंगे। भारतीय जनता पार्टी पूरी दमदारी के साथ निकाय चुनाव लड़ेगी और जिले की निकायों पर विजयश्री हासिल करेगी।

कैलाश यादव को मिला पर्यावरण रत्न सम्मान

संवाददाता, इटावा। पर्यावरण संसद के संयोजक एवं प्रबंधक पान कुंवर इंटरनेशनल स्कूल डॉ. कैलाशचंद्र यादव को पर्यावरण रत्न सम्मान से सम्मानित किया गया। बाराबंकी के प्रतिष्ठित संगठनों आंखें फाउंडेशन, ग्रीन गैंग व पर्यावरण सेना, प्रयास फाउंडेशन एवं गुलजार फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में डॉ. कैलाश चंद्र यादव ने बताया कि छात्र पर्यावरण संसद व ग्रीन गैंग पर्यावरण सेना के सहयोग से बाराबंकी में विभिन्न विद्यालयों और कॉलेजों में छात्र पर्यावरण संसद का गठन किया जाएगा।

बीजेपी सभी निकायों में करेगी में पिछड़ा वर्ग सम्मेलन

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

महराजगंज, रायबरेली। भारतीय जनता पार्टी के पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष राधे श्याम सोनी के निर्देश पर जनपद की सभी निकायों में पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ का सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। इसी के क्रम में महराजगंज नगर निकाय में 27 अप्रैल को सम्मेलन की जिम्मेदारी भाजपा ओबीसी मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष पवन साहू को दी गई है। कार्यक्रम के संयोजक पवन साहू की अध्यक्षता में 27 अप्रैल को कस्बे में सम्मेलन का आयोजन किया जाना है। उक्त जानकारी देते हुए पिछड़ा प्रकोष्ठ के जिला उपाध्यक्ष पवन साहू ने बताया कि कस्बे के जसवंतरी देवी मंदिर प्रांगण में गुरुवार को सम्मेलन का आयोजन किया जाना है जिसमे नगर के ओबीसी मोर्चा के लोगो को एक मंच के नीचे एकत्र कर भाजपा के हाथों को मजबूत किया जाएगा। उन्होंने बताया कि जनपद की सभी निकायों में जिला अध्यक्ष के निर्देश पर ओबीसी मोर्चा का सम्मेलन आयोजित कर भाजपा को मजबूत किया जा रहा है।श्री साहू ने कहा कि चुनाव आने पर सभी दलों को ओबीसी की याद आती है, लेकिन चुनाव के बाद कोई भी दल नहीं पूछता। भाजपा ही एक ऐसी मात्र पार्टी है जिसमें ओबीसी का सम्मान है। उन्होंने बताया कि सभी दैनिक स्कूलों, केंद्रीय विद्यालयों, जवाहर नवोदय विद्यालय में ओबीसी को 27प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान,नीट परीक्षा में प्रावधान, नई शिक्षा नीति में ओबीसी के लिए प्रावधान, गरीब व पिंजड़ों के लिए स्वास्थ्य सेवा व सुविधा, आयुष्मान भारत में ओबीसी उद्यमियों के लिए बजट का प्रावधान, स्नातक व स्नातक चिकित्सा शिक्षा पाठ्यक्रम में अखिल भारतीय कोटा से ओबीसी के लिए 27 प्रतिशत व आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों के लिए अलग से 10 प्रतिशत आरक्षण, ओबीसी विश्वकर्मा योजना के तहत 140 जातियों के शिल्पकार, हस्तकला व सोनार के लिए ट्रेनिंग, फंडिंग व मार्केटिंग सहित अन्य जन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ ओबीसी को दिया जा रहा है।

गुप्ता भूज सोशल वेलफेयर फाउंडेशन उ.प्र. की समीक्षा बैठक में लिए गए कई निर्णय

संवाददाता, धम्मौर-सुल्तानपुर। रविवार को गुप्ता काम्प्लेक्स में गुप्ता भूज सोशल वेलफेयर फाउंडेशन की सामीक्षा बैठक संम्पन्न हुई।बैठक में संगठन द्वारा समाज में किये गए कल्याणकारी कार्यों का मूल्यांकन किया गया तथा कमियों एवं अच्छाइयों पर पदाधिकारियों ने विचार व्यक्त किया। आगामी अगस्त माह में होने वाले वार्षिक समारोह में अमेठी,सुल्तानपुर,प्रतापगढ़, अयोध्या,रायबरेली,जौनपुर जनपदों के समाज के लगभग 5 सौ प्रतिभाशाली बच्चों को गत वर्ष की भांति सम्मानित करने का लक्ष्य तय किया गया।बैठक में प्रदेश संरक्षक सेवानिवृत्त डीआईजी स्टाम्प,संरक्षक- प्रबंधक सत्य नारायण गुप्त,अध्यक्ष राम प्रकाश गुप्ता,विजय गुप्ता सुल्तानपुर जिला अध्यक्ष,ओम प्रकाश गुप्ता अमेठी जिला अध्यक्ष,राजेश गुप्ता प्रदेश संगठन मंत्री,शिव कुमार गुप्ता,संतोष गुप्ता,प्रेम प्रदीप गुप्ता,डॉक्टर हरिकेश गुप्ता,ओम प्रकाश गुप्ता,डॉक्टर अच्छे लाल गुप्ता पदाधिकारियों और दर्जनों सदस्य गण उपस्थित रहे।

माय लाइफस्टाइल मार्केटिंग ग्लोबल प्राइवेट लिमिटेड कंपनी द्वारा संगोष्ठी कार्यक्रम का किया गया आयोजन

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

सुल्तानपुर। आयुष मंत्रालय से प्रीमियम सर्टिफाइड सभी स्वास्थ्य के उत्पादों को जन जन तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभा रहे माय लाइफस्टाइल मार्केटिंग ग्लोबल प्राइवेट लिमिटेड की एक संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह सुल्तानपुर शहर के एक प्रतिष्ठित होटल में संपन्न हुई। समारोह में आए हुए कर्मठ कार्यकर्ताओं को सम्मानित कर उनका उत्साहवर्धन किया गया। रविवार को शहर स्थित एक होटल में स्वास्थ्य के प्रति लोगों को सजग करने और उससे जुड़े उत्पादों को लेकर हुई बैठक में दूरदराज से आए लोग लाभान्वित हुए। पुरस्कृत कार्यकर्ताओं में नवीन श्रीवास्तव ने बताया की माय लाइफस्टाइल मार्केटिंग ग्लोबल प्राइवेट लिमिटेड आज जन जन तक पहुंचकर लोगों को जागरूक कर रही है साथ ही प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत लोगों को इसमें रोजगार भी दिया जा रहा है। बताया कि इसमें खाद से लेकर उत्पादन तक ऑर्गेनिक खेती के उत्पाद भी किसानों को दिए जा रहे हैं मुख्य अतिथि के रूप में डायमंड संतोष सिंह ने बताया कि इस कंपनी में काम करके हम जन जन के साथ सरकार को भी देश और प्रदेश के विकास के लिए टैक्स के रूप में धनराशि प्रदान करके अपना योगदान दे रहे हैं डायमंड राजन सिंह ने भी आए हुए लोगों को काम के प्रति जागरूक रहने को कहा। इस मौके पर दीपक सोनावोले, मुकेश गौड़, राजेंद्र प्रसाद, राजेश गौतम, राजेश गौड़, राजकुमारी, सुभाष चंद्र श्रीवास्तव के साथ बड़ी संख्या में लोगों को सम्मानित किया गया संगोष्ठी में करीब 200 से अधिक कार्यकर्ता मौजूद रहे।

तपती धरती झुलसाता आसमान, रोक ना सका गोमती मित्रों का श्रमदान

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

सुलतानपुर। तन को झुलसा देने वाली इस गर्मी में भी यदि गोमती मित्रों ने अपना श्रमदान जारी रखा है तो इसे केवल संकल्प की पराकाष्ठा कहा जा सकता है,जिस धूप में किसी के लिए भी 5 मिनट खड़ा होना दुश्वार है उसी तपती धूप में गोमती मित्रों ने 9रू30 बजे तक लगातार श्रमदान करके पूरे तट परिसर और सीता उपवन को साफसुथरा कर दिया,यहां तक की नदी की लहरों में प्रवाहित हुई ऐसी सामग्री जो श्रद्धालुओं के लिए कष्टप्रद हो सकती हैं उन्हें भी लहरों से निकाल कर बाहर किया गया, प्रदेश अध्यक्ष रुद्र प्रताप सिंह मदन बड़े ही गर्व के साथ कहते हैं की गोमती मित्रों ने कभी रुकना और थकना सीखा ही नहीं है यही वजह है जो 12 वर्षों से निरंतर यह यात्रा गतिमान है, श्रमदान में मुख्य रूप से उपस्थित रहे प्रदेश अध्यक्ष मदन सिंह, मीडिया प्रभारी रमेश माहेश्वरी,संत कुमार प्रधान,राकेश मिश्रा,मुन्ना सोनी,आलोक तिवारी,ओमप्रकाश कसौधन,सुनील कसौधन,विशंभर सोनी,डॉ कुंवर दिनकर प्रताप सिंह,अजय प्रताप सिंह,सुजीत कसौधन, आदि।

प्रभात साहू ने सदैव ईद और होली में नमाजियों व होलिहारो का स्वागत किया

राजेश मिश्रा/संवाददाता

महराजगंज, रायबरेली। क्षेत्र में लगभग हर जगह ईद की नमाज शांति पूर्ण ढंग से सम्पन्न हुई। हर जगह पुलिस की चाक चौबंद व्यवस्था थी। कहीं किसी भी प्रकार की कोई अव्यवस्था नहीं हुई। सबसे ज्यादा महराजगंज कस्बे का ईदगाह लोगों के लिये आकर्षण का केंद्र रहा। जहां ईद पर नमाजियों के स्वागत में राजनीति का ऐसा रंग चढ़ा की नगर पंचायत चुनाव के अध्यक्ष पद के सभी दावेदारों ने उनकी अगवानी में नाना प्रकार के पकवानों के स्टाल लगा रक्खे थे।इससे पहले भी ईद के दिन ईदगाह में नमाजियों के स्वागत में नगर पंचायत अध्यक्ष प्रभात साहू द्वारा उनका मुंह मीठा करा कर गले मिला जाता रहा है। यही नही होली में भी प्रभात के द्वारा हिंदू भाइयों का स्वागत मुंह मीठा करा कर किया जाता रहा है। किंतु इस बार तो इस ओट की राजनीति ने ऐसा गुल खिलाया की जो कभी किसी से बिना स्वार्थ के सलाम तक नही करते थे वे ईदगाह में नमाजियों के स्वागत में पलक पावड़े बिछाए बैठे थे। ईदगाह में दो ही चीजें सबके आकर्षण का केंद्र बनी हुई थी। पहली बच्चो की रंग बिरंगी पोसाके तो दूसरी नमाजियों के स्वागत में लगी हर पार्टी की कतारे। इसे सामाजिक प्रेम कहे या राजनीतिक स्वार्थ। इसको शायद ही कोई परिभाषित कर सके।

मा0 प्रेक्षकगण द्वारा विधानसभा छानबे अन्तर्गत भ्रमण कर मतदान केन्द्रो व जनपद के ओं पर की गयी तैयारियों का किया गया निरीक्षण

जिगना थाना में भी पहुंचकर निर्वाचन कार्यालयो की गयी समीक्षा

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

मीरजापुर । 395-छानबे (अ0जा0) विधानसभा उप निर्वाचन-2023 को सकुशल सम्पन्न कराने के दृष्टिगत जनपद में नियुक्त मा0 सामान्य प्रेक्षक श्री देवेन कुमार प्रधान, पुलिस प्रेक्षक श्री आर0वी0 चूड़ासामा एवं व्यय प्रेक्षक श्री वेंकटेश जाधव ने शुक्रवार की सांय छानबे विधानसभा क्षेत्र के लालगंज में बनाये गये चेक पोस्ट का निरीक्षण किया। तत्पश्चात थाना जिगना में पहुंचकर निर्वाचन को शान्तिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने के दृष्टिगत की गयी तैयारियें की समीक्षा भी की गयी। तत्पश्चात आज विधानसभा क्षेत्र में भ्रमणकर राज्य स्तरीय सीमा हनुमना में मीरजापुर व रीवा मध्य प्रदेश की सीमा पर बनाये गये चेक पोस्ट का निरीक्षण एस0एस0टीम से व्यवस्थाओं के बारे में जानकारी किया। तत्पश्चात मीरजापुर व रीवा बार्डर पर लगे कई बूथो का निरीक्षण

भी किया गया। उन्होने निरीक्षण के दौरान उपस्थित सम्बन्धित अधिकारियों कर्मचारियों से मतदान तैयारियों के बारे में जानकारी प्राप्त करते हुये निष्पक्ष, पारदर्शी व शान्तिपूर्ण ढंग से निर्वाचन सम्पन्न कराने के लिये आवश्यक दिशा निर्देश भी दिया गया।

के क्रिएशन पूरनपुर शॉप का प्रज्ञा मिश्रा ने किया उद्घाटन बांटे उपहार

संवाददाता, पूरनपुर,पीलीभीत। पूरनपुर आसाम हाइवे मजार के पास खुला एक मात्र के क्रिएशन पूरनपुर नाम की शॉप का उद्घाटन लखनऊ से आयी तेजतर्रार रिपोर्टर प्रज्ञा मिश्रा व भरत यादव ने उद्घाटन किया।इस दौरान खाने पीने की व्यवस्था भी रखी गई।शॉप संचालक अमन खालसा ने सभी को उपहार वितरण किए।उद्घाटन के दौरान संचालक अमन खालसा ने बताया उनकी शॉप पर ट्रैक्टर के छाते,बंपर,कार सीट के कवर,स्टीरियो एंड्राइड प्लेयर बॉडी कवर,स्पीकर,वूफ़र,एलॉय व्हील,हार्न,लाइट,हैड लाइट, उपलब्ध है जो मुनासिब दामों पर मिलेगी। नेकी के दीवाल के अध्यक्ष गुरमेल ने कहा की पूरनपुर में बहुत कम देखने को मिलता है कि जब एक ही छत के नीचे इस तरह के कई आइटम मिलते हो। उन्होने कहा तरह की दुकान खुलने से आसपास के क्षेत्र के लोगों को सुविधा मिलेगी।इस मौके पर सभी ने शॉप खुलने पर खुशी जाहिर की।शॉप के उद्घाटन पर दुकान अमन खलसा ने सभी का आभार जता कर उपहार भी वितरण किये।इ स मौके पर अमन खालसा, गुरमेल सिंह,सोनू,संजय,रामनरेश शर्मा,कपिल,मीनू बरकाती, नदीम,आदि लोग मौजूद रहे।

आम आदमी पार्टी के प्रत्याशी के रूप में सुनील कुमार पांडेय ने किया नामांकन

जगह-जगह विभिन्न चौराहों पर क्षेत्रवासियों ने माल्यार्पण कर किया भव्य स्वागत

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

मीरजापुर । मिर्जापुर जनपद के नगर पालिका परिषद अध्यक्ष पद के लिए आम आदमी पार्टी द्वारा अधिकृत प्रत्याशी के रूप में सुनील कुमार पांडेय ने अपना नामांकन पत्र दो सेट में दाखिल किया। नामांकन जुलूस घंटाघर मैदान से होकर पैदल मार्च करते हुए समस्त क्षेत्रों में भ्रमण कर कचहरी पहुंची जहां पर एसडीएम सदर के न्यायालय में अध्यक्ष पद के सबसे प्रबल और दावेदार प्रत्याशी सुनील कुमार पांडेय ने अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। नामांकन जुलूस में सैकड़ों की संख्या में भारी भीड़ जो मतदाता थे, वह शामिल रहे। गौरतलब है कि नामांकन भीड़ में कोई भी व्यक्ति नगर पालिका परिषद क्षेत्र से बाहर का नहीं था, और सभी मतदाता थे, जिन्होंने अपने अध्यक्ष के रूप में सुनील कुमार पांडेय को पसंद किया है । मतदाताओं का मानना है कि भले ही आम आदमी पार्टी सुनील पांडेय को सिंबल देकर लड़ा रही है, परंतु हम सब सुनील पांडेय को व्यक्तिगत रूप से पसंद करते हैं, और मिर्जापुर की जनता सुनील कुमार पांडेय को चुनाव लड़ा रही है। नामांकन जुलूस में आम आदमी पार्टी के जिला अध्यक्ष शेषधर दुबे, आम आदमी पार्टी के कद्दावर नेता लक्ष्मी नारायण कुशवाहा, आम आदमी पार्टी के नगर के नेता संजय कुमार गुप्ता सहित कई पदाधिकारी भी मौजूद रहे । सुनील कुमार पांडेय ने आज अपने नामांकन के बल पर यह साबित कर दिया कि मिर्जापुर की जनता अपने नगर पालिका अध्यक्ष के रूप में सिर्फउन्हीं को देखना चाहती है। नामांकन पत्र दाखिल करने के बाद अपने संबोधन के दौरान सुनील कुमार पांडेय ने कहा कि मिर्जापुर के नगर पालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार को समाप्त करने, अवैध वसूली व सड़कों की दुर्दशा, जलकल कर, गृह कर आदि टैक्सों में जनता के साथ हुए भारी धांधली व उनके साथ हुए अन्याय को समाप्त करके दिल्ली मॉडल पर जो भी व्यवस्थाएं होंगी, जैसे गृह कर, जलकर आदि में

छूट व न्यूनतम दर हमारे एजेंडे में शामिल रहेगा। नामांकन जुलूस में अंतर्राष्ट्रीय न्यायिक मानवाधिकार संरक्षण , मिर्जापुर सेवा समिति, अखिल भारतीय ब्राह्मण कल्याण संस्थान व विभिन्न संस्थाओं के लोग भी स्वत: विभिन्न स्थानों से एकजुट होकर के नामांकन जुलूस में शामिल हुए।

भगवान विष्णु के छठें अवतार परशुराम जन्मोत्सव पर निकाली भव्य शोभायात्रा

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

शाहजहाँपुर। भगवान परशुराम वंशजों ने शंख और घंटे बजाकर परशुराम के जयकारे लगाते हुये भगवान विष्णु के छठें अवतार परशुराम जन्मोत्सव पर भगवान परशुराम वंशज समाज की ओर छोटा चौक स्थित उदासीन अखाड़ा बड़ी संगत से बाबा विश्वनाथ मंदिर तक शोभायात्रा निकाली गई। शोभा यात्रा का आरंभ पूर्व एमएलसी संजय कुमार मिश्र, प्रदीप पांडेय, पुनीत त्रिवेदी, जितेंद्र नाथ तिवारी आदि ने देव स्वरूपों का पूजन और आरती कर किया। शोभायात्रा में भगवान परशुराम, शिव परिवार, परशुराम के पिता जमदग्नि और माता रेणुका की झाकियां शामिल की गईं। इससे पहले सभी श्रृद्धालुओं का स्वागत चंदन त्रिपुंड तिलक लगाकर और पटका पहनाकर किया गया। जगह-जगह पुष्प वर्षो करके झांकियों का स्वागत किया गया। शोभा यात्रा उदासीन अखाड़ा, बड़ी संगत चौक से प्रारंभ

होकर कोतवाली, मंडी, कच्चा कटरा, मालखाना मोड़, घंटाघर, बहादुरगंज, सदर बाजार होते हुए बाबा विश्वनाथ मंदिर में आरती के साथ विसर्जित हुई। परशुराम जयंतीपर तमाम श्रद्धालुओं ने भाग लिया। शोभायात्रा में प्रमुख रूप से डॉ सत्य प्रकाश मिश्र, राजेश अवस्थी, अभिषेक पांडेय, सर्वेश मिश्रा धांधू, हरिशरण बाजपेई, पंकज मिश्रा, संजीव मिश्रा, सर्वेश मिश्रा, राम मोहन मिश्रा, हरिहर त्रिवेदी, विश्वनाथ त्रिवेदी, राजेश पांडेय, शिवदत्त दीक्षित, अतुल दीक्षित, संजय बाजपेयी, विजय, देव मोहन मिश्रा, दीपक मिश्रा, राकेश पांडेय, सुबोध मिश्रा समेत बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल रहे।

ईद की नमाज अदा कर मांगी गई मुल्क में अमन-चौन की दुआ

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

उन्नाव । ईद का त्योहार शनिवार को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस दौरान मुस्लिम समुदाय के लोगों ने शहर की ईदगाह में सुबह साढे सात बजे शहर काजी मौलाना निसार अहमद मिस्बाही की पेश इमामत में अदा कर देश में अमन चौन की दुआ मांगी। बच्चो के अंदर पर्व को मनाने का मौका मिला तो उनकी खुशियां देखते ही बन रही थी। लोग नमाज अदा कर एक-दूसरे से गले मिले और गले मिलकर ईद की मुबारकबाद दी। उसके बाद मिलने-मिलाने का दौर जो शुरू हुआ वह काफी रात तक जारी रहा। शहर की तमाम मस्जिदों मे भी अपने निर्धारित समय पर ईद की नमाज अदा की गई त्योहार के दृष्टिगत रखते हुए ईदगाहों और मस्जिदों के बाहर पुलिस कर्मियों की तैनाती की गई थी।

लोगों मे दिखा काफी उत्साह

नगर में ईद-उल-फितर पर्व को लेकर सुबह से ही सड़कों पर रौनक

शुरू हो गई थी। लोग नहाने के बाद नए कपड़े पहनकर इत्र लगाकर अपने परिवार के सदस्यों के साथ ईदगाहों और मस्जिदों की जानिब कूच कर गए। नगर की ईदगाह और सभी मस्जिदों में नमाजी खचाखच भरे रहे। लोगों ने ईद-उल-फित्तर की नमाज अदा की। उसके बाद बारगाहे इलाही में दोनों हाथों को फैलाकर मुल्क में अमन-चौन कायम रखने के लिए दुआ मांगी गई। लोग एक-दूसरे से गले मिले और उनको ईद-उल-फित्तर की मुबारकबाद दी।

लोगों ने गले मिलकर सेवइंयों का लुत्फउठाया

परंपरानुसार ईद-उल-फित्तर का पर्व शश्व्वालश् की पहली तारीख को मनाया जाता है। जो कि रमजान के महीने के खत्म होने पर शुरू होता है। ईद के दिन लोग अपने घरों को सजाये व नए कपड़े पहने। पूरे एक महीने के कठिन रोजे के बाद ईद का त्योहार आता है। ऐसे में ईद के दिन लोगों के घरों में सेंवई बनती है। इसलिए इस पर्व को श्मीठी ईदश् भी कहा जाता है। लोगों ने एक-दूसरे के घरों में पहुंचकर मीठी-मीठी सेवईयों का लुत्फउठाया।

प्रशासन मुस्तैद दिखा

ईद-उल-फि तर को मद्देनजर रखते हुए पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ शंकर मीणा द्वारा जनपद के समस्त क्षेत्राधिकारी, थाना प्रभारियों को अपने-अपने क्षेत्र में लगातार भ्रमणशील रहने के लिए निर्देशित किया गया। सभी क्षेत्राधिकारी के नेतृत्व में प्रत्येक थाना क्षेत्रान्तर्गत पड़ने वाले मस्जिदों के बाहर सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस बल की तैनाती रही।

निकाय चुनाव को लेकर हुआ प्रशिक्षण,केडीसी में प्रशिक्षित किए गए पीठासीन व मतदान अधिकारी प्रथम

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

बहराइच। जिले में नगरीय निकाय चुनाव को सकुशल सम्पन्न कराने हेतु नियुक्त किये गये पीठासीन अधिकारी एवं मतदान अधिकारी प्रथम के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमआयोजित हुआ। प्रशिक्षण कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए जिलाधिकारी डॉ. दिनेश चन्द्र ने कहा कि मतदान के संचालन में पीठासीन अधिकारी की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उन्हें अपने मतदान स्थल पर की जाने वाली कार्यवाही को नियंत्रित करने के लिए सम्पूर्ण विधिक शक्तियां प्राप्त हैं। स्वतन्त्र तथा निष्पक्ष मतदान सुनिश्चित कराना उनका सबसे प्रमुख कर्तव्य तथा उत्तरदायित्व है। डीएम ने कहा कि पीठासीन अधिकारी के साथ-साथ मतदान अधिकारी प्रथम का भी दायित्व कम महत्वपूर्ण नहीं है। मतदाता की पहचान करने एवं चिन्हित मतदाता सूची का प्रभार इन्हीं के पास होगा। मतदाता जैसे ही मतदान कक्ष में प्रवेश करेगा वह सर्वप्रथम मतदान अधिकारी प्रथम के पास जायेगा। मतदान अधिकारी प्रथम मतदाता की पर्ची को देखकर निर्वाचक नामावली में नाम देखेगा तथा मतदाता का नाम व क्रम संख्या जोर से बोलेगा। जिससे मतदान अधिकारी द्वितीय तथा मतदान अभिकर्ता नाम सुन लें। डीएम ने पीठासीन अधिकारियों एवं मतदान अधिकारी प्रथम को निर्देश दिया कि बेहतर तालमेल के साथ मतदान प्रक्रिया को त्रुटि रहित तरीके से सम्पन्न कराएंगे। डीएम डॉ. चन्द्र ने पीठासीन अधिकारियों एवं मतदान अधिकारी प्रथम को सुझाव दिया कि अलग-अलग पद के लिए अलग-अलग रंग के मतपत्रों के प्रयोग को दृष्टिगत रखते हुए पूरी सावधानी के साथ कार्य करेंगे। डीएम ने बताया कि नगर पालिका परिषद व नगर पंचायत के सदस्य पद हेतु गुलाबी रंग, नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष पद हेतु सफेद रंग के मतपत्र का प्रयोग होगा। रिजर्व सहित 475-475 पीठासीन अधिकारियों एवं मतदान अधिकारी प्रथम के लिए 11 कक्षों में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम का डीएम ने जायजा लिया। प्रत्येक कक्ष में जाकर ग्रीन बोर्ड पर कार्मिकों को पढ़ाया और समझाया तथा उनसे सवाल भी पूछे।

तिलहर में दोहरे हत्याकांड की आरोपी महिला गिरफ्तार

संवाददाता, शाहजहांपुर । तिलहर के गांव मरक्का में बीती 19 अप्रैल को दोहरे हत्याकांड की घटना का पुलिस ने खुलासा कर दिया है। दोहरे हत्याकांड की सूचना मिलते ही कोतवाली प्रभारी राजकुमार शर्मा भारी पुलिस बल के साथ मरक्का गांव में मृतक श्याम पाल के घर पर जा पहुंचे थे। मौके पर पहुंचकर पुलिस को जानकारी हुई कि श्याम पाल और भागमती को उनके ही सगे रिश्तेदारों ने गोली मारकर मौत के घाट उतारा है। घटना के बाद मृतक भागमती के दमाद रंजीत ने मृतक श्याम पाल के पुत्र मोहित और श्याम पाल की पत्नी सदावती के खिलाफ गोली मारकर हत्या करने का मुकदमा दर्ज कराया। कोतवाली प्रभारी राजकुमार शर्मा ने पुलिस टीमों को जांच पड़ताल में लगाया। टीम ने जाल बिछाकर हत्यारोपी मोहित को गांव के निकट से गिरफ्तार कर लिया। साथ ही तमंचा भी बरामद कर लिया जिससे गोली मारकर हत्या की गई थी। पुलिस ने मोहित को जेल भेज दिया तो वहीं उसकी मां सदावती की पुलिस टीमें लगातार तलाश कर रही थी। रविवार को कोतवाली प्रभारी राजकुमार शर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि हत्यारोपी पत्नी सदावती को नगर की रेलवे क्रॉसिंग के पास से गिरफ्तार कर लिया गया है।

युवक को खा गया बाघ,बाइक से रिश्तेदारी में जा रहा था, 10 दिन में छठवीं घटना

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

बहराइच। जिले में बाघ एक युवक को खा गया। युवक अपनी बाइक से किसी रिश्तेदार के यहां जा रहा था। वो बहराइच-लखीमपुर सीमा के पास था। तभी अचानक उसके ऊपर बाघ ने हमला कर दिया। युवक बाइक से गिर गया। जिसके बाद बाघ युवक को घसीटता हुआ जंगल में ले गया। बाघ को युवक को घसीटता देख सड़क किनारे काम कर रहे कुछ लोग जंगल की ओर दौड़े लेकिन तब तक बाघ युवक को खा चुका था। युवक की मौत हो चुकी थी। युवक का शव खराब हालत में गांव वालों को मिला है। उसकी गर्दन का हिस्सा गायब था। ये घटना रविवार सुबह 9 बजे की है। युवक लखीमपुर के अमीरखां पुरवा गांव का रहने वाला है। उसकी उम्र 20 साल है। उसका नाम आकाश है। आकाश रविवार की सुबह 8 बजे घर से बाइक से निकला था। घटना की सूचना पर 2 अलग-अलग रेंजों पर तैनात वन विभाग की टीम पहुंच गई है। तराई इलाके में बाघ के हमले से हो रही लगातार मौतों से इलाके में हड़कंप मच गया। तिकुनियां कोतवाल राजू राव सहित वन विभाग की टीम दल बल के साथ घटना स्थल पर पहुंचे। शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए जिला मुख्यालय भेज दिया। घटना बहराइच कतर्नियाघाट रेंज और लखीमपुर के बेलरायां रेंज के पास पर घटी है। रेंजर कतर्नियाघाट रामकुमार ने बताया कि बेलरायां और कतर्नियाघाट की टीम घटनास्थल पर पहुंच रही है। वहीं इस घटना को मिलाकर 10 दिनों के अंदर मंझरा के आसपास घटने वाली बाघ के हमले की 6 के करीब घटनाएं हो चुकी हैं। 19 अप्रैल को भी इसी इलाके में बाघ के हमले से नया पिंड खैरटिया निवासी हरमेश सिंह उम्र 40 की मौत हो गई थी। बाघ के हमले की लगातार घटनाओं से इलाके में दहशत बनी हुई है। वहीं दूसरी तरफ इलाके में वन विभाग की कार्य प्रणाली को लेकर आक्रोश भी व्याप्त है।

मैनेजर की हत्या, कन्हैया हौजरी का मालिक फरार

संवाददाता, शाहजहांपुर। पुलिस ने ट्रांसपोर्ट मैनेजर की पीट-पीटकर हत्या करने में शामिल फरार आरोपी नीरज गुप्ता को गिरफ्तार कर लिया है। घटना के 11 दिन बाद पुलिस को सफलता मिली है। पुलिस ने आरोपी से पूछताछ शुरू कर दी है। घटना में शामिल पांच आरोपियों को पुलिस पहले ही गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है। मृतक के पिता लगातार आरोपी की गिरफ्तारी की मांग कर रहे थे। तमाम चर्चाएं होने लगी कि रसूखदार और ऊंची पहुंच वाले आरोपी की पहुंच सत्ताधारी ऊंचे नेताओं तक है। यही कारण है कि पुलिस आरोपी को गिरफ्तार करने से बच रही है। चौक कोतवाली क्षेत्र के मोहल्ला अजीजगंज निवासी ट्रांसपोर्ट मैनेजर शिवम जौहरी की कन्हैया हौजरी की चौथी मंजिल पर चोरी के शक में लोहे के पाइप से बांधकर पीट-पीटकर हत्या कर दी गई थी। घटना के समय कन्हैया हौजरी के मालिक नीरज गुप्ता और ट्रांसपोर्ट मालिक बंकिम सूरी भी मौके पर थे। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर ट्रांसपोर्ट मालिक समेत पांच आरोपियों को पहले ही गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। लेकिन मुख्य आरोपी ऊंची पहुंच के कारण शहर से बाहर निकल गया। पुलिस उसको गिरफ्तार नहीं कर रही थी। रविवार सुबह थाना सदर बाजार पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर सीतापुर रोड पर धान मिल के पास से फरार आरोपी कन्हैया हौजरी के मालिक नीरज गुप्ता को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस आरोपी को थाने लेकर आई है। जहां उससे पूछताछ की जा रही है। पूछताछ के बाद आरोपी को जेल भेजा जाएगा। कन्हैया हौजरी का मालिक इस पूरे मामले में मुख्य आरोपी है। ट्रांसपोर्ट मैनेजर की पीट-पीटकर हत्या उसी के गोदाम में की गई थी। पुलिस ने ट्रांसपोर्ट मैनेजर समेत पांच आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल पहले ही भेज दिया था। लेकिन ऊंची पहुंच रखने के कारण पुलिस आरोपी नीरज गुप्ता को गिरफ्तार करने से बचती रही। 11 दिन में आरोपी नीरज गुप्ता लखनऊ से लेकर तमाम नेताओं की शरण में गया था। कोर्ट में अर्जी भी लगाई और उसके बाद गिरफ्तारी से बचने के लिए आरोपी नीरज गुप्ता गुरुग्राम के एक अस्पताल में बीमारी का बहाना बनाकर भर्ती हो गया था। उसके बाद आरोपी का अस्पताल में भर्ती होने के समय का एक फोटो भी वायरल हुआ था। जिसके बाद से आरोपी की गिरफ्तारी न होने पर पुलिस की कार्रवाई पर सवाल खड़े हो रहे थे।

संक्षिप्त समाचार

पौध रोपित कर मनाया पृथ्वी दिवस

संवाददाता, शाहजहाँपुर। क्लीन एंड ग्रीन फोरम के तत्वावधान में स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय के शिक्षकों द्वारा पौध रोपित कर पृथ्वी दिवस मनाया गया। फोरम के महासचिव डॉ. दुर्गविजय ने पृथ्वी दिवस के इतिहास केबारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि आधुनिक जीवन एवं इलेक्ट्रिक गैजेट की चकाचौंध में प्रकृति को नजरअंदाज कर हम आने वाली पीढ़ी के लिए हवा में जहर घोल रहे हैं। डॉ संदीप दीक्षित ने कहा किपृथ्वी दिवस पर ग्लोबल वार्मिंग,प्रदूषण आदि विषयों पर चर्चाएं की जाती हैं, लेकिन इस पर काम नहीं किया जाता। इस अवसर पर डॉ अनिल कुमार आदि ने भी विचार व्यक्त किए। डॉ आलोक कुमार सिंह ने प्रकृति संरक्षण की शपथ दिलाई। इस अवसर पर डॉ अमित कुमार, सुधाकर गुप्ता, अनमोल, ऋषभ, उदित तिवारी, सत्यपाल, राहुल तिवारी आदि एनसीसी कैडेट्स मौजूद रहे।

पत्रकार प्रेस एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष बने बृजेश पाठक

संवाददाता, बहराइच। पत्रकार प्रेस एसोसिएशन देवीपाटन मण्डल अध्यक्ष के.के.मिश्रा ने राष्ट्रीय अध्यक्ष,प्रदेश अध्यक्ष की संस्तुति पर बहराइच और बलरामपुर में संगठन को मजबूत बनाने के लिए जिलाध्यक्षों की घोषणा की है। बहराइच के असवा मोहम्मदपुर निवासी बृजेश पाठक को पत्रकार प्रेस एसोसिएशन बहराइच तथा अमित कुमार निवासी लुचुईया,महादेव मिश्र को बलरामपुर का जिलाध्यक्ष नियुक्त किया है। पत्रकार प्रेस एसोसिएशन को गतिशील एवं संगठन को मजबूत बनाने के लिए शीघ्र ही ईकाई गठित कर सूची केन्द्रीय कार्यालय तथा प्रदेश कार्यालय को उपलब्ध कराने का निर्देश दिया है। इनके मनोनयन पर पुत्ती लाल यादव,प्रदीप जायसवाल,सुनील गुप्ता,शबीहुल हसनैन शानू,विनय कुमार शुक्ला,विजय बाजपेई,आमिर अली,उमेश कुमार, इस्माइल अंसारी,आशीष शर्मा,इम्तियाज अहमद,संजय श्रीवास्तव ने खुशी व्यक्त किया है।

आवारा पशु बने राहगीरों के लिए मुसीबत

संवाददाता, पूरनपुर। आवारा पशु रास्ते पर आने जाने वालों उसके लिए मुसीबत का सबब है वही किसान भी इनसे परेशान है लेकिन मानवता भी जीवित है गंभीर रूप से घायल प्रतिबंधित पशु का पैर टूट गया जिस पर ग्राम प्रधान पति सुनील ने घटनाक्रम की सूचना पूर्व पुरके मुख्य पशु चिकित्सक को दी जिस पर यहां पर संसाधन ना होने के कारण उन्होंने देर शाम तक बरेली से एंबुलेंस के माध्यम से असहाय घायल प्रतिबंधित पशु को उपचार के लिए भिजवाया इस दौरान गांव के कई लोग मौके पर मौजूद रहे जिन्होंने टीम का सहयोग करते हुए लोगों से अपील की है कि प्रतिबंधित पशुओं को ना छोड़े नहीं डॉ राजीव कुमार मिश्रा ने बताया कि ग्रामीणों की सूचना पर पशु चिकित्सक मौके पर भेजे गए प्राथमिक उपचार दिया गया लेकिन गाय की हालत गंभीर होने के कारण मामले की सूचना जनपद मुख्यालय पर दी गई वहां से आई टीम ने घायल पशु को ग्रामीणों के सहयोग से पशुशाला में बेहतर इलाज के लिए लेकर गए हैं बाकी स्थिति कैसी है इस पर नहीं कहा जा सकता है। इंनसेट। शासन द्वारा प्रतिबंधित पशु को गौशाला में भेजने के फरमान दिए गए हैं लेकिन इस पर क्रियान्वयन नहीं हो पा रहा है कई मवेशी बड़ी तादाद में ऐसे हैं जो खेत खलिहान में लगे तारों से गंभीर रूप से घायल हो गए हैं दिलावरपुर भट्टा के पास एक मवेशी ऐसा ही पड़ा देखा गया कुछ संवेदनशील लोगों ने जरूर कुछ पानी पिला दिया लेकिन उपचार के नाम पर लोग भी बड़े पैमाने पर संवेदन सुनने हैं ग्रामीणों की मांग की आवारा पशुओं के लिए चिन्हित किए गए उनको भेजा जाए प्रधान पुत्र रामनिवास शर्मा ने बताया कि इस पर कार्रवाई होनी चाहिए मैं पहले भी इस संबंध में विभाग को पत्राचार कर चुका हूं

दहेज के खातिर विवाहिता को घर से निकाला

संवाददाता, पूरनपुर। दहेज की मांग ना पूरी होने पर विवाहिता को पति और ससुराल पक्ष के लोगों ने बुरी तरीके से प्रताड़ित किया आरोप है कि मारपीट कर उसे घर से बाहर निकाल दिया गया घटनाक्रम की जानकारी मायके पक्ष के लोगों को लगी तो पहुंचे उनके साथ भी गाली गलौज कर अभद्रता की गई पुलिस ने पति सहित 4 लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। रामपुरा गांव निवासी मोतीराम ने अपनी पुत्री रिंकी की शादी करीब 3 वर्ष पूर्व मॉडल थाना क्षेत्र के गांव दिलावरपुर में की थी आरोप है कि पति राजीव और ससुराल पक्ष के लोग आए दिन कम दहेज मिलने का ताना देकर विवाहिता को प्रताड़ित करते थे और उसके साथ कई बार मारपीट की गई आरोप है कि ससुराल पक्ष के लोगों ने ?100000 सोने की चौन सहित कई चीजों की डिमांड अलग से कर रखी थी यह सब जब नहीं उन्हें मिल सका तो विवाहिता रिंकी को मारपीट कर घर से बाहर निकाल दिया गया जिस पर घटनाक्रम की सूचना स्थानीय पुलिस को दी गई जिस में मुकदमा दर्ज करते हुए पति राजीव पाल सास राम श्री ननंद किरण सोनम रामपाल के खिलाफ पुलिस ने अभियोग दर्ज किया है थाना प्रभारी राजेंद्र कुमार की तहरीर के आधार पर मुकदमा पंजीकृत किया गया है जांच पड़ताल के बाद आरोपियों को हिरासत में लेकर जेल भेजा जाएगा

अनियंत्रित कार ने पिता-पुत्र को मारी टक्कर

संवाददाता, पूरनपुर। हाईवे पर अनियंत्रित गति से आ रही गाड़ी ने बाइक सवार पिता-पुत्र को टक्कर मार दी आनन-फानन में घायलों को उपचार के लिए ले जाया गया उपचार के दौरान ग्रामीण की मौत हो गई मामले की सूचना स्थानीय पुलिस को दी गई जिस पर मुकदमा दर्ज किया गया है। घुंघचाई मॉडल थाना क्षेत्र के गांव सिमरिया निवासी आकाश और उसके पिता मनीष कुमार पूरनपुर खरीदारी करने के लिए बाइक से गए थे जो 7 अप्रैल को घर वापस लौट रहे थे तभी घुंघचाई बाजार मंडी स्थल के पास कब्रिस्तान के पास में अनियंत्रित गति से आ रही कार ने पीछे से जोरदार टक्कर मार दी जिससे पिता पुत्र गंभीर रूप से घायल हो गए आनन-फानन में उन्हें स्थानीय लोगों की मदद से उपचार के लिए सीएससी पूरनपुर भिजवाया हालत गंभीर होने के कारण उन्हें पीलीभीत रेफर कर दिया गया वहां पर सुधार ना होने के कारण बरेली घायलों को भेजा गया जिसमें मनीष कुमार की चार के दौरान मौत हो गई घटनाक्रम की तहरीर पर पुलिस ने मुकदमा पंजीकृत कर लिया है थाना प्रभारी ने बताया कि जांच में पाया गया है कि टक्कर जिससे लगी थी उसका नंबर ट्रेस किया जा रहा हैं जांच पड़ताल के बाद आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

तालाब में मिला किसान का शव,खेत की रखवाली करने निकले थे

संवाददाता, बहराइच। जिले के अली नगर गांव में खेत की रखवाली करने गए किसान का शव तालाब में उतराता मिला। सूचना मिलते ही गांव के लोग पहुंचे। पुलिस को घटना की सूचना दी। पुलिस ने शव को तालाब से बाहर निकलवाया। इसके बाद किसान के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मामले की जांच की जा रही है। जरवलरोड थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत अलीनगर के मजरा बढ़इन पुरवा निवासी चेतराम (52) पुत्र पूसू का खेत मकान से उत्तर पूर्व में स्थित है। शुक्रवार देर शाम को किसान अपने खेत के लिए घर से टॉर्च व लाठी लेकर निकला था। काफी देर तक घर न पहुंचने पर परिजनों ने तलाश शुरू की। लेकिन कुछ पता नहीं चला। शनिवार को ग्रामीणों ने सुबह तालाब में लाश उतराती देखी। जिसकी सूचना ग्राम प्रधान प्रतिनिधि अलीनगर सुनील यादव को दी। ग्राम प्रधान प्रतिनिधि ने सूचना प्रभारी निरीक्षक राजेश सिंह को दी। जिसके बाद एसआई अनिल कुमार टीम के साथ पहुंचे। पुलिस ने तालाब से शव को बाहर निकलवाया। इसके बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस के मुताबिक खेत में ही लाठी, टॉर्च और अन्य सामान मिले हैं। प्रभारी निरीक्षक राजेश कुमार सिंह ने बताया पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद मौत के सही कारणों का पता चल सकेगा। किसान ने दो महीने पहले ही दूसरी शादी की थी। महिला दो बच्चों की मां है।

CMYK

राज्यपाल से बिल्हौर घाटमपुर न्यायिक क्षेत्राधिकार वापसी गजट के शीघ्र क्रियान्वन की मांग

संवाददाता

कानपुर। कानपुर नगर की तहसीलों बिल्हौर एवम घाटमपुर के न्यायिक क्षेत्राधिकार को वापस नगर में जोड़े जाने के गजट के शीघ्र क्रियान्वन की मांग राजभवन पहुंची।

अधिवक्ताओं एक प्रतिनिधि मंडल पं रवीन्द्र शर्मा अध्यक्ष द लायर्स एसोसिएशन संयोजक बिल्हौर घाटमपुर संघर्ष समिति के नेतृत्व में कानपुर नगर की तहसीलों बिल्हौर एवम घाटमपुर के न्यायिक क्षेत्राधिकार को वापस कानपुर नगर में जोड़े जाने के गजट 14 जून 2019 के शीघ्र क्रियान्वयन के लिए राजभवन पहुंचा जहां मिले राज्यपाल के विशेष सचिव बद्रीनाथ सिंह को दोनों तहसीलों के वादकारियों और अधिवक्ताओं को गजट का क्रियान्वन न होने से हो रही समस्याओं से अवगत कराते हुए बताया कि गजट के क्रियान्वयन हेतु हमारे प्रतिवेदनो पर महामहिम के निर्देश पर आपने प्रदेश सरकार के न्याय विभाग को पत्र कई भेजें जिस पर न्याय विभाग के उपसचिव अरुण कुमार राय द्वारा फिर उत्तर प्रदेश शासन के विशेष सचिव संजय कुमार वर्मा द्वारा महानिबंधक मां उच्च न्यायालय इलाहाबाद को गजट के शीघ्र क्रियान्वयन हेतु पत्र भेजें गए किंतु अभी तक क्रियान्वन नही हुआ है। प्रतिवेदन प्राप्त करने के उपरांत विशेष सचिव ने कहा कि महामहिम के निर्देश पर पूर्व में भी मैंने पत्र भेजे हैं किंतु गजट का क्रियान्वयन नहीं हुआ। हम प्रयास करेंगे कि गजट का शीघ्र क्रियान्वन हो जाए। अध्यक्ष शर्मा ने कहा कि विशेष सचिव के आश्वासन से हम सब को विश्वास है कि अब गजट का शीघ्र क्रियान्वयन होगा और दोनों तहसीलों की पत्रावलिया वापस कानपुर नगर आ जायेंगी। प्रमुख रूप से सतीश त्रिपाठी शिवम गंगवार अंकुर गोयल शुभम जोशी रहे।

भारतीय जनता पार्टी ग्रामीण मंडल की बैठक हुई

संवाददाता, प्रतापगढ़। भारतीय जनता पार्टी के नवनियुक्त प्रदेशाध्यक्ष सांसद सीपी जोशी के प्रदेश अध्यक्ष बनने के बाद प्रथम बार प्रतापगढ़ नगर आगमन पर अभिनंदन समारोह व प्रदेश अध्यक्ष चंद्रप्रकाश जोशी एवं केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत के नेतृत्व में जनाक्रोश आमसभा, मिनी सचिवालय महा घेराव कार्यक्रम 27 अप्रैल को होना है उसकी तैयारी हेतु भारतीय जनता पार्टी ग्रामीण मंडल की बैठक हुई। भाजपा जिला प्रवक्ता हार्दिक अरुण छोरिया ने बताया कि भाजपा प्रतापगढ़ ग्रामीण मण्डल की बैठक मंडल अध्यक्ष राघवेंद्र सिंह बिलेश्री की अध्यक्षता, जिलाध्यक्ष गोपाल कुमावत के मुख्य आतिथ्य, जिला महामंत्री गजेंद्र चंडालिया, जिला महामंत्री एवं कार्यक्रम जिला सहसंयोजक प्रदीप उपाध्याय के विशिष्ट आतिथ्य में सेमली फंटे पर हुई। जिसमें राष्ट्रीय मंत्री राजस्थान सह प्रभारी विजया रहाटकर की प्रेरणा से रामदेवरा मंदिर पुजारी मांगीलाल एवं हनुमान मंदिर पुजारी कालूलाल का शॉल ओढ़ा, माला पहनाकर अभिनंदन किया गया। बैठक में सभी शक्ति केंद्रों पर बैठक आयोजित करने की जिम्मेदारी सौंपी गई व अधिक से अधिक आम जनता, कार्यकर्ताओं को जन आक्रोश आमसभा एवं महा घेराव कार्यक्रम में लाने की योजना बनाई गई। जिलाध्यक्ष गोपाल कुमावत ने प्रत्येक मंडल पदाधिकारी को सक्रियता से संगठन कार्य में जुड़ने की अपील की। महा घेराव कार्यक्रम के जिला सहसंयोजक जिला महामंत्री प्रदीप उपाध्याय ने सभी शक्ति केंद्र संयोजक से कितनी संख्या पहुंचेगी उसका ब्यौरा लिया। अधिक से अधिक आम जनता एवं कार्यकर्ता पहुंचे इसकी तैयारी में जुटने का आह्वान किया। जिला महामंत्री एवं मन की बात जिला संयोजक गजेंद्र चंडालिया ने 30 अप्रैल को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मन की बात एपिसोड कार्यक्रम को प्रत्येक शक्ति केंद्र पर आयोजित करने हेतु सभी पदाधिकारियों एवं शक्ति केंद्र संयोजक से अपील की।

छिबरामऊ में लोगों को मिल रहा पीने का गंदा पानी

संवाददाता, कन्नौज। छिबरामऊ नगर के मोहल्ला बिरतिया में मस्जिद के पास गली में लोगों के घरों में गंदा पानी आ रहा है। कई बार शिकायत के बाद भी जब सुनवाई नहीं हुई। तब मोहल्ले वालों ने पालिका प्रशासन के खिलाफप्रदर्शन किया। वहीं समस्या का समाधान न होने पर स्थानीय लोगों ने धरने पर बैठने की चेतावनी दी है। मोहल्ला बिरतिया के गली पानी की पाइप में कहीं लीकेज है। जिसकी वजह से उस गली के घरों में पेयजल आपूर्ति होने पर गंदा पानी आ रहा है। मोहल्ले के लोगों ने बताया कि इस समस्या को लेकर कई बार पालिका प्रशासन को अवगत कराया गया। लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। वहीं दूसरी तरफ नियमित सफाई न होने से गली में गंदगी फैली है। जिससे बीमारियों का खतरा बना हुआ है। वहीं लगातार स्थानीय लोगों ने इसकी शिकायत आला अधिकारियों से की। लेकिन अभी तक समस्या का कोई समाधान नहीं हो सका है। जिसके बाद स्थानीय लोगों ने नगरपालिका के अधिकारियों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया है। ईओ सुनील कुमार सिंह ने बताया कि इस तरह की कोई शिकायत नहीं मिली है। यदि ऐसा है, तो कर्मचारी भेजकर समस्या का तत्काल निराकरण कराया जाएगा। नगरपालिका अधिकारी ने कहा कि अगर लोगों को कहीं पर किसी प्रकार की कोई समस्या आती है, तो लोग नगरपालिका अधिकारी से शिकायत कर सकते हैं। जल्द ही समस्या का समाधान करा दिया जाएगा।

निर्वाचन व्यय का लेखा-जोखा किया जाएगा तैयार : नरेंद्र सिंह

संवाददाता, उन्नाव। आगामी नगरीय निकाय सामान्य निर्वाचन के दृष्टिगत निर्वाचन व्यय के संबंध में उप जिला निर्वाचन अधिकारी नरेंद्र सिंह द्वारा जानकारी दी गई है कि प्रत्याशियों द्वारा नाम निर्देशन पत्र दाखिल करने के दिनांक से निर्वाचन की समाप्ति तक प्रतिदिन विभिन्न मदों में जो व्यय किया जाएगा, उसका लेखा-जोखा तैयार किया जाएगा।चुनाव से संबंधित व्यय किए जाने हेतु प्रत्याशी द्वारा एक अलग से खाता खोला जाएगा। उक्त खाता की सूचना रिटर्निंग आफिसर एवं जनपद स्तरीय कमेटी को दी जाएगी। निर्वाचन में व्यय की गई धनराशि के भुगतान की कार्यवाही उक्त खाता से प्रत्याशियों द्वारा की जाएगी। सभी प्रत्याशियों द्वारा चुनाव प्रचार हेतु व्यय की गई धनराशि के प्रतिदिन का निर्वाचन व्यय लेखा रजिस्टर में दर्ज किया जाएगा। यदि किसी उम्मीदवार द्वारा अधिकतम व्यय सीमा का उल्लंघन किया जाता है तो उसकी सूचना जिला स्तरीय कमेटी आयोग को प्रेषित करेगी।सभी प्रत्याशियों द्वारा निर्वाचन व्यय लेखा की सूचना जनपद स्तर पर गठित कमेटी को प्रत्येक सप्ताह प्रस्तुत की जायेगी।निर्वाचन समाप्त होने के उपरान्त सभी प्रत्याशियों द्वारा तीन माह के भीतर निर्वाचन से सम्बन्धित व्यय लेखा रजिस्टर बाउचर सहित जिला निर्वाचन कार्यालय में उपलब्ध कराया जाएगा। उन्होंने सभी रिटर्निंग ऑफिसर्स को निर्देश दिए हैं कि राज्य निर्वाचन आयोग, यूपी द्वारा निर्वाचन व्यय के संबंध में दिए गए उपर्युक्त निर्देशों का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित कराया जाए।

गुड्डू मुस्लिम के नाम से धमकी भरा पत्र, पत्र में 20 लाख रुपये की रंगदारी की मांग

संवाददाता, प्रयागराज। अतीक अहमद का शूटर बमबाज गुड्डू मुस्लिम अभी भी पुलिस की गिरफ्त से दूर है। गुड्डू मुस्लिम के बारे में किसी को नहीं पता वो इस समय कहां छिपा है। हाल ही में चर्चा थी कि उसकी लोकेशन कर्नाटक देखी गई है। हालांकि अभी तक सिरे से नहीं पता चल पाया है कि गुड्डू मुस्लिम कहां है। सोशल मीडिया पर एक चिट्ठी वायरल हो रही है। दावा किया जा रहा है कि यह चिट्ठी गुड्डू मुस्लिम की ओर से दी गई है।जानकारी के अनुसार यह धमकी भरी चिट्ठी आलमबाग के रहने वाले देवेंद्र तिवारी को मिली है। गुड्डू मुस्लिम के नाम से मिले इस धमकी भरे पत्र में देवेंद्र तिवारी को मारने की बात कही गई है। इसके साथ ही सीएम योगी के लिए अभ्रद भाषा का प्रयोग किया गया है। देवेंद्र तिवारी का कहना है कि रात में उनकी गाड़ी पर किसी ने यह धमकी भरा पत्र लगाया है। पत्र में कहा गया है कि? 20 लाख रुपये लेकर प्रयागराज पहुंचो इसके साथ ही पत्र में एडीजी एसटीएफ और सीएम योगी का भी नाम लिया गया है।

गुड्डू मुस्लिम उमेश पाल की हत्या में शामिल है

बता दें कि बम बनाने में एक्सस्पर्ट गुड्डू मुस्लिम उमेश पाल की हत्या में शामिल है। उमेश पाल की हत्या के बाद से ही गुड्डू मुस्लिम फरार चल रहा है। पुलिस ने उसपर 5 लाख का इनाम भी घोषित किया हुआ है।लेकिन अभी तक पुलिस प्रशासनके शिकंजे से वह दूर है।

निकाय चुनाव के लिए 650 वाहनों की आवश्यकता

संवाददाता, प्रतापगढ़। प्रतापगढ़ निकाय चुनाव को संपन्न कराने के लिए 400 भारी और 250 हल्के वाहनों की आवश्यकता है। एक मई तक अगर वाहनों को जमा नहीं कराया गया तो वाहन मालिकों पर एफआइआर दर्ज कराई जाएगी। रजिस्ट्रेशन भी कैंसिल होगा। 19 निकायों में इस बार चार लाख 57 हजार 814 मतदाता मतदान करेंगे। निकाय चुनावी में लगे प्रेक्षक, रिटर्निंग आफिसर, सेक्टर मजिस्ट्रेट, लाइजन आफिसर सहित अधिकारियों के लिए 650 वाहनों की व्यवस्था के लिए एआरटीओ को जिम्मेदारी दी गई है। परियोजना निदेशक को इसका नोडल बनाया गया है। सहायक क्षेत्रीय प्रबंधक और नगर पालिका के ईओ की भी जवाबदेही तय की गई है। एआरटीओ प्रशासन विनय कुमार सिंह ने बताया कि एक मई तक अधिग्रहीत किए गए वाहन, नहीं भेजे गए तो संबंधित वाहन मालिक के खिलाफएफआइआर दर्ज कराई जाएगी। वाहन का रजिस्ट्रेशन भी कैंसिल हो सकता है।400 भारी और 250 हल्के वाहनों की निकाय चुनाव में है, आवश्यकता तेजी से चल रही हैं। नगरीय निकाय चुनाव को लेकर अभी तक 50 वाहनों को अधिग्रहीत किया जा चुका है। वाहन स्वामी गाड़ी के कागजात एआरटीओ कार्यालय में जमा कर दिए हैं। हालांकि उनको यह बताया जा चुका है कि गाड़ी लेकर किस अधिकारी के पास जाना है। अन्य वाहनों के कागजात जमा किए जाने की कवायद चल रही है। रोजाना कितने वाहनों के कागजात जमा हुए, इसकी जानकारी फोन के जरिए नोडल अधिकारी परियोजना निदेशक डॉ. आरसी शर्मा ले रहे हैं।

किदवई नगर पुलिस मोबाइल चोरों को दबोचा

संवाददाता

कानपुर। पुलिस आयुक्त के दिशा अनुसार चोरी के रोकथाम बदमाशों के खिलाफचलाए जा रहे अभियान के तहत थाना किदवई नगर की पुलिस द्वारा (1) अभियुक्त राजा उर्फ आयुष पुत्र अनिल वाल्मीकि निवासी लैनिया मोहल्ला रंजीत नगर मरियमपुर अस्पताल रेलवे लाइन थाना नजीराबाद उम्र करीब 20 वर्ष (2) अभियुक्त शनि यादव पुत्र जय प्रकाश नि0 मतइया पुरवा थाना काकादेव कानपुर नगर उम्र 24 वर्ष (3) बाल अपचारी तुषार पुत्र जितेंद्र खोटे नि0 लैनिया मोहल्ला रजीत नगर मरियमपुर अस्पताल रेलवे लाइन थाना नजीराबाद उम्र करीब 17 वर्ष जो विगत कई दिनों से सड़क पर चलते राहगीरों से मोबाइल छीन कर भाग जाने की घटना कर रहे थे इस पर पुलिस की टीमे अलग-अलग गठित कर अथक मेहनत व परिश्रम के साथ मुखबिर खास व सीसीटीवी फुटेज की मदद लेते हुये अभियुक्त गणध् बाल अपचारी को बरगदिया तिराहे से गिरफ्तार किया गया है जिनके पास से कुल 04 अदद मोबाइल फोन व लूट से सम्बन्धित मोटरसाइकिल होण्डा साइन रंग काला मोटर साईकिल न0 78 6055 बरामद हुये है जिसमें से एक मोबाइल फोन रियलमी-8 कम्पनी रंग काला मु0अ0सं0 049/2023 धारा 392/411 भादवि0 थाना किदवई नगर कानपुर नगर से सम्बन्धित लूट किया गया मोबाइल बरामद हुआ है। अभियुक्त व बाल अपचारी गण को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही कर मा0 न्यायालय पेश कर सभी को जेल भेजा जा रहा है।

अलीगढ़ से 70 कि0ग्रा0 गांजा लेकर मेरठ सप्लाई करने जा रहा तस्कर गिरफ्तार

संवाददाता

हापुड़। जनपद हापुड़ के थाना गढ़मुक्तेश्वर पुलिस ने अवैध मादक पदार्थ तस्कर गिरोह के एक सदस्य को किया गिरफ्तार। जिसके कब्जे से 70 कि0ग्रा0 गांजा (कीमत लगभग 08 लाख रूपये) व तस्करी में प्रयुक्त गाडी बरामद। वहीं पुलिस लाइन में गढ़मुक्तेश्वर क्षेत्र अधिकारी स्तुति सिंह ने प्रेस वार्ता करते हुए बताया कि थाना गढ़मुक्तेश्वर पुलिस ने दौताई नहर पुल मेरठ रोड से चेकिंग के दौरान अलीगढ से निशान सन्नी गाडी में गांजा लेकर मेरठ जा रहे अमन पुत्र इलियास निवासी मौ0 श्याम नगर थाना लिसाड़ी गेट जनपद मेरठ को गिरफ्तार किया जो शातिर किस्म का मादक पदार्थ तस्कर है,जो पूर्व में भी थाना पिलखुवा व जनपद गौतमबुद्धनगर से जेल जा चुका है और उसके अन्य फरार साथियों के साथ मिलकर मादक पदार्थ की तस्करी कर एनसीआर क्षेत्र में सप्लाई कर आर्थिक लाभ कमाता है वही पूछताछ में आरोपी ने बताया कि मे 2 अन्य साथियों के साथ अलीगढ से निशान सन्नी गाडी में गांजा लेकर मेरठ जा रहा था। मेरे साथी अन्य गाडी से मेरे पीछे-पीछे चल रहे थे। जब आपने मुझे पकड़ा तो पुलिस को देखकर मेरे दोनो साथी थार गाडी से फरार हो गये। जिसके कब्जे से 70 कि0ग्रा0 अवैध गांजा (कीमत लगभग 08 लाख रूपये) 2. तस्करी में प्रयुक्त गाडी निशान सन्नी रजि0 नं0 डीएल 8सी जेड 0877 बरामद हुई।

बसपा से हापुड़ नगर पालिका परिषद चेयरमैन पद की प्रत्याशी पुष्पा देवी ने किया नामांकन

❑ बसपा का बढ़ा कुनबा, अन्य पार्टी छोड़कर आई महिला सहित 30 लोगों ने की बसपा की सदस्यता ग्रहण

संवाददाता

हापुड़। जनपद हापुड़ में निकाय चुनाव को लेकर नामांकन प्रक्रिया चल रही है तथा दूसरे चरण के 11 मई को जनपद में चुनाव होने हैं तो वही बहुजन समाज पार्टी ने हापुड़ नगर पालिका परिषद के चेयरमैन पद पर ठेकदार श्रीपाल सिंह की पत्नी पुष्पा देवी को टिकट दिया है आपको बता दें कि शुक्रवार को हापुड़ के दिल्ली रोड पर स्थित एसएसवी कॉलेज में बहुजन समाज पार्टी से चेयरमैन पद की पप्रत्याशी पुष्पा देवी ने नामांकन से पहले बहुजन समाज पार्टी के तत्वाधान में कैम्प कार्यालय लज्जापुरी में सर्व समाज की मीटिंग का आयोजन किया जिसमे बहन कु0 मायावती द्वारा आर्शीवाद प्राप्त बसपा प्रत्याशी पुष्पा देवी पत्नी श्री पाल सिंह द्वारा चुनाव आचार संहिता का पालन करते हुए प्रस्तावकों के साथ एस. एस. वी कॉलिज दिल्ली रोड हापुड़ पर जाकर हापुड़ नगर पालिका परिषद चेयरमैन पद के लिए नामांकन किया तथा पुष्पा देवी का सभी लोगों ने फूल माला पहनाकर स्वागत किया और नामांकन करने के बाद मेरठ रोड तिराहे पर स्थित बाबा भीमराव अम्बेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया ओर सर्व समाज के लोगो द्वारा चेयरमेन पद की प्रत्याशी को समर्थन दिया। वही दुसरी ओर समाजवादी पार्टी छोड़कर आये जिला पंचायत सदस्य अर्जुन सिंह ने बसपा की सदस्यता ग्रहण की व समाजवाद पार्टी से जिलाध्यक्ष अनुसूचित मोर्चा व जिला योजना समिति के सदस्य अपने साथियों के साथ-साथ राजा राम भारती,मेहराज मीर (सपा) अमित शर्मा, अंकुश मोहित त्यागी बीजेपी और अन्य लोगों बी.एस.पी. मे शामिल हुए। इस मीटिंग की अध्यक्ष के. पी. सिंह विधान सभा अध्यक्ष, संचालक राजकुमार सावार जिला सचिव, मुख्य अतिथि तिलक चौधरी मेरठ मण्डल प्रभारी, और महेश टायर वाले, सतीश कश्यप, डॉ. ए. के कर्दम पूर्व जिलाध्यक्ष डा, वरुण वैद , रियाजुल , संजय बाल्मीकि, बिरोज मालिक प्रदीव अब्बल मलिक, योगेन्द्र शर्मा, नईम, सिद्धकी, मदन ओमराय हीरा लाल अशोक मुर्गे वाले, धर्मेंद्र, कैलाश हल्द्वानी, अब्दुल अनिल कंसल, जगमाल पाल, गजेन्द्र फौजी, राजेन्द्री, कशवीरी वीरवती, राधा गुप्ता, गोविन्द कश्यप, रजनीश, लोकेश अकेला धर्म स्टूडियो के साथ साथ सैकडो अन्य समर्थक उपस्थित रहे।

हापुड़ में वेलनेस सेंटर चला रहे इसरार मलिक चंडीगढ़ में हुए सम्मानित

संवाददाता, हापुड़। जनपद हापुड़ के कोतवाली क्षेत्र में वेलनेस सेंटर चला रहे इसरार मलिक को चंडीगढ़ में किया सम्मानित आपको बता दें कि बबीता फोगाट ने 2010 राष्ट्रमंडल खेलों में रजत पदक और दो साल बाद विश्व कुश्ती चौंपियनशिप में कांस्य पदक जीता था और बबीता फोगाट ने 2014 में राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्णपदक जीता था। बबीता फोगाट एक वर्ल्ड रेसलर चौंपियन है उन्होंने रियो 2016 ओलंपिक खेलों में भी भारत का प्रतिनिधित्व किया और बबीता फोगाट के द्वारा इसरार मलिक को सम्मानित किया गया। उत्तर प्रदेश जनपद बुलंदशहर क्षेत्र बीबीनगर कस्बे से इसरार मलिक जो एक न्यूट्रीशन काउंसलर है और वे थाना हापुड़ देहात क्षेत्र के कवि नगर में एक वेलनेस सेंटर भी चलाते हैं।

कविता, नाटक व गानों से पर्यावरण बचाने का दिया संदेश

प्रधानाचार्य विभा मिश्रा ने बच्चों को अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने को कहा

संवाददाता

प्रयागराज। धरती बचाओ, जीवन बचाओ को लेकर श्री नारायण आश्रम बालिका इंटरमीडिएट कॉलेज में शुक्रवार को पृथ्वी दिवस मनाया गया।पृथ्वी दिवस पर प्रतियोगिताओं में बच्चो ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। प्राइमरी के बच्चों ने कविता, नाटक व गानों के माध्यम से पर्यावरण को बचाने का संदेश दिया। वहीं जूनियर एवं सीनियर वर्ग की छात्राओं ने धरती मां को कैसे बचाएं? शीर्षक पर मॉडल तैयार किए। जिसमें प्रियांशी ओझा, हैप्पी गौतम ,काव्या विश्वकर्मा, सिद्धि यादव, आदित्य गौतम, प्रिंस निषाद, खुशी शुक्ला, रूपल मिश्रा, आदि जयसवाल व रिमझिम के द्वारा बनाए गए मॉडल सर्वश्रेष्ठ मॉडल में चयनित हुए। बच्चो के द्वारा बनाए गए मॉडल की सभी ने सराहना की । विद्यालय की प्रधानाचार्य विभा मिश्रा ने बच्चों को अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने, पर्यावरण को स्वच्छ रखने, हरियाली बनाए रखने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने पर्यावरण संरक्षण द्वारा वातावरण को साफ और प्रदूषण रहित बनाने का संकल्प लिया। इस अवसर पर विद्यालय के सभी शिक्षक एवं शिक्षिकाएं मौजूद रहें।

मॉडल ग्राम बनाने के लिए अच्छी कार्य योजना बनाएं : मनीष कुमार

संवाददाता

हापुड़। हापुड में मेरठ मंडल के उपनिदेशक पंचायत मनीष कुमार ने चयनित ग्रामों को मॉडल ग्राम बनाने के लिए अच्छी कार्य योजना बनाने पर बल दिया और इसके लिए प्रेरित किया। स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के दूसरे चरण में ग्राम पंचायतों को ओ डी एफप्लस बनाने के लिए जिला पंचायत रिसोर्स सेंटर (डीपीआरसी)में प्रशिक्षण चल रहा है। उप निदेशक और राज्य सलाहकार मो तारिक ने प्रशिक्षण की गुणवत्ता का जायजा लिया। प्रतिभागियों से भी बात की। प्रतिभागियों का मार्ग दर्शन भी किया। उप निदेशक ने कहा कि प्रशिक्षण के बाद सभी मिलकर अपनी ग्राम पंचायत के लिए अच्छी स्वच्छता कार्य योजना बनाएं जो धरातल पर उतर सके। कार्य योजना की बारीकियों पर भी प्रकाश डाला। राज्य सलाहकर तारिक ने ओ डी एफ प्लास की अवधारणा, वित्तीय प्रावधानों, कार्य योजना के बारे में प्रतिभागियों से फीड बैक लिया । कैसे अच्छी कार्य योजना बन सकती है इसके लिए मार्ग दर्शन भी किया। इस अवसर पर जिला पंचायत राज अधिकारी वीरेंद्र सिंह ने प्रतिभागियों को देश में स्वच्छता का इतिहास, उसका जीवन में महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होने कहा कि जरूरत के मुताबिक स्वच्छता प्लान बनाकर ग्रामों को मॉडल बनाया जा सकता है एडीओ पंचायत बिशन सक्सेना भी मौजूद रहे। बुलंदशहर विकास खंड के ग्राम प्रधानों, पंचायत सहायक, खंड प्रेरक और सफाई कर्मियों को स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण फेज दो के अंतर्गत ग्रामों को मॉडल बनाने के लिए प्रशिक्षण दिया गया। उनको स्वच्छता प्लान बनाकर उसके अनुरूप ग्रामों में ठोस व तरल अपशिष्ट प्रबंधन के लिए प्रेरित किया गया। इसके लिए वित्तीय प्रावधानों और तकनिकी प्रावधानों पर चर्चा की गई। मास्टर ट्रेनर गोपाल राय, विवेक चौहान ने सभी को अपशिष्ट की पहचान करने, उसका पृथक करन करने और सुरक्षित निपटान करने पर प्रकाश डाला। दोनो ने बताया कि ग्राम पंचायतों में किस किस तरह का कचरा निकलते हैं। इसका उचित प्रबंधन नही किया गया तो लोगों के जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। दोनो चरणों और उनकी चुनौतियों पर चर्चा की। कैसे ग्राम पंचायतों को ओ डी एफ प्लस बनाया जा सकता है इस पर मंथन किया । दोनो ने ओ डी एफप्लस की तीनो श्रेणियों उदीयमान, उजव्वल और उत्कृष्ट के बारे में बताया, इसके लिए प्रेरित किया। सी ई संदीप कुमार और गौरव कुमार ने ओ डी एफप्लस के लिए तकनीकी विकल्पों की जानकारी दी। ग्राम असोड़ा में बने एकीकृत ठोस अपशिष्ट प्रबंधन का टीम ने जायजा लिया। उन्होंने देखा कि अपशिष्ट प्रबंधन के लिए कैसी व्यवस्था की जा सकती है।

देश में एप्पल का पहला रिटेल स्टोर चालू

सीईओ कुक ने ग्राहकों का स्वागत किया

एजेंसी, मुंबई । दुनिया की प्रमुख उपभोक्ता प्रौद्योगिकी कंपनी एप्पल का देश में पहला रिटेल स्टोर मंगलवार को चालू हो गया। कंपनी के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) टिम कुक ने सुबह 11 बजे ग्राहकों का स्वागत करते हुए स्टोर का दरवाजा खोला। उन्होंने ट्वीट किया, मुंबई में ऊर्जा, रचनात्मकता और जुनून हैरान करने वाला है। हम भारत में अपना पहला स्टोर एप्पल बीकेसी खोलने को लेकर बहुत उत्साहित हैं। अमेरिकी कंपनी ने करीब एक पखवाडे पहले यहां बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स कारोबारी जिले के एक मॉल में अपना स्टोर खोलने की घोषणा की थी, जिसके बाद से एप्पल के चाहने वालों में जोरदार उत्साह था। एप्पल ने करीब 25 साल पहले अपने साझेदारों के जरिए भारत में उत्पादों और सेवाओं की बिक्री शुरू की थी। करीब 100 से अधिक कर्मचारियों और अन्य लोगों के जोशीले नारों के बीच कुक स्टोर के अंदर से दरवाजे खोलकर बाहर निकले और मेहमानों का स्वागत किया। कुक ने स्टोर में वापस जाने से पहले करीब सात मिनट तक लगभग एक दर्जन ग्राहकों का स्वागत किया। कुक ने ग्राहकों के साथ सेल्फी भी खिंचवाई। मुंबई स्टोर के लिए कंपनी ने 11 साल के अनुबंध के साथ जगह पट्टे पर ली है। कंपनी एप्पल स्टोर के लिए हर महीने 42 लाख रुपये का किराया देगी और प्रॉपर्टी मालिक के साथ राजस्व का एक हिस्सा भी साझा करेगी। कंपनी ने किराये पर जगह लेते वक्त यह भी सुनिश्चित किया कि उसके आसपास के इलाके में अमेजन, फेसबुक, गूगल, माइक्रोसॉफ्ट और सोनी सहित 22 प्रतिस्पर्धी ब्रांड अपना कोई विज्ञापन नहीं कर सकेंगे। कई प्रशंसक सुबह से ही मॉल के बाहर कतार में लग गए थे, ताकि स्टोर में सबसे पहले खरीदारी कर सकें। एप्पल बीकेसी में पहुंचे गोरेगांव के एक डिजाइनर ने कुक के साथ सेल्फी ली। वह अपने साथ चार दशक पुराना मैक लिए हुए थे। इस उत्पाद ने एप्पल के एक मजबूत ब्रांड के रूप में स्थापित कर दिया था। उन्होंने कहा, श्श्मैं इसे 1984 से एप्पल की यात्रा को दिखाने के लिए लाया था। यह पहला मैक एसई है, जिसे 1984 में पेश किया गया था। मैं 1984 से एप्पल के उत्पादों का इस्तेमाल कर रहा हूं। यह लंबी यात्रा रही है। वह मंगलवार को सुबह छह बजे से ही कतार में लग गए थे। स्टोर में सबसे पहले जाने वाले ग्राहक ने कहा, मैं कल रात आठ बजे से यहां हूं। मैं लगभग 15 घंटे से एप्पल स्टोर के बाहर डेरा डाले हुए हूं। मैंने नाश्ता नहीं किया है, नहाया नहीं है और आप हम सभी को पसीने में भीगते हुए देख सकते हैं। लेकिन हां, हम बहुत अधिक उत्साहित हैं। वह एक एप्पल घडी खरीदना चाहते थे। स्टोर में प्रवेश करने वाले दूसरे ग्राहक राजस्थान से आए थे। उन्होंने कहा कि वह नयी दिल्ली के साकेत में स्टोर के उद्घाटन के मौके पर भी पहुंचेंगे। भारत के मोबाइल बाजार में एप्पल की सिर्फ तीन प्रतिशत हिस्सेदारी है और यहां इस समय चीनी और कोरियाई ब्रांड का वर्चस्व है। हालांकि, हाल के वर्षों में एप्पल की बिक्री तेजी से बढी है। कंपनी देश में 2,500 लोगों को रोजगार देती है और उसका दावा है कि उसके ऐप परिवेश के जरिए 10 लाख लोगों को अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिलता है।

सरकार 2024-25 तक 22,900 करोड़ रुपए की 44 बंदरगाह परियोजनाओं पर काम करेगी

एजेंसी, नयी दिल्ली। केंद्रीय पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने मंगलवार को कहा कि बंदरगाह अवसंरचना के लिए निजी-सार्वजनिक भागीदारी (पीपीपी) क्षेत्र में निवेश का एक महत्वपूर्ण स्रोत है और मंत्रालय 2024-25 तक 44 परियोजनाओं पर काम करेगा जिनमें कुल 22,900 करोड़ रुपए का निवेश होगा। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सरकार प्रमुख बंदरगाहों पर तनावग्रस्त सार्वजनिक-निजी भागीदारी से निपटने के लिए दिशा-निर्देशों पर काम कर रही है। इसके अलावा भारत में पोत निर्माण उद्योग को समर्थन देने के लिए नीतियां भी लाई है। उन्होंने कहा, ''निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ाने के लिए पोत, पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्रालय दो मोर्चों पर काम कर रहा है। परियोजना के मोर्चे पर मंत्रालय 2024-25 तक 44 परियोजनाओं पर काम करेगा जिनमें कुल 22,900 करोड़ रुपए का निवेश होगा। इसके अलावा नीतिगत मोर्चे पर, मंत्रालय प्रमुख बंदरगाहों पर तनावग्रस्त पीपीपी परियोजनाओं से निपटने के लिए दिशा-निर्देशों पर काम कर रहा है। सोनोवाल ने कहा कि मंत्रालय ने राष्ट्रीय मौद्रीकरण पाइपलाइन के तहत 12,222 करोड़ रुपए की 22 परियोजनाओं को मंजूरी दी है जिनमें से 5,278 करोड़ रुपए की सात परियोजनाएं पीपीपी के आधार पर आवंटित की गई हैं। बाकी की परियोजनाएं बोली के विभिन्न चरणों में हैं। उन्होंने बताया कि पीएम गतिशक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान के तहत मंत्रालय ने 56,831 करोड़ रुपए की 101 परियोजनाओं की पहचान की है जिनका 2024 तक क्रियान्वयन होना है। उन्होंने कहा कि इनमें से 4,423 करोड़ रुपए की 13 परियोजनाएं पूरी हो चुकी हैं जबकि 716 करोड़ रुपए की नौ परियोजनाएं मार्च 2023 तक पूरा होने की उम्मीद है।

बिजली की कमी मामूली रूप से बढ़कर 0.6 प्रतिशत हुई, मांग करीब 11 प्रतिशत बढ़ी

एजेंसी, नयी दिल्ली। देश में बिजली की जरूरत और आपूर्ति के बीच का अंतर चालू वित्त वर्ष में अप्रैल से नवंबर के बीच मामूली रूप से बढ़कर 0.6 प्रतिशत हो गया। हालांकि इस अवधि में बिजली की मांग करीब 11 प्रतिशत बढ़ गई जो अर्थव्यवस्था में तेजी का सूचक है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक देश में बिजली की कमी अप्रैल से नवंबर 2022 के बीच 569.1 करोड़ यूनिट रही जो एक वर्ष पहले की समान अवधि में 405.8 करोड़ यूनिट थी। विशेषज्ञों का मानना है कि बिजली की इस कमी के कारण तकनीकी हैं। उनका कहना है कि भारत में पर्याप्त बिजली उपलब्ध है लेकिन कई बार वितरण कंपनियों (डिस्कॉम) के पास बिजली की निरंतर आपूर्ति के लिए पैसा नहीं होता है। बिजली उत्पादकों ने अप्रैल-नवंबर 2022 के बीच कुल 1012.249 अरब यूनिट बिजली की आपूर्ति की जबकि इस अवधि में बिजली की मांग 1017.94 अरब यूनिट रही। इस तरह बिजली की कमी 0.6 फीसदी रही। एक साल पहले अप्रैल-नवंबर 2021 में 916.529 अरब यूनिट बिजली की आपूर्ति की गई थी जबकि मांग 920.587 अरब यूनिट रही थी। इस प्रकार बिजली की कमी 0.4 फीसदी थी। आंकड़े बताते हैं कि समीक्षाधीन अवधि में बिजली की आवश्यकता या मांग सालाना आधार पर करीब 11 फीसदी बढ़ गई। विशेषज्ञों का मानना है कि बिजली की मांग में बढ़ोतरी वाणिज्यिक एवं औद्योगिक गतिविधियों में निरंतर पुनरुद्धार को दर्शाती है। अप्रैल-नवंबर 2022 में बिजली की खपत भी 10 फीसदी से अधिक बढ़कर 1012.249 अरब यूनिट हो गई जो एक साल पहले 916.529 अरब यूनिट थी। विशेषज्ञों का कहना है कि आने वाले दिनों में बिजली की मांग और खपत दोनों बढ़ेगी और वृद्धि यह दहाई अंक में पहुंच जाएगी। आंकड़ों के मुताबिक एक दिन में सर्वाधिक आपूर्ति दिसंबर 2022 में 202 गीगावॉट रही। दिसंबर 2021 में 183.24 गीगावॉट और नवंबर 2022 में 187.38 गीगावॉट थी।

ऑस्ट्रेलिया के 5 विश्वविद्यालयों में भारतीय छात्रों के दाखिले पर प्रतिबंध

एजेंसी, मेलबर्न। ऑस्ट्रेलिया के कम से कम पांच विश्वविद्यालयों ने भारत के कुछ राज्यों के छात्रों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया है। फर्जी आवेदनों में वृद्धि के बीच ऑस्ट्रेलिया में इस साल भारतीय छात्रों की संख्या वर्ष 2019 के 75,000 के सर्वाधिक आंकडे को पार कर सकती है। सिडनी मॉर्निंग हेराल्ड अखबार ने मंगलवार को कहा कि छात्रों की संख्या में मौजूदा वृद्धि से ऑस्ट्रेलिया की आव्रजन प्रणाली और देश के आकर्षक अंतरराष्ट्रीय शिक्षा बाजार पर संभावित दीर्घकालिक प्रभाव को लेकर सांसदों और शिक्षा क्षेत्र से लोगों ने चिंता व्यक्त की है। वैश्विक शिक्षा फर्म नविटास के जॉन च्यू ने कहा, ष्आने वाले छात्रों की संख्या उम्मीद से कहीं अधिक है। उन्होंने कहा, ''हम जानते थे कि संख्या में काफी वृद्धि होगी, लेकिन इसके साथ ही फर्जी छात्रों की संख्या भी बढी है। रिपोर्ट में कहा गया है कि इस स्थिति से निपटने के लिए कई विश्वविद्यालय अब प्रतिबंध लगा रहे हैं। द एज और द सिडनी मॉर्निंग हेराल्ड अखबारों के अनुसार, विक्टोरिया विश्वविद्यालय, एडिथ कोवान विश्वविद्यालय, वोलोंगोंग विश्वविद्यालय, टॉरेंस विश्वविद्यालय और साउथ क्रॉस विश्वविद्यालय ने भारतीय छात्रों के आवेदनों पर प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की है। फरवरी में पर्थ स्थित एडिथ कोवान विश्वविद्यालय ने भारतीय राज्यों-पंजाब और हरियाणा के आवेदकों पर प्रतिबंध लगा दिया। इसके बाद मार्च में विक्टोरिया विश्वविद्यालय ने उत्तर प्रदेश, राजस्थान और गुजरात सहित आठ भारतीय राज्यों के छात्रों के आवेदनों पर प्रतिबंध बढा दिए। यह घटनाक्रम ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री एंथनी अल्बानीस के भारत दौरे के दौरान विश्वविद्यालयों एवं कॉलेजों के साथ एक नए समझौते की घोषणा किए जाने के बाद हुआ।

कॉफी निर्यात में करीब दो प्रतिशत बढ़कर चार लाख टन पर

एजेंसी, नयी दिल्ली। देश का कॉफी निर्यात 1.66 प्रतिशत बढ़कर चार लाख टन हो गया। कॉफी बोर्ड ने यह जानकारी दी। भारत कॉफी का एशिया का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक और निर्यातक देश है। वर्ष 2021 में यह निर्यात 3.93 लाख टन रहा था। मूल्य के लिहाज से कॉफी का निर्यात पिछले साल के 6,984.67 करोड़ रुपए के मुकाबले वर्ष 2022 में बढ़कर 8,762.47 करोड़ रुपए का हो गया। भारत इंस्टेंट कॉफी यानी तैयार कॉफी पाउडर के अलावा रोबस्टा और अरेबिका दोनों किस्मों का निर्यात करता है। बोर्ड के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, रोबस्टा कॉफी का निर्यात पिछले वर्ष के 2,20,997 टन से मामूली रूप से घटकर वर्ष 2022 में 2,20,974 टन रह गया। इसी तरह, अरेबिका कॉफी किस्म का निर्यात भी 50,292 टन से 11.43 प्रतिशत घटकर 44,542 टन रह गया। हालांकि, इंस्टेंट कॉफी का निर्यात वर्ष 2022 में 16.73 प्रतिशत बढ़कर 35,810 टन हो गया, जो पिछले वर्ष 29,819 टन था। आंकड़ों से पता चलता है कि वर्ष 2022 में लगभग 99,513 टन कॉफी का पुन: निर्यात किया गया था, जो पिछले वर्ष के 92,235 टन से अधिक था। इटली, जर्मनी और रूस भारतीय कॉफी के प्रमुख निर्यात गंतव्य हैं। फसल वर्ष 2022-23 (अक्टूबर-सितंबर) में कॉफी उत्पादन 3,93,400 टन रहने का अनुमान है, जबकि पिछले साल 3,42,000 टन का उत्पादन हुआ था।

अरहर-उडद के दाम में उछाल पर एक्शन में केंद्र, अधिकारियों ने किया बाजार का दौरा

एजेंसी, नयी दिल्ली। केंद्रीय खाद्य एवं उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय ने सोमवार को कहा कि वह अरहर और उडध्द दाल के घरेलू भंडार की निगरानी जारी रखेगा। साथ ही यह सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाया जाएगा कि व्यापारी अपने भंडार का सही तरीके से खुलासा करें। एक सरकारी बयान के अनुसार, उपभोक्ता मामलों के विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों ने पिछले कुछ दिनों के दौरान चार राज्यों में 10 विभिन्न स्थानों का दौरा किया और अरहर तथा उडद के भंडार की स्थिति का निरीक्षण किया। उपभोक्ता मामलों के सचिव रोहित कुमार सिंह ने उन अधिकारियों के साथ एक आंतरिक बैठक की, जिन्होंने प्रमुख दाल बाजारों का दौरा किया है और बाजार के विभिन्न कारोबारियों के साथ बातचीत की है। पिछले सप्ताह, 15 अप्रैल को इंदौर में ऑल इंडिया दाल मिल्स एसोसिएशन के साथ एक बैठक हुई। इसके अलावा, विभाग ने 12 वरिष्ठ अधिकारियों को कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में विभिन्न स्थानों पर जाकर जमीनी हकीकत का जायजा लेने के लिए प्रतिनियुक्त किया। बयान में कहा गया है, ''जमीनी स्तर के बाजार के कारोबारियों और राज्य के अधिकारियों के साथ बातचीत से पता चला है कि जहां ई-पोर्टल पर पंजीकरण और स्टॉक के बारे में जानकारी देने की की संख्या बढ रही है, वहीं बाजार के कारोबारियों की एक बडधे संख्या ने या तो खुद को पंजीकृत नहीं किया है या वे नियमित रूप से अपने स्टॉक की स्थिति नवीनीकरण करने में विफल रहे है। यह पाया गया है कि लेन-देन के तहत आने वाले स्टॉक- जैसे नीलामी के लिए मंडी में पडे किसान के भंडार और बंदरगाहों पर सीमा शुल्क निकासी की प्रतीक्षा कर रहे स्टॉक आदि, मौजूदा निगरानी तंत्र से बाहर हैं। इसके अलावा, विभाग को यह भी पता चला कि मिलरों और व्यापारियों,डीलरों ने जानबूझकर स्टॉक घोषणा से बचने के लिए किसानों के नाम पर गोदामों में अपना स्टॉक रखने का सहारा लिया है। विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों ने इंदौर, चेन्नई, सलेम, मुंबई, अकोला, लातूर, शोलापुर, जबलपुर और कटनी जैसे विभिन्न स्थानों का दौरा किया और राज्य सरकारों, मिलरों, व्यापारियों, आयातकों और बंदरगाह प्राधिकरणों के अधिकारियों के साथ बातचीत की तथा बैठकें की। बयान में कहा गया है कि कारोबारियों को स्टॉक घोषणा के महत्व के बारे में जागरूक किया गया और उन्हें अपने भंडार के बारे में सच्चाई के साथ और नियमित रूप से जानकारी देने को कहा गया। साथ ही, उन्हें सावधान किया गया कि ऐसा नहीं करने पर राज्यों द्वारा ऐसे अघोषित स्टॉक को जब्त करने जैसी कडी कार्रवाई की जा सकती है। विभाग उन आयातकों पर आवश्यक कार्रवाई करने के लिए सीमा शुल्क विभाग के संपर्क में है, जिन्होंने जानबूझकर अपनी खेप की निकासी में देरी की है।

आवास ऋण के और बढने से मकानों की बिक्री प्रभावित होगी

एजेंसी, मुंबई । घर खरीदने को इच्छुक 95 प्रतिशत से अधिक लोगों का मानना है कि आवास ऋण पर इस साल और ब्याज दर बढने से मकान खरीदने का उनका निर्णय प्रभावित होगा। उद्योग मंडल भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) और संपत्ति सलाहकार एनारॉक के एक सर्वे में यह कहा गया है। सीआईआई के मुंबई में मंगलवार को रियल एस्टेट पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान आवासीय बाजार में तेजी शीर्षक से रिपोर्ट जारी की गयी। एनारॉक ने बयान में कहा, इस सर्वेक्षण में कुल 4,662 लोगों ने हिस्सा लिया। सर्वेक्षण में शामिल 96 प्रतिशत खरीदारों का मानना है कि आवास ऋण पर ब्याज दर और बढने से घर खरीदने के फैसले पर असर पडेगा... आवास ऋण की ऊंची दर भविष्य में उनके घर खरीदने के निर्णय को प्रभावित करेगी। हाल ही में भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने अपनी मौद्रिक नीति में बाजार की उम्मीदों के विपरीत रेपो दर को अपरिवर्तित रखा। सर्वेक्षण के अनुसार 80 प्रतिशत से अधिक घर खरीदारों के लिए आवास ऋण पर ब्याज के अलावा ऊंची कीमत एक महत्वपूर्ण कारक बनी हुई है। पिछले एक साल में संपत्ति की मूल लागत में वृद्धि हुई है। सर्वेक्षण में यह भी पाया गया कि लागत वृद्धि के बावजूद बडे घरों की मांग कम नहीं हुई है। सर्वे में शामिल 42 प्रतिशत प्रतिभागियों ने 3बीएचके (तीन कमरों वाले घर), 40 प्रतिशत ने 2बीएचके, 12 प्रतिशत ने 1बीएचके और छह प्रतिशत 3बीएचके से अधिक की जगह वाले घर की तलाश में हैं। इसमें यह भी पाया गया कि घर खरीदने के इच्छुक 58 प्रतिशत लोग उन संपत्तियों में रुचि रखते हैं जिनकी कीमतें 45 लाख रुपये से 1.5 करोड रुपये के बीच है। वहीं 36 प्रतिशत प्रतिभागियों ने एक साल के भीतर तैयार होने वाले घरों को प्राथमिकता दी। एनारॉक के चेयरमैन अनुज पुरी ने कहा, आवास ऋण पर ब्याज दर बढना समग्र मांग परिदृश्य का एक हिस्सा है। हाल ही में बडे और छोटे दोनों स्तर की कंपनियों में हुई छंटनी संभवतरू आगामी दो तिमाहियों में मांग को प्रभावित करेगी और आवास बाजार की वृद्धि को कुछ हद तक धीमा कर देगी। पुरी ने कहा, बाजार में मौजूदा उथल-पुथल के वित्त वर्ष 2024-25 तक खत्म हो जाने और बाजार में फिर से मांग बढध्ने की संभावना है। उन्होंने कहा कि आवास की मांग कुछ समय के लिए रुकेगी लेकिन कभी खत्म नहीं होगी।

ऑस्ट्रेलिया, कनाडा जाने वाले यात्रियों के लिए कोविड जांच रिपोर्ट अनिवार्य

एजेंसी, बीजिंग। चीन, हांगकांग और मकाउ के यात्रियों को ऑस्ट्रेलिया और कनाडा की उड़ान भरने से पहले कोविड जांच की रिपोर्ट पेश करनी होगी, जो दो दिन से ज्यादा पुरानी नहीं होनी चाहिए। रिपोर्ट में यात्रियों के कोरोना वायरस से संक्रमित न होने की पुष्टि होने के बाद ही उन्हें विमान में सवार होने की अनुमति दी जाएगी। कनाडा सरकार ने शनिवार को एक बयान जारी कर कहा, चीन, हांगकांग और मकाउ से आने वाले दो साल या उससे अधिक उम्र के सभी यात्रियों के लिए पांच जनवरी से प्रस्थान से पहले कोविड जांच की नेगेटिव रिपोर्ट पेश करना अनिवार्य होगा। बयान के मुताबिक, 'ये प्रस्तावित स्वास्थ्य उपाय राष्ट्रीयता और टीकाकरण की स्थिति से परे सभी हवाई यात्रियों पर लागू होंगे। संबंधित उपाय अस्थायी हैं, जो 30 दिन तक प्रभावी रहेंगे। अधिक डेटा और साक्ष्य उपलब्ध होने पर इन उपायों पर पुनर्विचार किया जाएगा। बयान में कनाडा सरकार ने कहा कि उसने चीन में कोविड-19 के नए मामलों में भारी वृद्धि और इन मामलों के संबंध में महामारी विज्ञान एवं जीनोम अनुक्रमण डेटा की सीमित उपलब्धता के मद्देनजर नए जांच उपाय लागू किए हैं। सरकार के मुताबिक, कनाडा की उड़ान में सवार होने से पहले यात्रियों को विमानन कंपनी को कोविड जांच की नेगेटिव रिपोर्ट दिखानी होगी, जो प्रस्थान से दो दिन से ज्यादा पुरानी नहीं होनी चाहिए। यात्री आरटी-पीसीआर या एंटिजन जांच में से किसी की भी रिपोर्ट पेश कर सकते हैं। वहीं, ऑस्ट्रेलिया के स्वास्थ्य अधिकारियों ने शनिवार को कहा कि पांच जनवरी से चीन, हांगकांग और मकाउ के सभी यात्रियों के लिए उड़ान से पहले कोविड जांच की नेगेटिव रिपोर्ट दिखानी होगी, जो प्रस्थान से दो दिन ज्यादा पुरानी नहीं होनी चाहिए। कनाडा और ऑस्ट्रेलिया से पहले अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, स्पेन और इटली भी चीन से आने वाले यात्रियों के लिए कोविड जांच की रिपोर्ट पेश करना अनिवार्य कर चुके हैं। इससे पहले, चीनी अधिकारियों ने कहा था कि 8 जनवरी से विदेशी यात्रियों को चीन आने के बाद पृथकवास में रहने की जरूरत नहीं पड़ेगी। हांगकांग के मुख्य कार्यकारी एरिक चान के एक फेसबुक पोस्ट के मुताबिक, हांगकांग आठ जनवरी से चीन से सटी सीमा पर अतिरिक्त जांच चौकियों के संचालन की योजना बना रहा है और वह चीन आने-जाने वाले यात्रियों के लिए पृथकवास में रहने की शर्त को भी हटा सकता है। हालांकि, चीन और हांगकांग के बीच यात्रियों की सीमा निर्धारित करने वाला कोटा जारी रहेगा।

बेटे जेह के साथ अपनी फेवरेट डेस्टिनेशन पहुंची करीना कपूर खान

बॉलीवुड एक्ट्रेस करीना कपूर खान सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं। सोशल मीडिया पर अदाकारा अपनी फोटोज और वीडियोज फैंस के साथ साझा करती रहती हैं। इन दिनों करीना अपनी फैमली के साथ अपनी फेवरेट डेस्टिनेशन में वेकेशन मना रही हैं। जहां से वह लगातार अपनी तस्वीरें फैंस के साथ शेयर कर रही हैं। बॉलीवुड के रॉयल कपल करीना कपूर और सैफ अली खान इन दिनों पूरी तरह डूबे हुए हैं। दोनों अपने फेवरेट डेस्टिनेशन स्विट्जरलैंड में फैमिली ट्रिप पर निकले हैं। करीना कपूर खान ने इंस्टाग्राम पर एक फैमली फोटो शेयर की है जिसमें करीना, सैफ,तैमूर और जेह सभी ब्लैक कलर के आउटफिट्स पहने नजर आ रहे हैं। करीना ने तो फोटो शेयर की है उससमें बेबो और सैफ के अगल-बगल उनके बेटे जहांगीर अली खान और तैमूर अली खान बैठे हुए हैं उनके पीछे एक ब्लैक कलर की कार दिखाई दे रही है। फोटो में तैमूर लोलीपोप खाते दिख रहे हैं। एक्ट्रे ने अपनी पोस्ट के कैप्शन में लिखा, उलटी गिनती शुरू होती है ।

>>> बॉलीवुड <<<

एक्टर्स के पास नहीं होती इंकार करने की अथॉरिटी

राधिका आप्टे का स्क्रिप्ट बदलने पर छलका दर्द

बॉलीवुड एक्ट्रेस राधिका आप्टे अक्सर अपनी बोल्ड फोटोज को लेकर लाइमलाइट में बनी रहती हैं। इसके अलावा एक्ट्रेस के बयान भी अक्सर उन्हें सुर्खियों में ले आते हैं। राधिका आप्टे अब तक कई सुपरहिट मूवीज और वेब सीरीज में नजर आ चुकी हैं। वहीं, अब हाल ही में एक्ट्रेस की फिल्म मिसेज अंडरकवर रिलीज हुई है। फिल्म को मिला जुला रिस्पांस मिल रहा है। आपको बता दें, राधिका आप्टे हर मूवी में अपनी दमदार परफॉर्मेंस के लिए जानी जाती हैं। लेकिन अब उन्होंने हाल ही में दिए एक इंटरव्यू के दौरान कुछ चौंकाने वाले खुलासे किए हैं। एक्ट्रेस ने रिवील किया कि कई बार उन्हें उन प्रोजेक्ट्स के लिए भी हां कहना पड़ता है, जिसमें उन्हें आपत्ति होती है। बता दें, राधिका आप्टे ने हिंदी के साथ-साथ बंगाली, मराठी, तमिल और तेलुगू फिल्मों में भी काम किया है। करीब 18 साल से इंडस्ट्री से जुड़ीं राधिका आप्टे ने बताया कि कभी-कभी एक्टर्स को उन प्रोजेक्ट्स पर भी काम करना होता है, जिसकी कहानी उन्हें उतनी पसंद नहीं हो। ऐसा होता है कि आप शूटिंग कर रहे होते हो और अचानक से स्क्रिप्ट में कुछ बदलाव कर दिए जाते हैं। एक्ट्रेस ने कहा, मुझे बहुत परेशानी होती है, जब आपको स्क्रिप्ट नहीं दी जाती और वो बहुत बाद में आती है, और फिर बहुत सारी चीजें होती हैं, जिनसे आपको परेशानी हो...लेकिन आपने शूटिंग शुरू कर दी है। मैंने उन फिल्मों में काम किया है, जिनकी स्क्रिप्ट आखिरी वक्त पर बदल दी जाती थी। आप उन बदलावों के सपोर्ट में नहीं होते, लेकिन आपके पास कोई ऑप्शन भी नहीं होता, क्योंकि पूरी यूनिट शूट के लिए आपका इंतजार कर रही है। भले ही चीजें कॉन्ट्रैक्ट में हों, लेकिन चीजें कॉन्ट्रैक्ट के अनुसार नहीं होतीं। राधिका आप्टे ने कहा, ये बहुत मुश्किल है। कभी-कभी लोगों को वो पसंद नहीं आता जो वे देखते हैं और वे आपके पास आते हैं और कहते हैं, आप इस तरह की फिल्म कैसे कर सकते हैं? आपको लगता है कि ये आसान है? ये हमारे बस में नहीं होता। कुछ एक्टर्स के पास कंट्रोल और अथॉरिटी नहीं है कि वो किसी फिल्म को करने से मना कर दें और बीच शूटिंग से ही चले जाएं।

पलक तिवारी के बयान को शहनाज गिल ने ठहराया झूठा, कहा-सलमान सर कपड़ो को लिए मोटीवेट करते है

बॉलीवुड के भाईजान सलमान खान इन दिनों अपने अपकमिंग फिल्म किसी का भाई किसी की जान को लेकर जमकर सुर्खियां बटोर रहे हैं। बता दे की 4 साल के बाद सलमान की यह फिल्म ईद के मौके पर रिलीज होने जा रही है। वही फिल्म के सारे स्टारकास्ट भी काफी दिलचस्प हैं। भाईजान के इस फिल्म से कई सितारें बॉलीवुड में डेब्यू भी करने जा रहे हैं। ऐसे में सलमान खान की फेवरेट शहनाज गिल ने एक बार फिर से सलमान के सपोर्ट में एक बड़ा बयान दे दिया हैं। दरअसल हाल ही में सलमान के फिल्म से अपना डेब्यू करने जा रही पलक तिवारी ने सलमान खान को लेकर एक बड़ा बयान दे दिया था। जो इंटरनेट पर जमकर वायरल भी हुई थी। एक इंटरव्यू में एक्ट्रेस ने बताया कि सलमान खान ने सेट पर एक रूल बनाया था कि सेट पर जो भी लड़कियां आए वो ढंग के कपड़े पहन कर आए, जो लो नेक लाइन वाली न हो। वही अब इस फिल्म की दूसरी एक्ट्रेस शहनाज गिल से जब ये सवाल किया गया था, तो शहनाज इसको साफ इंकार करते हुए देखी गयी हैं। दरअसल शहनाज गिल से जब सलमान खान के इस नियम के बारे में पूछा गया तो उन्होंने इसे बकवास करार दिया। शहनाज गिल ने बातचीत में बताया कि उन्होंने प्रमोशन के दौरान बेहद बोल्ड ड्रेसेस पहने हैं और सलमान खान ने उन्हें मोटीवेट भी किया। पलक के बयान को बेबुनियाद बताते हुए शहनाज ने कहा, ऐसा कुछ भी नहीं है, प्रमोशन के दौरान मैं तो बोल्ड ड्रेसेस पहनती थी। सलमान सर मुझे मोटीवेट करते थे और कहते थे कि तुम अपने करियर में बहुत आगे जाओगी। शहनाज गिल ने सलमान खान संग काम करने के अपने अनुभव को भी शेयर किया। उन्होंने कहा, ष्वो जैसे बिग बॉस में थे, रियल लाइफ में भी वैसे ही हैं। मैंने तो उनके अंदर कोई बदलाव नहीं देखा। वो दूसरों को अच्छी सलाह देते हैं और उन्हें प्रेरित करते हैं। उन्होंने मुझसे भी कहा कि मैं अपने काम पर ध्यान दूं। मैं वही कर रही हूं और हिंदी सीख रही हूं।

>>> बॉलीवुड <<<

हनी सिंह का गर्लफ्रेंड संग वीडियो देख बोल पड़े सोशल मीडिया यूजर्स

फेमस सिंगर और रैपर हनी सिंह इन दिनों खूब सुर्खियां बटोर रहे हैं। हाल ही में सिंगर ने अपने बाइपोलर डिसआर्डर पर कई शॉकिंग खुलासे किए हैं। वहीं, अब हनी सिंह अपने एक वीडियो को लेकर चर्चाओं में आ गए हैं। हाल ही में यो यो हनी सिंह ने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम अकाउंट से अपना एक प्राइवेट वीडियो अपलोड किया, जिसमे वो अपनी नई गर्लफ्रेंड टीना थडानी के साथ नजर आ रहे हैं। लेकिन इस वीडियो के चक्कर में हनी सिंह बुरी तरह से ट्रोल हो गए। जिसने भी ये वीडियो देखा वो खुद को सिंगर को ट्रोल करने से रोक नहीं पाया। ऐसे में कई लोगों ने हनी सिंह का नाम बदलकर यो यो निब्बा सिंह रख दिया। तो कई लोगों उनसे सवाल किया कि पाजी किन्ने पेग लगाए हैं? अब आप भी सोच रहे होंगे कि आखिर ऐसा क्या था इस वीडियो में जिसकी वजह से सभी लोग सोशल मीडिया पर हनी सिंह का यूं मजाक बना रहे हैं। दरअसल, जबसे सिंगर का तलाक हुआ है, वो अपने नए प्यार यानी गर्लफ्रेंड टीना थडानी के साथ ही अक्सर नजर आते हैं। इन दिनों वो खुलम खुला अपने प्यार का इजहार कर रहे हैं। ऐसे में नए साल का जश्न भी उन्होंने टीना के साथ ही मनाया था। लेकिन अपने चाहने वालो को नए साल की बधाई देते हुए उन्होंने जो वीडियो पोस्ट किया उसमे टीना- हनी सिंह को किस करती नजर आ रही हैं। ऐसे में सिंगर ने जनवरी के महीने को प्रेमियों का मौसम कहा और टीना के लिए एक रोमांटिक गाना भी गाया। इस वीडियो में हनी सिंह को टीना के लिए मेरी जान...मीठा पान गाते हुए देखा जा सकता है। बस फिर क्या था उनका ये अंदाज देखकर सोशल मीडिया यूजर्स को लगने लगा कि हनी सिंह ने पी रखी है और नशे की हालत में उन्होंने ये वीडियो पोस्ट किया है। आपको बता दें, इस वीडियो को शेयर करते हुए उन्होंने कैप्शन में लिखा, सभी प्रेमियों को नया साल मुबारक हो।

स्टार एक्सप्रेस
स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक नरेन्द्र कुमार द्वारा सांई ऑफसेट प्रिन्टर्स, 40 वासुदेव भवन, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं एमजी-18, सेक्टर-सी, अलीगंज, लखनऊ (उ.प्र.) से प्रकाशित। सम्पादक: नरेन्द्र कुमार । (पीआरबी एक्ट के अन्तर्गत सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा) R.N.I. No.- UPHIN/2008/24076 Email Id : starexpressnews@gmail.com